रूस की लोक कथाऐं–3

संकलनकर्ता
सुषमा गुप्ता

Cover Title : Roos Ki Lok Kathayen-3 (Folktales of Russia-3)
Cover Page picture: Kremlin Star, Moscow
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm
Read More such stories at: www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Russia

विंडसर, कैनेडा
फरवरी 2018

Contents

सीरीज़ की भूमिका 4

रूस की लोक कथाऐं–3 5

1 रुसलन और लुडमिला 7

2 चिड़ियों की भाषा 17

3 ज़ारेवना मेंढकी 26

4 सीधा इवानुष्का 41

5 पाताल की ज़ारेवनाज़ 73

6 ज़ार सुलतान की कहानी 107

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक 1200 से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से 400 से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब 95 प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
मई 2018

रूस की लोक कथाऐं–3

संसार में सात महाद्वीप हैं – एशिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, अन्टार्कटिका, यूरोप और आस्ट्रेलिया – सबसे बड़े से सबसे छोटा। इस तरह एशिया संसार का सबसे बड़ा महाद्वीप है। इसको सबसे बड़ा महाद्वीप बनाते है जनसंख्या में दो देश – चीन और भारत और क्षेत्रफल में रूस। चीन अकेले की जनसंख्या **1355** मिलियन से ज्यादा है।

सारा रूस देश बहुत ठंडा है पर इसका उत्तरी हिस्सा तो बहुत ही ठंडा है। इसका उत्तरी हिस्सा टुण्ड्रा[1] कहलाता है और इसके साइबेरिया[2] नाम के क्षेत्र में आता है। यहॉ के कोणधारी वन बहुत मशहूर हैं। रूस की पूरी आबादी केवल **40** मिलियन है और साइबेरिया की जनसंख्या तो बहुत ही कम है।

इस देश में **9** समय के क्षेत्र हैं यानी इसके पूर्वी और पश्चिमी सीमा के समय में **9** घंटे का अन्तर रहता है। जैसे कैनेडा में **5** घंटे का अन्तर है और उत्तरी अमेरिका में **4** घंटे का। इसकी दूसरी ख़ास बात यह है कि इस देश में सब तरह की जलवायु पायी जाती है सिवाय उष्ण जलवायु[3] के। वह भी इसलिये कि इसका कोई हिस्सा उष्ण जलवायु के क्षेत्र में नहीं आता।

रूस के तीन मुख्य शहर हैं – मास्को, सेन्ट पीटर्सबर्ग और व्लाडीवोस्टक[4]। इसमें दो नदियॉ बहुत प्रसिद्ध हैं – यूराल और वोल्गा। यूराल नदी यूराल पहाड़ से निकलती है और उत्तर में आर्कटिक सागर में जा कर गिरती है।[5] वोल्गा नदी यूरोप से आती है और रूस के काफी बड़े हिस्से से गुजरती हुई कैस्पियन सागर में गिर जाती है। इसमें दो मुख्य पहाड़ हैं – यूराल पर्वत और अल्टाई पर्वत। इसमें एक बहुत पुरानी मुख्य रेलवे लाइन जाती है जिसका नाम है ट्रान्स साइबेरियन रेलवे[6]। यह पूर्व से ले कर पश्चिम तक पूरे साइबेरिया में जाती है। यह दुनियॉ की सबसे लम्बी रेलवे लाइन है। यहॉ पेट्रोल बहुत होता है जिसको रूस पूरे यूरोप को बेचता है।

तुम सोच रहे होगे कि रूस तो उत्तरी अमेरिका से बहुत दूर है पर ऐसा नहीं है। उत्तरी अमेरिका की एक स्टेट अलास्का जो कैनेडा देश के सुदूर पश्चिम में है और रूस का सुदूर पूर्वी किनारा जो अलास्का के पास है उनमें आपस में सबसे कम दूरी केवल ढाई मील है। इस तरह से रूस और उत्तरी अमेरिका तो दो गॉवों से भी ज़्यादा पास हैं।

---

[1] Tundra

[2] Siberia – is a district of Russia and its a region too which stretches from its Ural River in the West to Mongolia in the East.

[3] Tropical Climate

[4] (1) Moscow is the capital. (2) St Petersburg (later known as Petrograd and Leningrad) is a port city on Baltic Sea. It is a European kind of most modern city of Russia. (3) Vladivostok

[5] Ural River comes out from Ural Mountains and falls in Arctic Sea in North.

[6] Trans-Siberian Railway is a network of railways connecting Moscow with the Russian Far East and the Sea of Japan. With a length of 5,772 miles (9,289 kms), it is the longest railway line in the world. There are connecting branch lines into Mongolia, China and North Korea. It has connected Moscow with Vladivostok since 1916, and is still being expanded.

रूस की लोक कथाओं के दो संकलन हम पहले ही प्रकाशित कर चुके हैं – "रूस की लोक कथाऐं–1" और "रूस की लोक कथाऐं–2"। हमको तुम सबको यह बताते हुए बहुत खुशी हो रही है कि वे दोनों ही संकलन तुम सबको बहुत पसन्द आये और वे बहुत लोकप्रिय हुए। इसी से उत्साहित हो कर हम रूस की लोक कथाओं का यह तीसरा संकलन "रूस की लोक कथाऐं–3" प्रकाशित कर रहे हैं। हमें पूरी आशा है कि पिछले दोनों संकलनों की तरह से यह संकलन भी तुम सब लोगों को व्हुत पसन्द आयेगा और रूस के बारे में तुम्हारी जानकारी बढ़ायेगा।

संसार के सात महाद्वीप

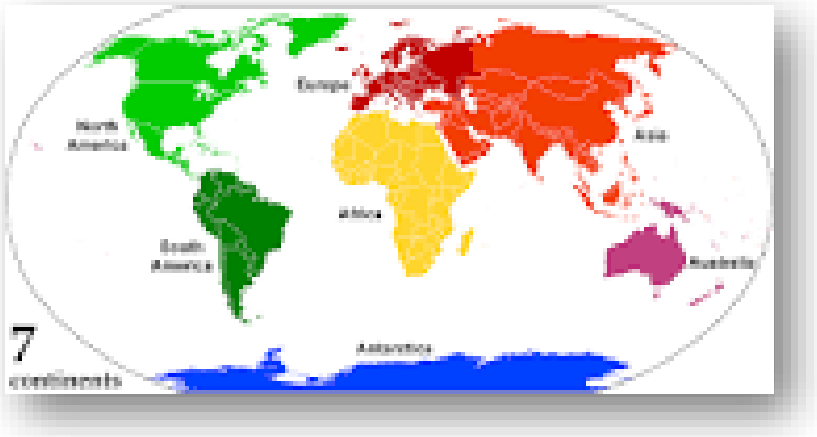

1 रुसलन और लुडमिला[7]

यह रूस की एक बहुत ही लोकप्रिय कथा है जिसको अलैक्ज़ैन्डर पुशकिन ने रूस की एक लोक कथा के आधार पर एक महाकाव्य के रूप में लिखा था। यह कथा उसी से ली गयी है।

समुद्र के किनारे एक ओक का पेड़ खड़ा था। उसके चारों तरफ एक सोने की जंजीर पड़ी थी। वहॉ एक अक्लमन्द बिल्ला भी था जो उस ओक के पेड़ के चारों तरफ घूमता रहता था। जब वह बॉये को जाता था तो वह एक गीत गाता था।

यह बहुत पुरानी बात है कि एक बार कीव के राजकुमार व्लादीमिर ने अपनी बेटी लुडमिला और नाइट रुसलन[8] की शादी के उपलक्ष्य में एक बहुत ही शानदार दावत दी।

लुडमिला के तीन उम्मीदवार और थे – रोगदे, फ़रलाफ़ और रतमीर।[9] वे सब रुसलन से जल रहे थे क्योंकि उसकी शादी लुडमिला से हो रही थी और वे रह गये थे।

---

[7] Ruslan and Ludmila – a folktale from Russia, Asia. By Alexander Pushkin.
Taken from the Web Site :
http://web.archive.org/web/20060104082442re_/www.sunbirds.com/lacquer/readings/1015 and http://stpetersburg-guide.com/folk/ruslan.shtml too.
This is one of the most favorite Russian tales written as an epic poem based on a folktale.

[8] The Prince Vladimir of Kiev (Ukraine) gave a party in the honor of the marriage of his daughter Ludmila and the Knight Ruslan.

[9] Rogday, Farlaf and Ratmir – names of the three other suitors of Ludmila

वे भी वहॉ थे। दावत की सब खुशियॉ घंटों तक चलती रहीं। जब सब कुछ खत्म हो गया तो रुसलन लुडमिला को सोने के कमरे की तरफ ले गया।

कि अचानक आसमान में बिजली चमकी और उसकी कड़क ने उस कमरे के फर्श तक को हिला दिया। एक अजीब सा कोहरा छा गया और उसके अन्दर से कहीं से एक आवाज आयी।

रुसलन अपनी पत्नी को डर के मारे अपने सीने से लगाने के लिये घूमा कि उसने देखा कि उसकी पत्नी तो वहॉ से गायब ही हो गयी थी। उसका तो कहीं पता ही नहीं था।

जब लुडमिला के पिता व्लादीमिर को लुडमिला के गायब होने का पता चला तो वह बहुत गुस्सा हुआ और बहुत चिन्तित हो गया। उसने तुरन्त ही यह शादी तोड़ दी और लुडमिला की शादी उससे करने का ऐलान कर दिया जो उसको ढूँढ कर घर लाता।

तुरन्त ही रुसलन, रोगदे, फ़रलाफ़ और रतमीर चारों ने अपने अपने घोड़े तैयार किये और उन पर सवार हो कर लुडमिला को ढूँढने चल दिये। कुछ दूर तक तो वे साथ साथ गये पर बाद में वे सब अलग अलग हो गये।

रोगदे बहुत ही घबराया हुआ था। बह बड़बड़ाता जा रहा था और उसकी बड़बड़ाहट दूर से भी सुनी जा सकती थी।

वह कह रहा था — "मैं लुडमिला को ले जाने वाले का खून कर दूँगा। मैं उसको मार दूँगा।"

एक बार उसने ऐसा सोच लिया तो जब वह उसको मिल गया तो उसने अपने घोड़े पर सवार हो कर उसका पीछा किया। बहुत जल्दी ही उसका पीछा करते करते उसने उसको एक गड्ढे में धकेल दिया।

उसको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि जिसको उसने पकड़ा था और जिसको उसने गड्ढे में धकेला था वह तो उसका प्रतियोगी फ़रलाफ़ था सो वह वहॉ से एक भी शब्द बिना कहे चला गया।

फ़रलाफ़ चारों नाइट्स में से सबसे ज़्यादा कायर था। जब वह गड्ढे में गिरा तो उसने भगवान को धन्यवाद दिया जब उसको वहॉ एक जादूगरनी नैना[10] मिल गयी।

नैना ने फ़रलाफ़ से कहा कि वह दूसरों को लुडमिला को ढूँढने दे। और जब उनमें से कोई भी लुडमिला को ले कर घर वापस आ रहे होगा तब हम उसको उससे रास्ते में ही छीन लेंगे।

रतमीर उस समय लुडमिला को ढूँढने दक्षिण दिशा में जा रहा था कि एक शाम वह एक किले के पास आ निकला जिसमें बहुत सारी सुन्दर सावधान लड़कियॉ रहती थीं। पर उसके बाद उसके बारे में फिर कभी कुछ नहीं सुना गया।

रुसलन का सुन्दर लुडमिला को ढूँढने का काम ठीक चल रहा था। जल्दी ही उसको एक गुफा मिल गयी जहॉ उसको एक बूढ़ा

[10] Witch Naina

जादूगर[11] मिल गया। उस बूढ़े जादूगर ने उसको बताया कि वह एक लड़की का प्यार पाने के लिये जादूगर बना था।

वह इस लड़की को अपनी जवानी के उन दिनों से जानता था जब वह फिनलैंड में रहता था। कई साल बाद वह जादू के ज़ोर से उस लड़की का दिल जीतने में सफल भी हो गया था पर तब तक वह बुरी[12] कमजोर और कुबड़ी हो गयी थी।

असल में यह लड़की और कोई नहीं वही जादूगरनी थी जो फ़रलाफ़ को उस गड्ढे में मिली थी जिसमें रोगदे ने उसको गिराया था यानी नैना। उसी समय से फिनलैंड का वह रहने वाला अब अकेला ही रह रहा था।

फिनलैंड वाले जादूगर ने रुसलन को बताया कि बुरे ओझा चरनोमोर[13] ने ही उसकी पत्नी को उठाया है पर उसने रुसलन को साथ में यह भी विश्वास दिलाया कि वह अपनी कोशिश जारी रखे आखीर में सब कुछ ठीक हो जायेगा। यह सुन कर रुसलन का हौसला बढ़ गया और वह फिर अपने रास्ते चल दिया।

जल्दी ही उसको अपना प्रतियोगी रोगदे मिल गया जिससे उसको लड़ाई करनी पड़ गयी। दोनों अपने अपने घोड़ों पर बैठ कर एक दूसरे से बहुत ज़ोर से लड़े पर आखीर में रुसलन ने किसी तरह

[11] Translated for the words “Old Wizard”. Wizard is the masculine word for the feminine word “Witch”.

[12] Translated for the word “Evil”.

[13] Sorcerer Chernomor

से उसको उसके घोड़े से नीचे गिरा दिया और उसको नाइपर नदी[14] में फेंक दिया।

कुछ देर चलने के बाद रुसलन को रास्ते में एक बहुत बड़ा सिर मिला। वह रुसलन को देख कर बहुत ज़ोर से पागलों की तरह से हॅसा और उसकी तरफ बहुत ज़ोर का एक हवा का झोंका फेंका जिससे रुसलन और उसका घोड़ा किसी तरह से बस गिरने से ही बच पाये।

फिर भी ताकतवर नाइट रुसलन किसी तरीके से उसकी जबान में अपना भाला मारने में सफल हो गया जिससे उसकी सॉस कुछ रुक सी गयी। फिर उसने उसको उठा कर एक तरफ को फेंक दिया।

रुसलन एक चमकीली तलवार से उसको फिर से मारना चाहता था जो उसको उस सिर के नीचे मिल गयी थी कि उस सिर ने उसके सामने अपनी हार मान ली और रुसलन से वायदा किया कि वह अब से हमेशा रुसलन का कहना मानेगा। सो रुसलन ने उसको छोड़ दिया।

अब हुआ यह कि वह सिर लुडमिला के उठाने वाले को यानी चरनोमोर को बहुत अच्छी तरह जानता था क्योंकि वह उसका भाई था। चरनोमोर ने उस चमकीली तलवार को हासिल करने के लिये

[14] Dnieper River – pronounced as Niper, a major river of Europe rising from Smolensk, Russia and going through Russia, Belarus, Ukraine to the Black Sea. It is the 4th longest river of Europe.

उसका एक लड़ाई में उसका सिर काट लिया था। वही तलवार अब रुसलन को मिल गयी थी

उस सिर ने रुसलन को यह भी बताया कि चरनोमोर की सारी ताकत उसकी दाढ़ी में थी। अगर वह उसकी दाढ़ी काट देगा तो उसकी ताकत बिल्कुल ही चली जायेगी। यह सुन कर रुसलन सिर को वहीं छोड़ कर वहॉ से भी आगे अपने रास्ते चल दिया।

पर इस सारे समय लुडमिला कहॉ थी? यह तो ठीक है कि नीच चरनोमोर उसको उठा कर ले गया था क्योंकि वह उससे खुद शादी करना चाहता था। सो वह उसको अपने किले में ले गया और वहॉ ले जा कर उसको आराम से रख दिया।

उसके कमरे के बाहर एक जादुई बागीचा था जिसमें लुडमिला आजादी से घूम सकती थी। उस बागीचे में बहुत अच्छे अच्छे पेड़ लगे हुए थे और बहुत सारी सुन्दर सुन्दर चिड़ियें थीं। पर उसको रुसलन की बहुत याद आती थी और वह उसके बिना वहॉ खुश नहीं रह पा रही थी।

जब चरनोमोर ने लुडमिला को अपने से शादी करने के लिये मनाने की कोशिश की तो लुडमिला बहुत नाराज हुई और उस समय में उसने उसका टोप उतार लिया और उसे खुद पहन लिया।

बाद में उसको पता लगा कि अगर वह उसको पीछे से पहनती तो वह तो उसके उस तरह से पहनने पर अदृश्य हो सकती थी।

सो अब जब भी वह चाहती कि चरनोमोर उसको न देखे कि वह कहॉ है तो वह उस टोप को उलटा करके पहन लेती। और यह वह अक्सर करती।

पर चरनोमोर भी कम नहीं था। वह उसका पीछा नहीं छोड़ने वाला नहीं था। एक बार वह रुसलन का वेश रख कर उससे मिलने गया तो जब लुडमिला ने उसको देखा तो उसने अपना टोप उतार कर फेंक दिया और उससे मिलने के लिये दौड़ पड़ी।

बाद में जब उसे पता चला कि उसके साथ चाल खेली गयी है तो वह बेहोश हो कर जमीन पर गिर पड़ी।

तभी असली रुसलन वहॉ आ गया और अब तमाशा शुरू हुआ।

आते ही उसने लुडमिला के सिर पर टोप उलटा करके रख दिया ताकि चरनोमोर लुडमिला को न देख सके और वह उससे सुरक्षित रहे।

उसके बाद वह और चरनोमोर दो दिन तक लड़ते रहे। चरनोमोर ने अपनी जादुई ताकतें इस्तेमाल कीं जिससे वह हवा में 100 फीट ऊपर तक लड़ सका। पर रुसलन ने आखीर में अपनी तलवार से उसकी दाढ़ी काट दी। इससे दोनों जमीन पर गिर पड़े।

जैसे ही चरनोमोर की दाढ़ी कटी उसकी सारी ताकत खत्म हो गयी। इस तरह अब वह ताकतवर रुसलन का बराबर का लड़ने

वाला नहीं रह गया था बल्कि वह तो एक मामूली सा आदमी रह गया था।

चरनोमोर को हराने के बाद रुसलन ने तुरन्त ही अपनी पत्नी को ढूँढने की कोशिश की पर यह तो तुमको मालूम ही है कि उसने खुद ने लुडमिला को चरनोमोर का टोप उलटा करके पहना दिया था ताकि वह चरनोमोर को दिखायी न दे सके पर अब तो वह उसको भी दिखायी नहीं दे रही थी।

इत्तफाक से रुसलन की तलवार लुडमिला के टोप में लग गयी और उसका टोप नीचे गिर पड़ा जिससे लुडमिला उसको दिखायी दे गयी। पर वह अभी भी बेहोश पड़ी थी।

तब रुसलन को अपने दिमाग में उस फिनलैंड वाले जादूगर की आवाज सुनायी पड़ी कि लुडमिला तब जागेगी जब वे कीव लौट आयेंगे। सो रुसलन ने लुडमिला को उठाया और घर की तरफ लौट चला।

जब वह वापस लौट रहा था तो रास्ते में उसको वह कटा हुआ सिर फिर मिला। इस बार तो रुसलन से लड़ने की वजह से जो उसको घाव लगे थे उनकी वजह से वह बिल्कुल मरा सा हो रहा था।

यह देख कर कि रुसलन उसके भाई को हरा कर आ रहा था उस सिर ने सन्तुष्ट हो कर कि उसको न्याय मिल गया अपनी आखिरी साँस शान्ति से ली और मर गया।

रुसलन ने उस सिर को तो वहीं छोड़ा और फिर घर की तरफ बढ़ चला। रास्ते में रात हो गयी सो वह रास्ते में ही रुक गया।

जब वह सो रहा था तो कायर फ़रलाफ़ और उस नीच जादूगरनी नैना ने रुसलन को तीन बार तलवार मारी और उसको मरने के लिये वहीं छोड़ दिया। काश वह फिनलैंड वाला जादूगर वहॉ अपना जादू करने के लिये होता।

फ़रलाफ़ ने लुडमिला को उठाया और उसको ले कर कीव की तरफ चल दिया। जब वह कीव पहुॅचा तो लोगों ने उनका बहुत खुशी खुशी स्वागत किया। लुडमिला अभी तक बेहोश थी।

और यही नहीं तब तक खानाबदोशों ने भी कीव शहर पर हमला कर दिया था। पर जब यह लड़ाई चल रही थी एक बहुत ही ताकतवर लड़ने वाला वहॉ प्रगट हुआ जो अपने रास्ते में आते हुए सब दुश्मनों को मारता हुआ चला आ रहा था।

यह रुसलन था। फिनलैंड वाले जादूगर ने उसको उसके मरने से पहले ही ढूॅढ लिया था और उसको "ज़िन्दगी ओर मौत" के जादुई पानी से ज़िन्दा कर लिया था। बहुत जल्दी ही रुसलन अकेले ने सारे दुश्मनों को हरा कर शहर को बचा लिया।

अब उसने देखा कि उसकी पत्नी तो अभी भी बेहोश पड़ी है। सो रुसलन लुडमिला को उसके कमरे में ले गया और उसको एक जादुई अॅगूठी की सहायता से जगाने की कोशिश करने लगा। यह

जादुई अँगूठी इसको जादूगर ने दी थी। कुछ पल बाद ही लुडमिला ने ऑखें खोल दीं।

इस तरह रुसलन और लुडमिला फिर से मिल गये। राजा व्लादीमिर ने उनकी शादी दोबारा कर दी और वे दोनों बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे।

2 चिड़ियों की भाषा[15]

एक बार की बात है कि पवित्र रूस के किसी शहर में एक बहुत ही अमीर सौदागर अपनी पत्नी के साथ रहता था। उसके एक अकेला बेटा था जो बहुत ही प्यारा होनहार और बहादुर था। उसका नाम था इवान।

एक दिन इवान अपने माता पिता के साथ खाने की मेज पर बैठा हुआ था। उसी कमरे में खिड़की के पास एक पिंजरा टॅगा हुआ था जिसमें एक मैना और एक मीठा बोलने वाली भूरे रंग की चिड़िया बन्द थीं।

मैना ने अपनी ऊॅची आवाज में अपना मीठा गाना गाना शुरू किया। सौदागर ने उसका गाना सुना और सुना और सुन कर बोला — "काश मैं सब चिड़ियों के गानों के मतलब समझ सकता। अगर कहीं कोई ऐसा आदमी होता जो मुझे सारी चिड़ियों के सारे गानों के मतलब समझा देता तो मैं उस आदमी को अपनी आधा पैसा दे देता।"

इवान ने अपने पिता के ये शब्द अपने दिमाग में रख लिये और इस बात से उसे कोई मतलब नहीं वह कहॉ गया, कोई मतलब नहीं

[15] The Language of the Birds – a folktale from Russia, Asia. Taken from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/neu/ftr/chap03.htm#page_66
From the Book "Folk Tales from the Russian", by Verra Xenofontovna Kalamatiano de Blumenthal. 1903. 9 tales.

वह कहॉ था, कोई मतलब नहीं उसने क्या किया वह हमेशा यही सोचता रहा कि वह किस तरह से चिड़ियों की भाषा सीख सकता था

कुछ समय बाद की बात है कि एक दिन इवान एक जंगल में शिकार खेलने के लिये गया कि तेज़ हवा बह निकली बादल आसमान पर छा गये बिजली चमकने लगी बादल गरजने लगे और बहुत ज़ोर से बारिश होने लगी।

इस तूफान से बचने के लिये इवान एक बड़े पेड़ के नीचे आ गया। वहॉ उसने उस पेड़ की शाखाओं मे एक घोंसला देखा। उस घोंसले में चार छोटी छोटी चिड़ियें बैठी थीं। वे वहॉ अकेली ही थीं क्योंकि वहॉ उनके माता पिता कहीं दिखायी नहीं दे रहे थे। वहॉ कोई उनको ठंड और पानी से बचाने वाला भी नहीं था।

भले इवान को उन पर दया आ गयी। वह पेड़ पर चढ़ गया और अपने काफ्तान से उन बच्चों को ढक दिया। काफ्तान रूसी किसानों और सौदागरों के पहनने का एक लम्बा सा कोट होता है।

कुछ देर बाद तूफान थम गया तो एक बड़ी चिड़िया वहॉ उड़ती हुई आयी और घोंसले के पास की एक शाख पर बैठ गयी।

वह बड़े प्यार से इवान से बोली — "इवान तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद कि तुमने ठंड और बारिश से मेरे छोटे छोटे बच्चों की रक्षा की। इसके बदले में मैं तुम्हारे लिये कुछ करना चाहती हूॅ। कहो तुम्हारी क्या इच्छा है।"

इवान बोला — "मुझे किसी चीज़ की कमी नहीं है। मेरी अपनी सुख सुविधा के लिये मेरे पास सब कुछ है पर तुम मुझे चिड़ियों की भाषा सिखा दो तो तुम्हारी बड़ी मेहरबानी होगी।"

वह चिड़िया बोली — "तुम मेरे साथ तीन दिन ठहरो तो तुम उसके बारे में सब जान जाओगे।"

इवान तीन दिन जंगल में रहा उसने उस बड़ी चिड़िया का सिखाया हुआ सब कुछ ठीक से सीख लिया। और इस तरह वह घर पहले से कहीं ज़्यादा होशियार हो कर लौटा।

एक दिन जब वह अपने माता पिता के साथ फिर से बैठा हुआ था तो मैना ने कुछ गाया। उसका गाना बहुत दुख का था इतने दुख का था कि उसका गाना सुन कर सौदागर और उसकी पत्नी भी दुखी हो गये।

और उनका बेटे भले इवान पर जो उसका गाना बड़े ध्यान से सुन रहा था उस पर तो उसका और भी ज़्यादा असर पड़ा। उसके तो ऑसू ही बहने लगे।

इवान के माता पिता ने इवान से पूछा — "प्यारे बेटे तुम क्यों रो रहे हो क्या बात है?"

रोते रोते इवान बोला — "ऐसा इसलिये है कि मैं इस मैना के गीत का मतलब समझता हूँ। इस गीत का मतलब हम सबके लिये दुख का है।"

उसके माता पिता ने कहा — "क्या मतलब है इसके गीत का बेटा? तुम हमको सब कुछ सच सच बताओ। कोई बात हमसे छिपाना नहीं।"

इवान बोला — "कितने दुख की बात है। कितना अच्छा होता कि वह कभी पैदा ही न हुआ होता।"

माता पिता ने कहा — "बेटा अब तुम हमें और ज़्यादा डराओ नहीं। अगर तुम सचमुच में ही इस गीत का मतलब समझते हो तो हमको तुरन्त ही बतलाओ कि यह मैना क्या गा रही है।"

इवान बोला — "क्या आपको खुद पता नहीं चल रहा है कि यह मैना यह कह रही है कि वह समय आने वाला है जब सौदागर का बेटा इवान एक राजा का बेटा इवान बन जायेगा और उसका पिता उसके यहॉ एक सादा से नौकर की हैसियत से काम करेगा।"

सौदागर और उसकी पत्नी दोनों ही यह सुन कर परेशान हो गये और उन्होंने अपने भले बेटे इवान का विश्वास नहीं किया। पर फिर भी उनके मन में कहीं कुछ खटका लगा रहा।

सो एक दिन उन्होंने अपने बेटे को सुलाने वाला एक पेय पिला दिया और जब वह गहरी नींद सो गया तो वे उसको नाव में रख कर समुद्र में ले गये। वहॉ ले जा कर उन्होंने नाव की पाल खोल दीं और उसको समुद्र में धकेल दिया।

काफी समय तक नाव समुद्र में बहती रही। आखीर में वह एक सौदागर के जहाज़ के पास आ गयी और उससे टकरा गयी। वह इतनी ज़ोर से टकरायी कि इवान की ऑख खुल गयी।

उधर उस बड़े जहाज़ पर काम करने वालों ने भी इवान को देखा तो उन्हें उस पर दया आ गयी। उन्होंने उसको अपने साथ ले जाने का निश्चय किया सो उन्होंने उसको अपने जहाज़ पर चढ़ा लिया।

फिर उन्होंने आसमान में बहुत ऊॅचे उड़ते हुए सारस देखे तो इवान उन लोगों से बोला — "सावधान रहना। ये सारस तूफान आने की भविष्यवाणी कर रहे हैं। हमको किसी बन्दरगाह पर चले जाना चाहिये वरना हम खतरे में पड़ जायेंगे और हमारे जहाज़ को बहुत नुकसान पहुॅचेगा। हमारे पाल फट जायेंगे और मस्तूल टूट जायेंगे।"

पर इवान के कहने पर किसी ने भी ध्यान नहीं दिया और वे चलते रहे। कुछ ही देर में तूफान आ गया। हवा ने जहाज़ तोड़ दिया और उनको अपना जहाज़ मरम्मत करने में काफी मेहनत करनी पड़ी।

जब उन्होंने अपना काम खत्म कर लिया तब उन्होंने बहुत सारे जंगली हंस अपने ऊपर उड़ते हुए देखे और आपस में बात करते हुए सुने।

इस बार जहाज़ के लोगों ने बड़ी रुचि से इवान से पूछा कि वे जंगली हंस क्या कह रहे थे।

इवान ने कहा — "वे कह रहे हैं कि सावधान रहना। वे क्या कह रहे है यह मैं साफ तरीके से सुन सकता हूँ कि समुद्री डाकू पास ही हैं और अगर हम पास के किसी बन्दरगाह में जा कर शरण नहीं ले लेते तो वे हमें बन्दी बना लेंगे और फिर मार देंगे।"

इस बार जहाज़ के लोगों ने बिल्कुल भी देर नहीं की वे तुरन्त ही बन्दरगाह की तरफ मुड़ गये। जैसे ही वे बन्दरगाह में पहुँचे कि समुद्री डाकुओं की नावें उनके सामने से गुजर गयीं। उन्होंने उन डाकुओं को कई और नावों को पकड़ते हुए और लूटते हुए देखा।

जब समुद्री डाकुओं का खतरा टल गया तो जहाज़ के लोग इवान के साथ और आगे तक चलते चले गये। अन्त में उनके जहाज़ ने एक शहर में अपना लंगर डाला। यह शहर बड़ा था और सौदागरों के लिये अनजाना था।

इस शहर के राजा को तीन काले कौओं ने तंग कर रखा था। वह उनसे बहुत परेशान था। ये तीन कौए हमेशा ही राजा के महल की खिड़की पर बैठे रहते थे और कुछ कुछ बोलते रहते थे।

किसी को नहीं पता था कि उनको वहाँ से कैसे भगाया जाये और कोई उनको मार भी नहीं सकता था।

राजा ने अपने शहर हर चौराहे पर और हर मुख्य इमारत पर यह नोटिस लगवा दिया था कि जो भी कोई इन शोर मचाने वाली

चिड़ियों को राजा के महल से हटाने में कामयाब होगा उसकी शादी राजा की सबसे छोटी कोरोलेवना[16] यानी बेटी से कर दी जायेगी।

और जो कोई इस काम को करने का साहस करेगा और महल से उनको हटाने में नाकामयाब रहेगा उसका सिर कटवा दिया जायेगा।

इवान ने यह नोटिस बड़े ध्यान से पढ़ा एक बार, दो बार, तीन बार... । आखीर में उसने क्रास का निशान बनाया और महल की तरफ चल दिया। वहॉ जा कर उसने नौकरों से कहा "खिड़की खोलो मैं ज़रा सुनना चाहता हूँ कि वे क्या बात करते हैं।"

नौकरों ने वैसा ही किया जैसा इवान ने उनसे करने के लिये कहा था। उन्होंने खिड़की खोल दी। बे कौए तभी भी वहीं बैठे हुए थे और शोर मचा रहे थे। इवान ने कुछ देर तक उनको सुना और फिर नौकरों से कहा कि वे उसको राजा के पास ले चलें।

नौकर उसको राजा के पास ले गये। जब वह राजा के कमरे में पहुँचा तो राजा अपनी राजगद्दी पर बैठा हुआ था। इवान ने उसको सिर झुकाया और कहा — "योर मैजेस्टी यहॉ तीन कौए बैठे हैं। एक पिता कौआ है एक माता कौवी है और एक बेटा कौआ है।

अब मुश्किल यह है कि वे इस बारे में आपका शाही हुकुम लेना चाहते हैं कि बेटे कौए को अपने पिता कौए की बात माननी चाहिये या माता कौवी की।"

[16] Korolevna – Princess, the daughter of a King

राजा ने जवाब दिया कि बेटे कौए को तो अपने पिता कौए की ही बात माननी चाहिये।

जैसे ही राजा ने अपना यह शाही हुकुम सुनाया पिता कौआ और बेटा कौआ दोनों एक तरफ को उड़ गये। और माँ कौवी दूसरी तरफ को गायब हो गयी। उसके बाद से उन कौओं को फिर कभी किसी ने वहाँ नहीं देखा।

राजा ने इवान को अपना आधा राज्य दे दिया और सबसे छोटी कोरोलेवना ब्याह दी।

इधर इवान की माँ चल वसी और उसका पिता भी गरीब हो गया। अब उसके पिता की देखभाल करने वाला भी कोई नहीं रह गया था। अब वह बूढ़ा बेचारा सब जगह भीख माँग माँग कर गुजारा करता था। वह एक घर से दूसरे घर जाता एक गाँव से दूसरे गाँव जाता और एक शहर से दूसरे शहर जाता।

एक दिन वह उस शहर में आ निकला जिसमें इवान रहता था। वह महल के पास से भीख माँगता गुजर रहा था कि इवान ने उसे देख लिया। उसने उसको पहचान लिया और अन्दर आने का हुकुम दिया। उसने उसको बहुत अच्छा खाना खिलाया और उसको पहनने के लिये अच्छे कपड़े दिये।

फिर उसने उससे पूछा — "मैं आपके लिये क्या कर सकता हूँ।"

गरीब पिता ने अपने बेटे को पहचाना नहीं और कहा — "अगर तुम इतने ही अच्छे हो तो तुम मुझे यहॉ रहने की जगह दे दो और अपने वफादार नौकरों के साथ मुझे भी अपना नौकर रख लो।"

तब इवान बोला — "मेरे प्यारे पिता जी, वह मैना उस समय जो गाना गा रही थी तो उस समय तो आपने उस पर शक किया और आज आप वही होता देख रहे हैं।"

यह सुन कर वह बूढ़ा डर गया और अपने बेटे के पैरों में पड़ गया। पर उसका बेटा इवान अभी भी पहले जैसा ही अच्छा बेटा रहा। उसने अपने पिता को अपनी बॉहों में ले कर अपने गले लगा लिया। दोनों अपने अपने दुखों पर कुछ देर तक रोते रहे।

पिता को वहॉ रहते रहते कई दिन हो गये तो एक दिन उसने हिम्मत करके अपने बेटे कोरोलेविच[17] से पूछा — "बेटा ज़रा बताओ तो कि ऐसा कैसे हुआ कि तुम उस नाव में मरे नहीं।"

इवान कोरोलेविच बहुत ज़ोर से हॅसा और बोला — "मुझे लगता है पिता जी कि वह मेरी किस्मत में था ही नहीं कि मैं उस नाव में मर जाऊॅ।

मेरी किस्मत में तो यह था कि मैं अपनी सुन्दर पत्नी कोरोलेवना से शादी करूॅ और अपने पिता का बुढ़ापा सुखी करूॅ।

[17] Korolevich – Prince

3 ज़ारेवना मेंढकी[18]

पुराने ज़ार के राज्य में, मुझे मालूम नहीं कब, एक राजा अपनी पत्नी राजकुमारी के साथ रहा करता था। उनके तीन बेटे थे तीनों नौजवान थे तीनों बहादुर थे इतने कि कोई उनकी बहादुरी का वर्णन नहीं कर सकता था।

उन तीनों में से जो सबसे छोटा राजकुमार था उसका नाम था इवान ज़ारेविच[19]। एक दिन उनके पिता ने उनसे कहा कि — "मेरे प्यारे बच्चों तुम लोग अपने अपने तीर कमान लो, अपने मजबूत कमान की डोरी खींचो और अपने तीरों को जाने दो। जिसके ऑगन में तुम्हारा तीर जा कर पड़ेगा उसी घर की लड़की से तुम्हारी शादी कर दी जायेगी।

सबसे बड़े ज़ारेविच का तीर एक बोयर[20] के घर में जा कर पड़ा जहॉ स्त्रियॉ रहती थीं। दूसरे ज़ारेविच का तीर एक बहुत ही अमीर सौदागर के लाल छज्जे पर जा कर पड़ा जहॉ एक बहुत ही सुन्दर लड़की खड़ी थी।

---

[18] The Tsarevna Frog – a folktale from Russia, Asia. Taken from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/neu/ftr/chap01.htm
From the Book "Folk Tales from the Russian", by Verra Xenofontovna Kalamatiano de Blumenthal. 1903. 9 tales.
Tsarevna or Tzarevna means princess.

[19] Tsarevich or Tzarevich means Prince

[20] Boyar means a member of the old aristocracy in Russia, next in rank to a prince.

सबसे छोटे ज़ारेविच इवान का तीर बदकिस्मती से एक दलदल में जा कर पड़ा जहॉ उसे एक टर्राती हुई मेंढकी ने पकड़ लिया।

इवान ज़ारेबिच अपने पिता के पास आया और वोला — "पिता जी मैं एक मेंढकी से शादी कैसे कर सकता हूॅ। क्या वह मेरे बराबर की है? नहीं पिता जी निश्चित रूप से वह मेरे बराबर की नहीं है।"

पिता ने कहा — "चिन्ता मत करो। तुमको तो अब मेंढकी से ही शादी करनी पड़ेगी क्योंकि ऐसा लगता है कि यही तुम्हारी किस्मत है।"

इस तरह तीनों भाइयों की शादी कर दी गयी। सबसे बड़े बेटे की बोयर की वेटी से दूसरे बेटे की अमीर सौदागर की बेटी से और सबसे छोटे बेटे इवान की एक मेंढकी से।

कुछ समय वाद राज्य के राजा ने अपने तीनों बेटों को फिर बुलाया और कहा — "अपनी अपनी पत्नियों से कहो कि वे कल सुबह को मेरे लिये एक डबल रोटी बना कर रखें।"

इवान घर लौटा तो उसके चेहरे पर कोई मुस्कान नहीं थी और उसकी भौंहें सिकुड़ी हुई थीं।

मेंढकी ने राजकुमार से बड़े प्यार से पूछा — "टर्र टर्र। ओ मेरे प्रिय ज़ारेविच इवान, तुम इतने दुखी क्यों हो? क्या आज महल में कोई खराब बात हो गयी है?"

इवान ज़ारेविच बोला — "हॉ खराब बात ही तो हो गयी है। मेरे पिता ज़ार चाहते हैं कि तुम कल सुबह को उनके लिये एक डबल रोटी बनाओ।"

"ज़ारेविच तुम बिल्कुल चिन्ता न करो। तुम आराम से जा कर सोओ। सुबह का समय काली शाम के समय से ज़्यादा अच्छा सलाहकार होता है।"

अपनी पत्नी की सलाह मान कर ज़ारेविच सोने चला गया। ज़ारेविच के जाने के बाद मेंढकी ने अपनी मेंढकी वाली खाल निकाल दी और अब वह एक बहुत सुन्दर लड़की बन गयी थी। उसका नाम था वासिलीसा।

वह घर के बाहर निकली और उसने आवाज लगायी — "ओ मेरी आयाओ और नौकरानियों तुरन्त आओ और मेरे लिये कल सुबह के लिये एक सफेद डबल रोटी बनाओ। बिल्कुल ऐसी ही डबल रोटी जैसी मैं अपने पिता के शाही महल में खाया करती थी।"

सुबह को जब इवान ज़ारेविच मुर्गे की बॉग के साथ सो कर उठा, और यह तो तुमको मालूम ही कि मुर्गे कभी अपनी बॉग लगाने में देर नहीं करते तो उसकी डबल रोटी तैयार थी।

वह डबल रोटी इतनी बढ़िया थी कि उसका वर्णन करना मुश्किल था। क्योंकि ऐसी डबल रोटियॉ तो केवल परियों के देश में हीं मिलती हैं। वह दोनों तरफ बहुत सुन्दर सुन्दर मूर्तियों और शहरों

और किलों से सजी हुई थी और अन्दर वह बरफ की तरह से सफेद और पंखों की तरह मुलायम थी।

पिता ज़ार उसको देख कर बहुत खुश हुआ और ज़ारेविच को खास धन्यवाद मिला।

ज़ार फिर मुस्कुराते हुए बोला — "अब एक दूसरा काम और है। तुम सब अपनी अपनी पत्नियों से मुझे कल सुबह तक एक एक कालीन[21] बना कर दो।"

ज़ारेविच इवान फिर मुँह लटकाये हुए घर आया तो उसकी मेंढकी पत्नी ने राजकुमार से बड़े प्यार से पूछा — "टर्र टर्र। ओ मेरे प्रिय ज़ारेविच इवान, तुम इतने दुखी क्यों हो? क्या तुम्हारे पिता उस डबल रोटी को देख कर खुश नहीं हुए?"

इवान ज़ारेविच बोला — "नहीं उससे तो वह बहुत खुश थे पर अब मेरे पिता ज़ार चाहते हैं कि तुम उनके लिये कल सुबह तक एक कालीन बनाओ।"

"तुम चिन्ता न करो ज़ारेविच और सोने जाओ। सुबह का समय हमारी जरूर ही सहायता करेगा।"

यह सुन कर ज़ारेविच इवान सोने चला गया। मेंढकी फिर से वासिलीसा में बदली और बाहर आ कर ज़ोर से आवाज लगायी — "ओ मेरी प्यारी आयाओ और वफादार नौकरानियों, अबकी बार तुम मेरे पास मेरे एक नये काम के लिये आओ। और मेरे लिये एक

[21] Translated for the word "Rug", not the carpet. Rug is a floor covering of thick woven material

ऐसा रेशम का कालीन बनाओ जैसे कालीन पर मैं अपने पिता राजा के महल में बैठा करती थी।"

जैसे ही वासिलीसा ने यह कहा कि तुरन्त ही उन्होंने उसके लिये रेशम का कालीन बना दिया।

सुबह को जब मुर्गों ने बॉग दी तब ज़ारेविच इवान जागा और लो वहॉ तो दुनियॉ का सबसे सुन्दर रेशम का कालीन रखा हुआ था। एक ऐसा कालीन जिसका कोई वर्णन नहीं कर सकता था।

उस कालीन में चमकीले रेशम के तारों के बीच सोने चॉदी के तार भी बुने हुए थे। और वह कालीन तो बस सिवाय तारीफ के और किसी काबिल था ही नहीं।

ज़ार पिता उस कालीन को देख कर बहुत खुश था और अपने बेटे को इतने सुन्दर कालीन के लिये बहुत धन्यवाद दिया। इसके बाद उसने एक नया हुकुम जारी किया।

अबकी बार वह अपने सुन्दर बेटों की सुन्दर पत्नियों को देखना चाहता था। और इसके लिये उनको उन्हें अगले दिन पेश करना था।

"टर्र टर्र। प्रिय ज़ारेविच, तुम इतने दुखी क्यों हो? क्या किसी ने तुमको महल में कोई बुरी बात कह दी है?"

"हॉ बुरी बात तो कह दी है। मेरे पिता ज़ार ने हम सबको यह हुकुम दिया है कि हम तीनों अपनी अपनी पत्नियों को उनके सामने

ले जा कर पेश करें। अब बताओ कि मैं तुम्हारे साथ कैसे जा सकता हूँ।"

मेंढकी धीरे से टर्रायी और बोली — "यह कोई बहुत बुरा तो नहीं हो सकता पर उससे बुरा भी हो सकता है। ऐसा करो कि तुम अकेले ही जाओ और मैं तुम्हारे पीछे पीछे आऊँगी।

जब तुम ज़ोर की आवाज सुनो तो तुम उससे डर मत जाना बस यही कहना "एक बदकिस्मत मेंढकी एक बदकिस्मत बक्से में आ रही है।"

इवान राजी हो गया हालाँकि उसकी समझ में कुछ नहीं आया। ज़ार के महल में उसके दोनों बड़े भाई अपनी अपनी सुन्दर चमकती हुई खुश बढ़िया कपड़े पहने पत्नियों के साथ पहले आये।

दोनों ने आ कर इवान ज़ारेविच का बहुत मजाक बनाया क्योंकि वह तो अकेला ही आया था।

उन्होंने उससे हँसते हुए पूछा — "भाई तुम अकेले क्यों आये हो? अपनी पत्नी को साथ ले कर क्यों नहीं आये? क्या तुम्हारे पास उसको ढकने के लिये कोई फटा कपड़ा भी नहीं था? तुम्हें ऐसी सुन्दरता मिल भी कहाँ सकती थी?

हम इस बात की शर्त लगाते हैं कि उसके पिता के पूरे दलदल के राज्य में ऐसी सुन्दरता कोई दूसरी नहीं होगी।"

और फिर वे हँसते रहे हँसते रहे।

और फिर एक बहुत ज़ोर का शोर सुनायी दिया। सारा महल कॉप गया वहॉ बैठे सारे मेहमान डर गये। अकेला ज़ारेविच शान्त खड़ा रहा फिर बोला — "डरने की कोई बात नहीं है। मेरी मेंढकी अपने बक्से में आ रही है।"

सबने देखा कि लाल पोर्च में छह सफेद घोड़ों से जुती हुई एक उड़ने वाली सुनहरी गाड़ी रुकी और उसमें से सुन्दर वासिलीसा ने अपना हाथ अपने पति की तरफ बढ़ाया।

इवान उसका हाथ पकड़ कर उसको ओक की लकड़ी की बनी हुई भारी भारी मेजों की तरफ ले गया जिन पर बरफ की तरह से सफेद मेजपोश बिछे हुए थे और जिन पर बहुत सारे स्वादिष्ट खाने लगे हुए थे जो केवल परियों के देश में ही मिलते थे और वहीं खाये जाते थे। मेहमान लोग भी वहॉ खुशी से खाना खा रहे थे और बात कर रहे थे।

वासिलीसा ने गिलास में से थोड़ी सी शराब पी और जो बाकी बची वह उसने अपनी बॉयी आस्तीन में डाल ली। फिर उसने तले हुए हंस के कुछ टुकड़े खाये और उनकी हड्डियॉ अपनी दॉयी आस्तीन में डाल लीं। दोनों बड़े भाइयों की पत्नी ने यह देख लिया तो उन्होंने भी उसकी नकल करते हुए वैसा ही किया।

जब खाना खत्म हो गया तो सब लोग नाचने के लिये उठे। सुन्दर वासिलीसा जो वहॉ एक चमकता तारा लग रही थी सबसे पहले आगे आयी। पहले वह अपने राजा ज़ार के सामने झुकी फिर

उसने मेहमानों के सामने सिर झुकाया उसके बाद अपने खुश पति ज़ारेविच इवान के साथ नाचने लगी।

नाचते समय वासिलीसा ने अपनी बॉयी आस्तीन हिलायी तो उसमें से कमरे के बीच में एक झील प्रगट हो गयी जिससे वहॉ की हवा ठंडी हो गयी। फिर उसने अपनी दॉयी आस्तीन हिलायी तो उसमें से सफेद हंस निकल कर झील के पानी में तैरने लगे।

ज़ार, वहॉ बैठे मेहमान, नौकर, यहॉ तक कि भूरी बिल्ली भी जो वहॉ एक कोने में बैठी थी वह भी सुन्दर वासिलीसा की सुन्दरता को देख कर हैरान रह गये।

इवान के दोनों बड़े भाइयों की पत्नियॉ तो उसको देख कर बहुत ही जल रही थीं। जब उनके नाचने की बारी आयी तो उन्होंने भी अपनी बॉयी आस्तीन हिलायी जैसे वासिलीसा ने हिलायी थी तो उन्होंने तो सारी तरफ शराब फैला दी।

उसके बाद उन्होंने अपनी दॉयी आस्तीन हिलायी तो उसमें से बजाय हंसों के उनकी हड्डियॉ निकल कर पिता ज़ार के चेहरे पर जा पड़ीं। इससे पिता ज़ार बहुत गुस्सा हो गया और उसने उनको महल के बाहर निकाल दिया।

इस बीच इवान ज़ारेविच एक पल तो देखता रहा फिर वह वहॉ से किसी तरह बिना किसी के देखे निकल गया। वह तुरन्त अपने घर गया, अपनी पत्नी की मेंढकी की खाल ढूँढी और उसको आग में डाल कर जला दिया।

जब वासिलीसा घर वापस आयी तो अपनी खाल ढूँढने लगी पर वह उसको मिली नहीं तो वह बहुत दुखी हो गयी और उसकी ऑखों में ऑसू आ गये।

उसने अपने पति ज़ारेविच इवान से कहा — "ओ प्रिय ज़ारेविच, यह तुमने क्या किया। अब तो मेरे लिये इस मेंढक की बदसूरत खाल पहनने का बहुत थोड़ा सा ही समय बाकी रह गया था। वह समय पास ही था जब हम हमेशा के लिये एक साथ खुशी खुशी रहते। पर अब तुम्हें मुझे एक दूर देश में ढूँढना पड़ेगा जिसका रास्ता कोई नहीं जानता – अमर कोशची[22] के महल का रास्ता।"

इतना कह कर वह एक सफेद हंस में बदल गयी और खिड़की के रास्ते उड़ गयी। ज़ारेविच इवान तो यह देख सुन कर बहुत ज़ोर से रो पड़ा। फिर उसने भगवान से प्रार्थना की उत्तर दक्षिण पूर्व पश्चिम की तरफ क्रास बनाया और किसी अनजाने सफर पर निकल पड़ा।

कोई नहीं जानता कि यह सफर कितना लम्बा था पर चलते चलते एक दिन वह एक बूढ़े से मिला। उसने बूढ़े को सिर झुकाया तो बूढ़ा बोला — "गुड डे ओ बहादुर नौजवान। तू क्या ढूँढ रहा है और किधर जा रहा है?"

ज़ारेविच इवान ने उसको बिना कुछ छिपाये हुए अपनी बदकिस्मती के बारे में सब सच सच बता दिया।

[22] Koschie or Koschev the Deathless – a villain in Russian folklores

तो बूढ़े ने पूछा — "तो तूने उसकी वह मेंढकी वाली खाल जलायी ही क्यों? यह तूने कितना गलत काम किया।

अब तू मेरी बात सुन। वासिलीसा अपने पिता से भी ज़्यादा अक्लमन्द पैदा हुई थी। वह अपनी बेटी की अक्लमन्दी से बहुत जलता था इसलिये उसने अपनी बेटी को तीन साल तक मेंढकी बने रहने का शाप दे दिया।

पर मुझे तुझ पर दया आती है और मैं तेरी सहायता करना चाहता हूँ। ले यह एक जादू की गेंद ले। इस गेंद को अपने सामने फेंक देना और जिस तरफ यह जाये तू भी इसके पीछे पीछे चले जाना।"

ज़ारेविच इवान ने बूढ़े को धन्यवाद दिया और उसकी दी हुई गेंद अपने सामने फेंक दी। अब जिधर को भी वह गेंद चली वह उसके पीछे पीछे चल दिया।

वह चलता गया चलता गया। चलते चलते वह एक फूलों वाले मैदान में निकल आया। वहाँ उसको एक भालू मिला, एक रूसी भालू।

इवान ज़ारेविच ने अपन तीर कमान लिया और उसको मारने ही वाला था कि भालू बोला — "ओ दयालु ज़ारेविच मुझे मत मारो। कौन जानता है कि किसी दिन मैं तुम्हारे काम आ जाऊँ।" इवान ने उस भालू को छोड़ दिया।

वहाँ पर धूप में एक बतख उड़ी जा रही थी, एक सफेद प्यारी सी बतख। ज़ारेविच इवान ने उसको मारने के लिये एक बार फिर अपना तीर कमान उठाया कि वह बतख भी बोल पड़ी — "ओ भले ज़ारेविच मुझे मत मारो। मैं किसी दिन तुम्हारे काम जरूर आऊँगी।"

सो इवान ने उसको भी छोड़ दिया और आगे चल दिया। आगे चल कर उसको एक बड़ा खरगोश[23] मिला तो ज़ारेविच इवान ने उसको मारने के लिये फिर से अपना तीर कमान निकाला कि तभी उसने कहा — "मुझे मत मारो ओ बहादुर ज़ारेविच मैं बहुत जल्दी ही तुम्हारी सहायता करूँगा।"

सो इवान ज़ारेविच ने उस बड़े खरगोश को भी छोड़ दिया। अब वह फिर आगे चला तो वह एक समुद्र के किनारे आ गया।

उस समुद्र के किनारे पर रेत में एक मछली पड़ी थी। मुझे उस मछली का नाम तो नहीं मालूम पर वह एक बहुत बड़ी मछली थी और उस रेत पर पड़ी पड़ी मरने वाली हो रही थी।

मछली इवान से बोली — "ओ ज़ारेविच इवान मेरे ऊपर दया करो मुझे इस समुद्र के ठंडे पानी में फेंक दो।" ज़ारेविच इवान ने ऐसा ही किया और समुद्र के किनारे किनारे आगे चल दिया।

[23] Translated for the word "Hare". Hare is a rabbit-like animal, but a little bigger than rabbit – see its picture above.

इवान के आगे चलती चलती गेंद इवान को एक झोंपड़ी के पास ले आयी। यह एक अजीब सी छोटी सी झोंपड़ी थी जो एक छोटी सी मुर्गी की टॉगों पर खड़ी हुई थी

इवान उसको देख कर बोला — "इज़बूष्का इज़बूष्का।" रूसी भाषा में इसका मतलब होता है छोटी झोंपड़ी। "इज़बूष्का मैं चाहता हूँ कि तू अपना सामने का हिस्सा मेरी तरफ कर ले।"

और लो उस झोंपड़ी ने तो अपना सामने का हिस्सा इवान के सामने कर लिया। इवान उसके अन्दर घुसा तो उसने देखा कि उसमें तो एक जादूगरनी बैठी हुई है। वह जादूगरनी तो इतनी बदसूरत थी कि उसने इससे पहले कभी इतना बदसूरत कोई देखा नहीं था।

उस जादूगरनी ने उसको देखते ही पूछा — "ओ इवान ज़ारेविच तुम यहॉ क्यों आये हो?"

इवान गुस्से से चिल्ला कर बोला — "ओ बूढ़ी बुरा करने वाली, क्या रूस ने तुझे एक थके हुए मेहमान से इसी तरीके से सवाल करना सिखाया है? बजाय इसके कि तू उसको कुछ खाने को दे, कुछ पीने को दे, हाथ मुँह धोने के लिये थोड़ा सा गरम पानी दे। तू उससे ऐसा सवाल कर रही है?"

वह जादूगरनी बाबा यागा[24] थी। तब बाबा यागा ने ज़ारेविच को बहुत सारा खाना दिया बहुत सारा पीने को दिया और मुँह हाथ धोने के लिये गरम पानी दिया। ज़ारेविच इवान यह सब करके ताजा हुआ।

जल्दी ही वह बात करने के लायक हो गया तो उसने उसको अपनी शादी की अजीब कहानी सुनायी। उसने उसे बताया कि कैसे उसकी पत्नी उससे खो गयी थी और अब उसकी बस एक ही इच्छा थी और वह थी उसको पाना।

जादूगरनी बोली — "मुझे सब मालूम है। आजकल वह अमर कोशची के महल में है। और तुम्हें यह पता होना चाहिये कि वह एक बहुत ही भयानक आदमी है।

वह उसकी दिन रात रखवाली करता है और कोई भी उसे कभी भी नहीं जीत सकता। उसकी मौत एक जादू की सुई में है। वह सुई एक बड़े खरगोश के अन्दर है वह खरगोश एक बड़े बक्से के अन्दर है। वह बक्सा ओक के पेड़ की डालियों के बीच छिपा हुआ है।

और वासिलीसा की तरह कोशची इस ओक के पेड़ की भी दिन रात रखवाली करता है। इसका मतलब है कि किसी भी खजाने से ज़्यादा।"

[24] Baba Yaga is one of the main evil characters of Russian folklores. Of course in this folktale she helps the Prince.

तब जादूगरनी ने इवान ज़ारेविच को बताया कि वह ओक का पेड़ उसे कहाँ मिलेगा। सुनते ही इवान उधर की तरफ चल दिया। पर जब उसने ओक का पेड़ देखा तो वह बड़ा नाउम्मीद हुआ। उसे समझ में ही नहीं आया कि वह क्या करे और अपना काम कहाँ से शुरू करे।

लो तभी उसका जानने वाला रूसी भालू वहाँ आ गया। वह पेड़ के पास पहुँचा और उसको जड़ से उखाड़ दिया।

जड़ से उखड़ते ही वह पेड़ नीचे गिर पड़ा और उस पर रखा बक्सा भी नीचे गिर गया। नीचे गिरते ही वह बक्सा टूट गया। बक्से के टूटते ही उसमें एक बड़ा खरगोश निकल कर भाग गया।

तभी इवान ने देखा कि उसका दोस्त बड़ा खरगोश कहीं से आया और उसके पीछे पीछे भागा। इवान वाले बड़े खरगोश ने कोश्ची वाले बड़े खरगोश को तुरन्त ही पकड़ लिया और उसे फाड़ दिया।

खरगोश के फटते ही उसमें से एक भूरी बतख निकल कर भागी और आसमान में बहुत ऊँची उड़ गयी और गायब हो गयी। पर इवान की सुन्दर सफेद बतख ने उसका पीछा किया और उसको मार दिया।

उसके मरते ही उसमें से एक अंडा निकल पड़ा और वह अंडा समुद्र के नीले पानी में गिर पड़ा। यह देख कर तो ज़ारेविच की जान ही निकल गयी। अब वह उसमें से सुई कैसे निकालेगा कैसे

वह कोशची को मारेगा और फिर कैसे अपनी सुन्दर बासिलीसा को हासिल करेगा।

कि तभी उसने देखा कि वह बड़ी वाली मछली जिसको उसने समुद्र में फेंका था समुद्र में से बतख का अंडा लिये चली आ रही है। उसने अंडा ला कर समुद्र के किनारे की रेत पर फेंक दिया। इवान ज़ारेविच ने तुरन्त वह अंडा उठाया और उसे तोड़ कर उसमें से सुई निकाल ली जिस पर कोशची की ज़िन्दगी निर्भर थी।

उसी समय कोशची की सारी ताकत हमेशा के लिये जाती रही। इवान ज़ारेविच उस सुई को ले कर उसके राज्य में घुस गया और उसको उस जादुई सुई से मार दिया। उसके एक महल में उसको सुन्दर वासिलीसा भी मिल गयी।

वह उसको ले कर घर आ गया और फिर वे खुशी खुशी बहुत दिनों तक रहे।

4 सीधा इवानुष्का[25]

हमारे देश से कहीं बहुत दूर एक राज्य में एक शहर था जहॉ ज़ार मटर अपनी ज़ारिट्ज़ा गाजर[26] के साथ रहता था। उसके दरबार में बहुत सारे अक्लमन्द दरबारी लोग थे और अमीर राजकुमार थे। उसके पास बहुत सारे ताकतवर योद्धा थे सौ हजार से एक कम सादे सिपाही थे।

उसके शहर में भी बहुत सारी तरीके के लोग रहते थे – ईमानदार लोग, लम्बी दाढ़ी वाले लोग, हर चीज़ के बारे में जानने की इच्छा रखने वाले गधे, जर्मन सौदागर, सुन्दर लड़कियॉ, रूसी शराबी आदि आदि।

उस शहर में बाहर की तरफ किसान खेत जोतते थे उनमें गेहूँ उगाते थे आटा पीसते थे फिर उसको बाजार में बेचते थे और उससे जो पैसा आता था उससे शराब पीते थे।

ऐसे ही बाहर की जगह में एक बहुत गरीब बूढ़ा किसान अपने तीन बेटों के साथ रहता था – थोमस पाखोम और इवान।[27] यह

---

[25] Ivanoushka the Simpleton – a folktale from Russia, Asia. Taken from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/neu/ftr/chap04.htm#page_77
From the Book “Folk Tales from the Russian”, by Verra Xenofontovna Kalamatiano de Blumenthal. 1903. 9 tales.

[26] Tsar or Tzar Pea lived with his Tsaritza Carrot.

[27] Thomas, Pakhom and Ivan were the names of the farmer’s three sons

बूढ़ा किसान न केवल बहुत चतुर था बल्कि बहुत अक्लमन्द भी था। एक बार उसने शैतान से भी बातें की थीं।

बूढ़े ने उसको एक गिलास शराब का दिया और उससे बातें कीं। उसने उससे इस शराब के बदले में उसके बहुत सारे भेद जान लिये। इस घटना के बाद तो उस किसान ने इतने आश्चर्यजनक काम करने शुरू कर दिये कि उसके पड़ोसी तो उसको टोना करने वाला[28], जादूगर या फिर शैतान का रिश्तेदार ही कहने लगे।

यह बिल्कुल सच है कि उस किसान ने बहुत आश्चर्यजनक काम किये। अगर तुमको प्यार चाहिये तो उस बूढ़े के पास जाओ उसको सिर झुकाओ वह तुमको कोई अजीब सी जड़ दे देगा और तुम्हारा प्यार तुम्हारे पास आ जायेगा।

अगर किसी के घर में चोरी हो गयी है तो उस बूढ़े के पास जाओ उसको सिर झुकाओ अपनी कहानी बताओ तो वह पानी के ऊपर किसी आत्मा को बुलायेगा एक औफीसर को पकड़ कर चोर के पास ले जायेगा और बस तुम्हारी खोयी हुई चीज़ तुम्हें मिल जायेगी। बस तुम्हें यह देखना है कि कहीं औफीसर ही उसको न चुरा ले।

वह बूढ़ा सचमुच अक्लमन्द भी बहुत था पर उसके बच्चे उसके बराबर के नहीं थे। हॉ उनमें से उसके दो बेटे करीब करीब उसके

[28] Translated for the word “Sorcerer”

जैसे अक्लमन्द थे। वे शादीशुदा थे उनके बच्चे थे। पर उसका सबसे छोटा बेटा इवान अभी कुँआरा था।

कोई उसकी ज़्यादा परवाह भी नहीं करता था क्योंकि वह कुछ बेवकूफ सा ज़्यादा था। वह एक दो तीन भी ठीक से नहीं गिन पाता था। बस वह खाता था पीता था सोता था और इधर उधर लेटा रहता था। ऐसे आदमी की कोई परवाह क्यों करता।

हर एक जानता था कि कुछ लोगों की ज़िन्दगी उससे ज़्यादा अच्छी थी। पर इवान अच्छे दिल वाला था और शान्त स्वभाव का था।

उससे एक बैल्ट[29] माँगो तो वह अपना काफ्तान देने को भी तैयार रहता था। उससे उसके दस्ताने लो तो वह तुमको अपनी टोपी भी दे देगा। और इसी लिये सब उसको प्यार करते थे।

उसको लोग सीधा इवानुष्का कह कर बुलाते थे। हालाँकि इस नाम का मतलब था बेवकूफ फिर भी इसका मतलब था कि वह बहुत ही दयालु था।

हमारा यह बूढ़ा अपने बच्चों के साथ रहता रहा जब तक वह ज़िन्दा रहा। जब उसके मरने का समय आया तो उसने अपने तीनों बेटों को बुलाया और उनसे कहा — "मेरे प्यारे बच्चों अब मेरे मरने का समय आ गया है। तुम लोगों को मेरी इच्छा पूरी करने चाहिये।

[29] Belt is which is tied on the waist to hold something at the place

जब मैं मर जाऊँ तो तुम तीनों को मेरी कब्र पर आना चाहिये और वहाँ एक रात गुजारनी चाहिये। थोमस तुम पहली रात को आओगे पाखोम तुम दूसरी रात को आओगे और सीधा इवानुष्का तीसरी रात को आयेगा।"

बड़े दोनों बेटों ने होशियार बेटों की तरह से अपने पिता से वायदा किया कि वे उसकी कब्र पर जरूर आयेंगे पर सीधे इवान ने ऐसा कोई वायदा नहीं किया उसने बस अपना सिर खुजलाया।

उसके बाद वह बूढ़ा मर गया और उसको दफ़ना दिया गया। उसके मरने की खुशी में लोगों ने बहुत सारे पैनकेक[30] खाये और बहुत सारी व्हिस्की पी।

अब अगर तुम्हें याद हो तो पहली रात को थोमस को अपने पिता की कब्र पर जाना था पर वह बहुत आलसी था या फिर डरपोक भी हो सकता है सो उसने इवान से कहा — "मुझे कल सुबह सवेरे जल्दी उठना है और उठ कर गेहूँ से भूसा निकालना है सो तुम मेरी जगह आज पिता जी की कब्र पर चले जाओ।"

सीधे इवानुष्का ने कहा "ठीक है।" उसने काली राई[31] की डबल रोटी का एक टुकड़ा लिया और पिता की कब्र पर चल

[30] Pancake is flat kind of bread which is made of white flour is eaten with honey or syrup or butter. See its picture above.

[31] Rye is a kind of grain use to make bread and other things.

दिया। वहॉ जा कर वह लेट गया और जल्दी ही खर्राटे मारने लगा।

चर्च की घड़ी ने रात के बारह बजे का घंटा बजाया तो हवा ज़ोर से बह निकली, पेड़ पर उल्लू बोलने लगे, बूढ़े की कब्र खुल गयी बूढ़े ने पूछा "यहॉ कौन है?"

इवान बोला "मैं इवानुष्का पिता जी।"

"ठीक है मेरे प्यारे बेटे। मैं तुझको तेरे इस कहना मानने पर जरूर इनाम दूँगा।"

लो इतने में मुर्गे बोलने लगे और वह बूढ़ा कब्र में गिर पड़ा। सीधा इवान घर आ गया और अँगीठी के पास उसकी गरमी लेने चला गया।

उसके भाइयों ने पूछा "क्या हुआ?"

"कुछ नहीं। मैं तो वहॉ सारी रात सोता रहा। मुझे तो अब बहुत भूख लगी है।"

अब दूसरी रात आयी। इस रात अपने पिता की कब्र पर जाने की पाखोम की बारी थी। वह भी कुछ देर सोचता रहा फिर इवान से बोला — "कल तो मेरे लिये बहुत काम है इवान। मेहरबानी करके तुम आज मेरी जगह पिता जी की कब्र पर चले जाओ।"

इवानुष्का बोला "ठीक है।" उस दिन उसने मछली की एक पाई ली और अपने पिता की कब्र पर चला गया। वहॉ जा कर वह

पिछले दिन की तरह से लेट गया और लेटते ही सो गया और जल्दी ही खर्राटे भी मारने लगा।

आधी रात हुई तो पहली रात की तरह से फिर हवा ज़ोर से बह निकली, पेड़ पर उल्लू बोलने लगे, बूढ़े की कब्र खुल गयी। बूढ़े ने बाहर निकल कर पूछा "यहाँ कौन है?"

इवान बोला "मैं इवानुष्का पिता जी।"

"ठीक है मेरे प्यारे बेटे। मैं तेरे इस कहना मानने को कभी नहीं भूलूँगा।"

लो इतने में मुर्गे बोलने लगे और वह बूढ़ा कब्र में गिर पड़ा। सीधा इवान घर आ गया और अँगीठी के पास उसकी गरमी लेने चला गया।

उसके भाइयों ने पूछा "क्या हुआ?"

"कुछ नहीं। मैं तो वहाँ सारी रात सोता रहा। मुझे तो अब बहुत भूख लगी है।"

अब तीसरी रात आयी तो भाइयों ने इवानुष्का से कहा — "आज तो तुम्हारी ही बारी है पिता जी की कब्र पर जाने की सो तुम वहाँ जाओ। पिताजी की इच्छा तो पूरी करनी ही चाहिये न।"

इवान बोला "ठीक है।" इस बार उसने कुछ बिस्किट लिये अपनी भेड़ की खाल ओढ़ी और कब्र पर आ पहुँचा। आधी रात को उसका पिता कब्र में से बाहर निकला और पूछा "यहाँ कौन है?"

"पिता जी मैं हूँ इवानुष्का।"

"ठीक है मेरे प्यारे बेटे, तुमको तुम्हारा इनाम मिलेगा।" कह कर बूढ़ा अपनी सबसे तेज़ आवाज में चिल्लाया — "ओ बे घोड़े उठो, हवा की तरह तेज़ भागने वाले घोड़े मेरी जरूरत के समय मेरे सामने प्रगट हो जैसे घास तूफान में खड़ी होती है वैसे ही खड़े हो।"

और लो इवानुष्का ने एक भागता हुआ घोड़ा देखा। उसके खुरों के नीचे जमीन हिल रही थी। उसकी ऑखें तारों की तरह चमक रही थीं। उसके मुँह और कानों से धुँआ बादलों की तरह से निकल रहा था।

घोड़ा आ कर बूढ़े के पास खड़ा हो गया। उसने आदमी की आवाज में पूछा — "बता तेरी क्या इच्छा है।"

बूढ़ा उसके बॉये कान में घुस गया वहॉ वह नहाया धोया तैयार हुआ और एक बहादुर नौजवान के रूप में उसके दॉये कान में से कूद कर बाहर आ गया। इवान ने उस नौजवान को पहले कभी देखा नहीं था।

बाहर आ कर वह बोला — "अब तुम मेरी बात ध्यान से सुनो। मेरे बेटे मैं तुम्हें यह घोड़ा देता हूँ और ओ मेरे वफादार घोड़े और दोस्त तू मेरे बेटे की भी वैसे ही सेवा करना जैसे तूने मेरी सेवा की है।"

जैसे ही बूढ़े ने यह कहा कि मुर्गा बोला और वह टोना करने वाला अपनी कब्र में गिर पड़ा। हमारा सीधा इवानुष्का घर चला

गया। घर जा कर वह लेट गया और कुछ ही देर में खर्राटे मारने लगा।

उसके भाइयों ने फिर पूछा — "आज क्या हुआ?"

सीधा इवानुष्का कुछ नहीं बोला बस उसने अपना हाथ हिला दिया। तीनों भाई अपनी रोजमर्रा की ज़िन्दगी गुजारने लगे – दो अपनी होशियारी से और सबसे छोटा अपनी बेवकूफी से। वे लोग रोज अपने दिन एक ही तरह से गुजारते थे।

पर एक दिन और दूसरे दिनों से अलग दिन आया। उन्होंने सुना कि बड़े बड़े लोग बिगुल बजाने वाले और कई और संगीत के वाद्य बजाने वालों के साथ सारे देश में घूमने जा रहे थे।

वे लोग सबसे यह कहने जा रहे थे कि "ज़ार की इच्छा यह थी कि ज़ार मटर और ज़ारिट्ज़ा गाजर के एक अकेली बेटी थी ज़ारेवना बक्त्रियाना[32] जो उनकी राजगद्दी की भी मालिक थी।

उनकी बेटी इतनी सुन्दर थी कि जब वह सूरज की तरफ देखती थी तो सूरज भी उसको देख कर शरमा जाता था। वह उसकी ऑखों से छिप जाता था। ज़ार और ज़ारिट्ज़ा को यह निश्चय करने में बहुत मुश्किल पड़ रही थी कि वे किससे अपनी बेटी की शादी करें।

[32] Tzarevna Baktriana – the daughter of Tzar – Tzar is the title of the King of Russia before 1917. Tzaritza is the wife of Tzar.

वह आदमी एक ऐसा आदमी होना चाहिये जो किसी अच्छे खासे देश का राजा हो, लड़ाई के मैदान में बहादुर योद्धा हो, दरबार में अच्छा न्याय करने वाला हो, ज़ार को ठीक सलाह देने वाला हो और उसकी मौत के बाद उसके राज्य का काबिल वारिस हो।

इसके अलावा वे यह भी चाहते थे कि दुलहा नौजवान हो, बहादुर हो, सुन्दर हो और उनकी ज़ारेवना[33] को बहुत प्यार करे।

यह सब आसान हो सकता था पर परेशानी यह थी कि सुन्दर ज़ारेवना को किसी से प्यार नहीं था। कभी ज़ार उसको यह लड़का बताता तो कभी वह लड़का बताता पर वह हमेशा यही जवाब देती "मैं उससे प्यार नहीं करती।" ज़ारिट्ज़ा ने भी कई बार कोशिश की पर उसका वही जवाब "मुझे वह पसन्द नहीं है।"

एक दिन ऐसा आया जब ज़ार मटर और ज़ारिट्ज़ा गाजर ने अपनी बेटी से शादी के मामले पर गम्भीरतापूर्वक बात की।

"हमारी प्यारी बच्ची, हमारी सुन्दर ज़ारेवना बक्त्रियाना, अब समय आ गया है जब तुमको अपना पति चुन लेना चाहिये। बहुत तरीके के लोगों ने, राजाओं से ले कर ज़ार राजकुमारों तक ने, हमारे घर की देहरियॉ पार कर करके घिस दी हैं शराब के कमरे के कमरे खाली कर दिये हैं और तुमको अभी तक कोई तुम्हारी पसन्द का लड़का ही नहीं मिला है।"

[33] Tzarevna means the daughter of Tzar

ज़ारेवना बोली — "मेरे पिता राजा ज़ार और मेरी प्यारी मॉ ज़ारिट्ज़ा, मुझे आप दोनों के लिये बहुत दुख है और मेरी इच्छा आपका कहा मानने की है। इसलिये किस्मत को निश्चय करने दो कि मेरा दुलहा कौन बनता है।

मैं चाहती हूँ कि आप मेरे लिये एक बड़ा कमरा बनवायें, एक बहुत ऊँचा कमरा, बत्तीस घेरे का जिसके ऊपर एक खिड़की हो। मैं उस खिड़की में बैठूँगी और आप सब तरह के लोगों को वहॉ बुलायें – ज़ार, राजा, ज़ारोविच, कोरोलेविच, बहादुर योद्धा, सुन्दर नौजवान।

जो कोई भी उन बत्तीस घेरों में से हो कर मेरी खिड़की के पास आयेगा और मुझसे अपनी अँगूठी बदलेगा वही मेरा पति और आपका बेटा और वारिस होगा।"

ज़ार और ज़ारिट्ज़ा दोनों ने अपनी बेटी की बातें ध्यान से सुनी और बोले — "बेटी तुम्हारी इच्छा का पालन किया जायेगा।"

जल्दी ही वैसा ही एक बड़ा कमरा बनवा दिया गया एक बहुत ऊँचा कमरा जिसमें वैनेशियन मखमल[34] के परदे लगे हुए थे जिनमें मोती के फुँदने[35] लगे हुए थे। जिनमें सुनहरे डिजाइन बने हुए थे। खिड़की के दोनों तरफ बत्तीस गोले बने हुए थे।

[34] Venetian velvet

[35] Translated for the word "Tassels" – see its picture above

नौकर लोग सब लोगों के पास जा रहे थे। कबूतर ज़ार मटर और ज़ारिट्ज़ा गाजर के शहर में उनका स्वागत करने लिये उड़ रहे थे। सभी जगह यह घोषित कर दिया गया था कि जो कोई भी उन बत्तीस गोलों में से हो कर ज़ारेवना बक्त्रियाना के पास पहुँच कर उससे अपनी अँगूठी बदलेगा वही उसका पति बनेगा।

इस मुकाबले में उसके ओहदे को ध्यान में नहीं रखा जायेगा। वह ज़ार भी हो सकता है राजा भी और योद्धा भी ज़ारेविच भी कोरोलेविच भी सादा नागरिक भी हो सकता है और किसी भी देश का हो सकता है।

सो वह दिन भी आ पहुँचा। भीड़ मैदान में आ कर जमा होने लगी जहाँ तारे की तरह से चमकता हुआ नया बना कमरा था। ऊँची बनी खिड़की पर जवाहरातों से सजी हुई मखमल और मोती के कपड़े पहने हुए ज़ारेवना बैठी हुई थी।

नीचे लोग समुद्र की तरह से उमड़े पड़ रहे थे। ज़ार और ज़ारिट्ज़ा अपनी राजगद्दी पर बैठे थे। उनके आसपास बोयर[36], योद्धा और बहुत से लोग थे। सुन्दर बहादुर और गर्व से अपना सीना ताने उम्मीदवार सीटी बजाते हुए अपने अपने घोड़ों पर सवार इधर से उधर घूम रहे थे। पर जब भी वह उस ऊँची खिड़की की तरफ देखते थे तो उनका दिल डूबने लगता था।

[36] Boyar is a member of the old aristocracy in Russia, next in rank to a prince.

उनमें से कई लोग पहले कोशिश भी कर चुके थे। वे बहुत दूर से आते अपने आपको सँभालते, कूदते पर फिर पत्थर की तरह से गिर जाते और देखने वाले हँस पड़ते।

सीधे इवानुष्का के दोनों भाई भी इस मैदान में आने के लिये तैयार हुए तो इवान ने कहा कि अपने साथ मुझे भी ले चलो।

भाइयों ने हँस कर कहा — "तू तो बेवकूफ है। तू घर पर रह और मुर्गों की देखभाल कर।"

वह बोला "ठीक है।" और मुर्गों के बाड़े की तरफ चला गया और वहाँ जा कर लेट गया।

पर जैसे ही उसके भाई वहाँ से गये वह सीधा इवानुष्का मैदान में बाहर आया और अपनी पूरी ताकत से चिल्लाया — "ओ बे घोड़े उठो, हवा की तरह तेज़ भागने वाले घोड़े, मेरी जरूरत के समय मेरे सामने प्रगट हो जैसे घास तूफान में खड़ी होती है वैसे ही खड़े हो।"

उसी समय वह शानदार घोड़ा वहाँ दौड़ता हुआ आ गया। उसकी आँखों में अँगारे चमक रहे थे। उसके नथुनों से धुँआ बादलों की तरह निकल रहा था।

घोड़े ने आदमी की आवाज में उससे पूछा — "आपकी क्या इच्छा है?"

सीधा इवानुष्का उस घोड़े के बाँये कान में घुस गया अपने आपको बदला और उसके दाँये कान से फिर से प्रगट हो गया। वह इतना सुन्दर हो गया कि किसी भी किताब में उसकी सुन्दरता का

वर्णन नहीं मिलेगा क्योंकि कभी किसी ने इतना सुन्दर नौजवान देखा ही नहीं था तो उसका वर्णन कौन करता।

वह तुरन्त घोड़े पर कूद कर चढ़ गया और उसको रेशम के कोड़े से हॉका। घोड़े का धीरज छूट गया वह जमीन से ऊपर कूदा ऊपर और ऊपर अँधेरे जंगलों के ऊपर, तैरते हुए बादलों के नीचे। वह बड़ी बड़ी नदियों के ऊपर से गया छोटी छोटी नदियों को और पहाड़ों को कूद कर पार किया।

घोड़े पर सवार इवानुष्का ज़ारेवना बक्त्रियाना के उस बड़े कमरे वाले मैदान में आ पहुँचा। वह चील की तरह ऊपर उड़ा तीस गोलों में से तो गुजरा पर आखीर के दो गोलों से नहीं गुजर सका और भँवर की तरह से वापस चला गया।

यह देख कर नीचे से लोग चिल्लाये "पकड़ कर रखो पकड़ कर रखो।" ज़ार भी अपनी राजगद्दी से कूद कर खड़ा हो गया। ज़ारिट्ज़ा भी चिल्ला पड़ी। हर आदमी आश्चर्य से चिल्ला रहा था।

इवानुष्का के भाई कोशिश करके घर चले गये थे और बस अब एक ही चीज़ के बारे में बात कर रहे थे कि उन्होंने कितना शानदार आदमी देखा था। तीस गोलों में से हो कर जाने की कितनी बढ़िया शुरूआत थी।

इवानुष्का जो बहुत पहले ही वहॉ आ चुका था बोला — "भाइयो वह शानदार आदमी मैं था।"

उसके भाई बोले — "चुप रहो और हमारा बेवकूफ मत बनाओ।"

अगले दिन दोनों भाई फिर से उसी मैदान में जाने लगे तो इवानुष्का ने फिर कहा "मुझे भी अपने साथ ले चलो।"

"हम तुझे ले चलें, अरे तेरी तो जगह यही है। घर में शान्ति से बैठ और पुतले की बजाय तू मटर के खेत से चिड़ियों को भगा।"

इवान बोला — "ठीक है।" वह मटर के खेत चला गया और खेत से चिड़ियों को भगाने लगा।

पर जैसे ही उसके भाई घर से गये वह तुरन्त ही बाहर मैदान में आया और अपनी पूरी ताकत से चिल्लाया — "ओ बे घोड़े उठो, हवा की तरह तेज़ भागने वाले घोड़े, मेरी जरूरत के समय मेरे सामने प्रगट हो जैसे घास तूफान में खड़ी होती है वैसे ही खड़े हो।"

उसी समय वह शानदार घोड़ा वहॉ दौड़ता हुआ आ गया। उसकी ऑखों में अॅगारे चमक रहे थे। उसके नथुनों से धुॅआ बादलों की तरह निकल रहा था।

आते ही वह आदमी की आवाज में बोला — "तुम्हारी क्या इच्छा है?"

इवानुष्का उसके बॉये कान में से घुसा अपने आपको बदला और उसके दॉये कान में से प्रगट हो गया। जब वह उसके दॉये कान में से बाहर निकला तो वह तो बस क्या ही लग रहा था।

परियों की दुनियॉ में भी कोई ऐसा आदमी नहीं होगा रोजमर्रा की जिन्दगी में तो क्या।

इवानुष्का उसकी पीठ पर कूद कर बैठ गया और उसको अपने मजबूत कोड़े से मारा। वह कुलीन घोड़ा गुस्सा हो गया उसने एक कुदान मारी और वह जमीन से ऊपर कूदा, फिर ऊपर और ऊपर, अॅधेरे जंगलों के ऊपर, तैरते हुए बादलों के नीचे।

वह एक बार कूद मारता तो एक मील आगे पहुॅच जाता। उसने दूसरी कूद मारी तो नदी पीछे छोड़ दी और तीसरी कूद मारी तो वह ज़ारेवना बक्त्रियाना के उस बड़े कमरे वाले मैदान में आ पहुॅचा।

फिर वह घोड़ा इवानुष्का को लिये हुए चील की तरह से ऊपर उड़ा, इकत्तीस गोलों में से हो कर गुजरा पर आखीर के गोले से नहीं गुजर सका और भॅवर की तरह से वापस चला गया।

लोग फिर चिल्लाये "पकड़ कर रखो पकड़ कर रखो।" ज़ार एक बार फिर से कूद पड़ा। जारिट्ज़ा एक बार फिर चिल्ला पड़ी। बोयर और राजकुमारों के मुॅह खुले के खुले रह गये।

सीधे इवानुष्का के भाई घर आ गये थे। वे उस आदमी की बहुत तारीफ कर रहे थे। वाकई वह एक आश्चर्यजनक आदमी था। उससे केवल एक गोला ही छूट गया।

इवानुष्का बोला — "वहॉ वह आदमी मैं था।"

वे गुस्से से बोले — "ओ बेवकूफ अपनी जगह शान्ति से रहो।"

तीसरे दिन इवानुष्का के भाई फिर वहीं ज़ार के यहॉ मजा लेने के लिये जा रहे थे तो इवानुष्का ने उनसे फिर कहा "मुझे भी साथ ले चलो।"

वे हॅसे और बोले — "बेवकूफ अभी तो सूअरों को खाना देना है। अच्छा है कि तुम जा कर उनको खाना दो।"

इवान बोला "ठीक है।" और यह कह कर वह सूअरों को खाना देने चला गया।

पर जैसे ही वे घर से चले गये वह तुरन्त ही बाहर मैदान में आया और अपनी पूरी ताकत से चिल्लाया — "ओ बे घोड़े उठो, हवा की तरह तेज़ भागने वाले घोड़े, मेरी जरूरत के समय मेरे सामने प्रगट हो जैसे घास तूफान में खड़ी होती है वैसे ही खड़े हो।"

उसी समय वह शानदार घोड़ा वहॉ दौड़ता हुआ आ गया। उसके आने से जमीन कॉपने लगी। उसकी ऑखों में अॅगारे चमक रहे थे। उसके नथुनों से धुॅआ बादलों की तरह निकल रहा था।

आते ही वह आदमी की आवाज में बोला — "तुम्हारी क्या इच्छा है?"

इवानुष्का उसके बॉये कान में घुसा अपने आपको बदला और उसके दॉये कान में से प्रगट हो गया। वह तो क्या ही सुन्दर आदमी

बन गया था। कोई नौजवान लड़की तो इतना सुन्दर आदमी सोच भी नहीं सकती थी।

इवानुष्का ने घोड़े को एड़ लगायी उसकी लगाम सीधी खींची और लो वह तो हवा में ऊँचा उड़ चला। उसने तो हवा को भी पीछे छोड़ दिया। पंखों वाली चिड़ियों को भी पीछे छोड़ा दिया। अबकी बार तो हमारा सवार आसमान में बादलों की तरह जा रहा था।

उसकी वर्दी में चॉदी की जंजीरें लगी थीं वे सब बज रही थीं। उसके सुन्दर कपड़े हवा में उड़े जा रहे थे।

बह ज़ारेवना के ऊँचे कमरे के पास आ गया था। उसने अपने घोड़े को एक और चाबुक मारा तो घोड़े ने एक ऊँची कूद मारी और वह सारे गोले पार करके खिड़की के पास पहुँच गया।

इवान ने ज़ारेवना को अपनी मजबूत वॉहों में ले कर उसके होठों का चूमा, अँगूठी बदली और तूफान की तरह नीचे आ गया। इस समय वह अपने रास्ते में आये हर एक को कुचलता चला आ रहा था।

और ज़ारेवना? उसने तो उसको बिल्कुल भी विरोध नहीं किया वल्कि उसके माथे पर हीरे का एक तारा और लगा दिया।

नीचे से लोग चिल्लाये "पकड़ लो इसको पकड़ लो इसको।" पर वह तो वहॉ से पहले ही जा चुका था। उसने तो अपना कोई निशान भी नहीं छोड़ा था।

ज़ार मटर की शाही शान जा चुकी थी। ज़ारिट्ज़ा गाजर तो इस समय पहले से भी ज़्यादा ज़ोर से चिल्ला पड़ी। ज़ार के अक्लमन्द सलाहकार केवल अपने अपने अक्लमन्द सिर हिला कर ही रह गये। वे सब चुप थे। किसी की आवाज भी नहीं निकल रही थी।

इवानुष्का के भाई इस सब मामले पर बात करते घर आ गये। "वास्तव में। यह तो केवल सोचने वाली बात है। यह आदमी तो कामयाब हो गया और अब हमारी ज़ारेवना को उसका दुलहा मिल गया। पर वह है कौन और है कहॉ।"

इवानुष्का मुस्कुराया फिर बोला — "और वह नौजवान मैं हूँ और यहॉ हूँ।"

भाइयों ने उसको फिर चुप करते हुए कहा — "चुप रहो। तुम हर समय मैं मैं करते रहते हो।"

पर इस बार मामला कुछ गम्भीर था। ज़ार और ज़ारिट्ज़ा ने हुकुम जारी कर दिया कि शहर के चारों तरफ हथियारबन्द सिपाही तैनात कर दिये जायें जिनका काम यह हो कि जो कोई अन्दर आना चाहे तो उन सबको अन्दर तो आने दिया जाये पर किसी को बाहर न जाने दिया जाये।

इसके अलावा हर एक को शाही दरबार में पेश होना था और अपना माथा दिखाना था ताकि हीरे के तारे वाला आदमी ढूँढा जा सके।

सो अगले दिन सुबह से ही महल के पास लोगों की भीड़ इकट्ठी होनी शुरू हो गयी। हर एक का माथा देखा जा रहा था पर किसी माथे पर कोई तारा नहीं था।

शाम के खाने का समय हो रहा था और महल में लोग ओक की मेजों पर सफेद मेजपोश बिछाना ही भूल गये थे।

इवानुष्का के भाई भी अपना माथा दिखाने आने लगे तो अपने सीधे इवानुष्का ने उनसे फिर कहा "मुझे भी साथ ले चलो।"

तो उन्होंने उससे हॅसी में कहा "तेरे लिये तो बस यही जगह ठीक है। पर ज़रा बता तो कि तेरे सिर को क्या हुआ है। जो तूने अपने सिर को कपड़ों से ढका हुआ है। क्या तुझे किसी ने मारा है?"

"ओह नहीं नहीं मुझे किसी ने नहीं मारा। मेरा माथा अपने आप ही दरवाजे से टकरा गया था। दरवाजे को तो कुछ नहीं हुआ पर मेरे माथे पर एक गूमड़ा[37] पड़ गया।"

उसकी इस बात पर उसके भाई हॅस पड़े और महल की तरफ चले गये। उनके जाने के तुरन्त बाद ही इवानुष्का सीधा ज़ारेवना की खिड़की के पास गया। वहॉ ज़ारेवना खिड़की पर झुकी हुई बैठी हुई थी और अपने होने वाले दुलहे का इन्तजार कर रही थी।

[37] Goomadaa means a bump caused by some kind of hit.

जब इवानुष्का वहॉ पहुँचा तो सारे चौकीदार उसको देखते ही चिल्लाये — "यह रहा हमारा आदमी। अपना माथा दिखाओ। क्या तुम्हारे माथे पर तारा है?" कह कर वे खुद ही हॅस पड़े।

इवानुष्का ने उनकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया बल्कि उनको अपना माथा दिखाने से मना कर दिया।

यह देख कर चौकीदारों ने चिल्लाना शुरू किया तो शोर मचा। शोर मचा तो ज़ारेवना ने यह शोर सुना तो उस आदमी को अपने सामने लाने के लिये कहा।

अब तो कुछ किया नहीं जा सकता था सो उसको अपने सिर से कपड़ा हटाना ही पड़ा। लो उसके माथे के बीचोबीच तो हीरे का एक तारा चमक रहा था।

ज़ारेवना इवानुष्का को हाथ पकड़ कर ज़ार मटर के पास ले गयी और बोली — "पिता जी यह है वह जिसको मेरा पति बनना है और आपका दामाद और वारिस।"

अब तो उसको मना करने का समय ही नहीं था उसके लिये बहुत देर हो चुकी थी। सो ज़ार ने शादी की तैयारियॉ करने का हुकुम दे दिया। और हमारे सीधे इवानुष्का की शादी ज़ारेवना बक्त्रियाना से हो गयी।

ज़ार, ज़ारिट्ज़ा, नयी दुलहिन और दुलहा और इनके मेहमान सबने तीन दिन तक दावत खायी। उन दावतों में बहुत बढ़िया

बढ़िया खाने बने थे। पीने को भी बहुत था। बहुत तरीके के आनन्द के साधन भी थे।

इवानुष्का के भाइयों को गवर्नर बना दिया गया और उन दोनों को एक एक गॉव और एक एक घर दे दिया गया।

कहानी कहने में समय नहीं लगता पर ज़िन्दगी जीने में समय भी लगता है और धीरज की भी जरूरत होती है।

जैसा कि हम जानते हैं सीधे इवानुष्का के भाई तो होशियार आदमी थे। जैसे ही वे अमीर आदमी बने हर आदमी यह बात अच्छी तरह समझ गया। इसके अलावा वे खुद भी यह बात जानते थे सो उनमें घमंड आना शुरू हो गया और वे अपनी शान बघारने लगे।

नम्र लोग उनके घर की तरफ देख भी नहीं सकते थे। बोयर लोग भी उनको देख कर अपनी फ़र की टोपी उतार देते थे।

एक बार कई बोयर ज़ार मटर के पास गये और कहा — "ज़ार आपके दामाद के भाई लोग इधर उधर अपनी बहुत शेखी बघार रहे हैं कि वे एक ऐसी जगह को जानते हैं जहॉ एक सेब का पेड़ उगता है जिसकी चॉदी की पत्तियॉ हैं और सोने के सेब हैं। वे यह पेड़ आपके लिये लाना चाहते हैं।"

यह सुन कर ज़ार ने तुरन्त ही उन दोनों भाइयों को बुलवाया और उनसे तुरन्त ही वह आश्चर्यजनक सेब का पेड़ लाने के लिये

कहा जिसकी चॉदी की पत्तियॉ हैं और जिसके ऊपर सोने के सेब लगते हैं।

भाइयों ने बहुत बहाने बनाये पर ज़ार के भी अपने तरीके थे। उसने उनको शाही अस्तबल से बहुत अच्छे घोड़े दिये और उनको वह पेड़ लाने पर मजबूर किया सो वे अपने काम पर चल दिये।

हमारा दोस्त सीधे इवानुष्का को कहीं से कोई लंगड़ा सा घोड़ा मिल गया। वह उसकी पीठ पर उसकी पूँछ की तरफ मुँह करके बैठ गया और वह भी चल दिया।

उस घोड़े पर सवार हो कर वह एक बड़े से खुले हुए मैदान में आ गया। वहॉ आ कर उसने उस घोड़े की पूँछ पकड़ कर उस घोड़े को घुमा कर फेंकते हुए कहा — "ओ कौओ और मैनाओ आओ देखो तुम्हारे लिये खाना तैयार है।"

इसके बाद उसने अपने घोड़े को बुलाया और हमेशा की तरह से उसके बॉये कान में से अन्दर जा कर उसके दॉये कान में से बाहर निकल आया। और फिर वे चल दिये।

कहॉ? पूर्व की ओर जहॉ यह चॉदी की पत्तियों वाला और सोने के सेब वाला सेब का पेड़ उगता था। यह पेड़ चॉदी के पानी के पास सोने की रेत में उगता था।

जब इवानुष्का उस जगह पहुँचा जहॉ पेड़ लगा था तो उसने वह पेड़ उखाड़ लिया और उसे घर ले चला। उसका रास्ता लम्बा था

और वह थक गया था सो घर आने से पहले उसने अपना एक तम्बू लगाया और वहॉ आराम करने के लिये लेट गया।

उसी रास्ते से उसके भाई आ रहे थे। अब वे दोनों घमंडी नहीं रहे थे बल्कि कुछ दुखी हो गये थे क्योंकि वह यह नहीं जानते थे कि वे अब ज़ार को क्या जवाब देंगे।

तभी उन्होंने चॉदी की चोटी वाला एक तम्बू देखा और उसके पास देखा एक सेब का पेड़। वे उसके और पास आये तो वे दोनों चिल्लाये "अरे यह तो अपना सीधा है।" तब उन्होंने इवानुष्का को जगाया और उससे सेब का पेड़ खरीदना चाहा। वे अमीर थे सो उन्होंने उसको तीन गाड़ी भर कर चॉदी देनी चाही।"

पर इवानुष्का बोला — "भाइयो यह आश्चर्यजनक सेब का पेड़ बेचने के लिये नहीं है पर अगर तुम इसको पाना चाहते हो तो पा सकते हो। इसकी कीमत ज़्यादा नहीं है केवल तुम दोनों के दॉये पैर का एक एक अॅगूठा।"

भाइयों ने इस पर विचार किया और आखीर में उसकी मॉगी हुई कीमत देने पर राजी हो गये।

इवानुष्का ने उन दोनों के दॉये पैर के अॅगूठे काट लिये और उनको सेब का पेड़ दे दिया। खुश खुश दोनों भाई उस पेड़ को ज़ार के पास ले कर आये और उन्होंने वहॉ अपनी खूब शान बघारी।

वे बोले — "ओ ताकतवर ज़ार, हम इस पेड़ को लेने के लिये बहुत दूर गये। रास्ते में बहुत मुश्किलें सहीं पर किसी तरह से हम आपकी इच्छा पूरी करने में कामयाब हो गये।"

ज़ार मटर उस सेब के पेड़ को देख कर बहुत खुश हुआ और एक दावत का इन्तजाम किया। संगीत बजाने का हुकुम दिया और ढोल बजाने के लिये भी कहा। इवानुष्का के दोनों भाइयों को इनाम में उसने एक एक शहर दिया और उनकी बहुत तारीफ की।

यह देख कर तो बोयर और योद्धा लोग बहुत गुस्सा हो गये। उन्होंने ज़ार से कहा — "इस सेब के पेड़ में जिसमें चॉदी की पत्तियॉ हैं और सोने के सेब हैं ऐसी कौन सी आश्चर्यजनक बात है।

आपके दामाद के भाई तो शान बघार रहे हैं कि वे आपके लिये एक मादा सूअर ले कर आयेंगे जिसके सुनहरे बाल होंगे और चॉदी के दॉत होंगे। और केवल सूअर ही नहीं बल्कि उसके बारह बच्चे भी ले कर आयेंगे।"

यह सुन कर ज़ार ने उन दोनों भाइयों को बुलाया और उनको वह सुनहरे बाल वाला और चॉदी के दॉत वाला सूअर लाने के लिये कहा।

भाइयों ने बहाने बनाये पर उनके बहाने नहीं सुने गये सो उनको जाना ही पड़ा। एक बार फिर वे एक मुश्किल काम के लिये निकल पड़े – एक ऐसी सूअर को लाने के लिये जिसके सोने के बाल थे चॉदी के दॉत थे और बारह बच्चे थे।

उस समय सीधे इवानुष्का ने कहीं जाने का अपना मन बनाया हुआ था। सो उसने एक गाय पर बैठने की सीट डाली और कूद कर उसकी पूँछ की तरफ मुँह करके बैठ गया। तुरन्त ही वह शहर छोड़ कर चल दिया।

वह एक खुले हुए मैदान में आया गाय को उसके सींगों से पकड़ कर दूर उछाल दिया और चिल्लाया — "आओ आओ ओ भूरे भेड़ियो और लाल लोमड़ियो तुम्हारा खाना तैयार है।"

फिर उसने अपने वफादार घोड़े को आने का हुकुम दिया। जब वह आ गया तो वह पहले की तरह से उसके बॉये कान में से घुसा और दॉये कान में से बाहर निकल आया।

वह उस घोड़े पर बैठ कर अपने काम पर चल दिया। इस बार वे दक्षिण की तरफ चले। एक दो तीन और वे घने जंगलों में थे। इन्हीं जंगलों में वह मादा सूअर इधर उधर घूम रही थी – सोने के बालों वाली और चॉदी के दॉतों वाली। उस समय वह वहॉ जड़ें खा रही थी। उसके पीछे थे उसके बारह बच्चे।

सीधे इवानुष्का ने उसके ऊपर रेशम की रस्सी का एक फन्दा बना कर फेंका और बारह सूअर के बच्चों को पकड़ कर एक टोकरी में रखा और घर चला गया।

पर इससे पहले कि वह ज़ार मटर के शहर पहुँच पाता उसने बीच रास्ते में सोने की चोटी वाला एक तम्बू गाड़ा और उसमें आराम करने के लिये लेट गया।

उसके तीनों भाई भी उदास चेहरे से उसी रास्ते से आ रहे थे। वे नहीं जानते थे कि ज़ार से क्या कहना था। रास्ते में उन्होंने एक तम्बू देखा और उसके पास देखी वह सूअर जिसको वे ढूँढ रहे थे – सोने के बालों और चॉदी के दॉतों वाली।

वह एक रेशम की रस्सी से बॅधी हुई थी और वहीं पास में एक टोकरी में बारह बच्चे रखे हुए थे।

भाइयों ने तम्बू में झॉका तो अरे यह तो फिर से इवानुष्का था। उन्होंने उसे जगाया और उस सूअर और उसके बारह बच्चों का सौदा किया। उनके लिये वे तीन गाड़ी भर कर कीमती जवाहरात देने को तैयार थे।

इवानुष्का ने फिर वही कहा — "भाइयो मेरे ये सूअर बिकाऊ नहीं हैं। पर अगर तुम इसको इतना ही चाहते हो तो तुम दोनों के दॉये हाथ की एक एक उॅगली इसके लिये काफी है।"

इस बार दोनों ने कुछ ज़्यादा देर तक विचार किया फिर उन्होंने यह सोचा "लोग तो बिना दिमाग के भी खुशी खुशी रहते हैं तो हम बिना उॅगलियों के क्यों नहीं रह सकते।" सो उन्होंने इवानुष्का को अपनी उॅगलियॉ काटने की इजाज़त दे दी।

उॅगलियॉ दे कर उन्होंने उससे सूअर और उसके बच्चे लिये और ज़ार के शहर चल दिये। वहॉ पहुॅच कर उन्होंने ज़ार को सूअर और उसके बच्चे दिये और अपनी खूब डींग हॉकी।

उन्होंने कहा — "ओ राजा ज़ार, हम हर जगह गये। नीले समुद्र के उस पार गये, घने जंगलों के उस पार गये गहरी रेत से हो कर गुजरे। हमने भूख सही प्यास सही पर आखीर में आपकी इच्छा पूरी की।"

ज़ार तो इतने अच्छे वफादार नौकर पा कर बहुत खुश हुआ। उसने फिर से एक दावत दी। सीधे इवानुष्का के भाइयों को इनाम दिया। उसने अबकी बार उनको बोयर का ओहदा दे दिया।

यह देख कर दूसरे बोयर और दरबार के लोगों ने ज़ार से कहा — "इस सूअर में क्या आश्चर्यजनक बात है। उसके सुनहरे बाल और चॉदी के दॉत अच्छे हैं पर सूअर तो हमेशा सूअर ही रहता है।

आपको दामाद के भाई तो इसकी भी शान बघार रहे हैं कि वे आग वाले ड्रैगन के अपने अस्तबल से एक घोड़ी चुरा कर ला देंगे जिसकी गरदन के बाल सुनहरी हैं और खुर हीरे के हैं।"

यह सुन कर ज़ार ने तुरन्त ही सीधे इवानुष्का के दोनों भाइयों को बुलाया और आग वाले ड्रैगन के अपने अस्तबल से वह वाली घोड़ी चुराने के लिये कहा जिसकी गरदन के सुनहरी बाल हैं और जिसके हीरे के खुर हैं।

दोनों भाइयों ने कसम खायी कि उन्होंने कभी ऐसा नहीं कहा कि वे ऐसी घोड़ी ला कर देंगे पर ज़ार उनकी बात कहॉ सुनने वाला था।

उसने कहा — "चाहे कितना भी सोना ले जाओ चाहे कितने भी योद्धा ले जाओ पर वह सुन्दर घोड़ी ला कर मुझे दो जिसकी गरदन के सुनहरी बाल हैं और हीरे के खुर हैं।

अगर तुम उसे मुझे ला कर दे दोगे तो मैं तुम्हें बहुत बड़ा इनाम दूँगा। और अगर नहीं ला कर दोगे तो तुम लोगों को फिर से किसान बना दिया जायेगा।"

दोनों भाई चल दिये दो दुखी हीरो की तरह से। वे बहुत धीरे धीरे जा रहे थे पर कहाँ जा रहे थे यह वे नहीं जानते थे। इवानुष्का इस बार एक डंडी पर बैठा और कूदता हुआ एक खुले मैदान में पहुँच गया।

वहाँ पहुँच कर उसने फिर से अपने घोड़े को बुलाया। उसके बाँये कान में से घुसा और दाँये कान में से निकल आया। और फिर दोनों एक दूर देश के लिये चल पड़े – एक टापू के लिये एक बहुत बड़े टापू के लिये।

उस टापू पर आग वाला ड्रैगन अपने एक लोहे के अस्तबल में रखे कीमती खजाने की देखभाल कर रहा था – वह घोड़ी जिसकी गरदन के सुनहरी बाल थे और हीरे के खुर थे। जो सात भारी लोहे के दरवाजों के पीछे सात तालों में बन्द थी।

हमारा सीधा इवानुष्का चलता रहा चलता रहा, कब तक यह तो पता नहीं पर यकीनन वह तब तक चलता रहा जब तक वह उस टापू पर नहीं पहुँच गया।

वहॉ पर वह उस ड्रैगन से तीन दिन तक लड़ा और चौथे दिन उसे मारा। उसे मार कर उसने ताले खोलने शुरू किये। इसमें उसे तीन दिन और लग गये। ताले खोल कर उसने वह आश्चर्यजनक घोड़ी निकाली जिसकी गरदन के सुनहरी बाल थे और हीरे के खुर थे और उसको ले कर घर लौट चला।

रास्ता बहुत लम्बा था इससे पहले कि वह अपने शहर पहुॅच पाता उसने आराम करने के लिये रास्ते में अपना तम्बू गाड़ा जिसकी चोटी पर उसने हीरा लगा दिया और आराम करने के लिये लेट गया।

उसके भाई भी उसी रास्ते से आये। वे बहुत उदास और दुखी थे क्योंकि वे सोच रहे थे कि वे शहर लौट कर ज़ार को क्या जवाब देंगे और उसके गुस्से को कैसे सहेंगे।

तभी उन्होंने किसी घोड़े के हिनहिनाने की आवाज सुनी जिससे सारी धरती कॉप उठी। उन्होंने देखा कि वह तो वह घोड़ी थी जिसकी गरदन पर सुनहरी बाल थे। हालॉकि उसकी गरदन के बाल उस समय शाम के धुॅधलके में आग की तरह चमक रहे थे।

वे रुके उन्होंने इवानुष्का को जगाया और उससे उस आश्चर्य जनक घोड़ी का सौदा करना चाहा। इस बार वह दोनों उसको उस

घोड़ी के बदले में एक एक बुशैल भर कर जवाहरात देना चाहते थे और साथ में कुछ और भी।

इवानुष्का बोला — "हालॉकि मेरी घोड़ी बिकाऊ नहीं है पर अगर तुम उसे लेना ही चाहते हो तो मैं तुम्हें उसे तुम्हारे दॉये कान के बदले में दे दूँगा।"

इस बार भाइयों ने कुछ सोचा विचारा नहीं कुछ बहस भी नहीं की और इवानुष्का को अपने अपने दॉये कान काटने दिये। कान कटाने के बाद घोड़ी की लगाम पकड़ी और सीधे ज़ार के पास पहुँचे।

उन्होंने ज़ार को गरदन पर सुनहरी बाल वाली और हीरे के खुर वाली घोड़ी दी और फिर अपनी ऊँची ऊँची शान बघारी। हम समुद्र के उस पार गये हम पहाड़ों के उस पार गये फिर हम आग वाले ड्रैगन से लड़े जिसने हमारे कान और उँगलियॉ काट लीं।

पर हमको इस बात का बिल्कुल डर नहीं था हमको तो बस आपकी सेवा करनी थी। हमने अपना खून भी बहाया और पैसा भी खोया।

ज़ार मटर ने उनको सोने से ढक दिया। उसने उनको अपने बाद का सबसे ऊँचा पद दे दिया और एक ऐसी दावत का इन्तजाम किया कि शाही रसोइये मेहमानों को खाना खिलाने के लिये खाना बनाते बनाते थक गये। शाही शराबखाने भी करीब करीब खाली हो गये।

ज़ार मटर अपनी राजगद्दी पर बैठा हुआ था। एक भाई उसके दॉयी तरफ बैठा था दूसरा भाई उसकी बॉयी तरफ बैठा था। दावत चल रही थी। सब बहुत खुश थे। सब बहुत पी रहे थे। सब बहुत शोर मचा रहे थे।

इस सबके बीच में हमारा सीधा इवानुष्का वहॉ घुसा। वही सीधा इवानुष्का जो एक बार में ही बत्तीस गोले पार कर सुन्दर ज़ारेविच बक्त्रियाना की खिड़की के पास पहुँच गया था।

जब भाइयों ने उसे देखा तो एक शराब पी रहा था। उसे देख कर उसका गला शराब से रुँध गया और दूसरा मॉस खा रहा था सो उसका गला मॉस से रुँध गया। उन्होंने उसे देखा तो उनकी ऑखें खुली की खुली रह गयीं।

सीधे इवानुष्का ने अपने ससुर जी को सिर झुकाया और फिर अपनी कहानी कुछ इस तरह सुनायी —

उसने उनको उस आश्चर्यजनक सेब के पेड़ की कहानी बतायी जिसके पत्ते चॉदी के थे और सेब सोने के थे। उसने उनको उस मादा सूअर की कहानी सुनायी जिसके बाल सोने के थे और दॉत चॉदी के थे और उसके बारह बच्चे थे। उसने उनको उस घोड़ी की कहानी भी सुनायी जिसकी गरदन के बाल सुनहरी थे और खुर हीरे के थे।

कहानियॉ खत्म करने के बाद उसने अपनी जेब से पैर के अॅगूठे हाथ की उॅगलियॉ और कान निकाले और ज़ार के सामने रख दिये और कहा कि "ये मैंने इन चीज़ों के बदले में लिये थे।"

यह सब देख कर तो ज़ार बहुत गुस्सा हो गया। उसने दोनों भाइयों को झाड़ू मार कर बाहर निकाल देने का हुकुम दिया। एक को उसने अपने सूअरों को खाना खिलाने के लिये रख लिया और दूसरे को अपनी टर्कियों की देखभाल के लिये रख लिया।

उसके वाद ज़ार ने सीधे इवानुष्का को अपने पास बिठाया और सबसे ऊॅचे से भी ऊॅचे का ओहदा दिया। इस खुशी में फिर एक दावत का इन्तजाम किया गया जो इतने दिनों तक चली जब तक लोग खाते खाते थक नहीं गये।

इवानुष्का अब ज़ार के राज्य को अक्लमन्दी से सॅभालता था। अपने ससुर की मौत के बाद वह ज़ार बन गया। उसकी प्रजा उसको बहुत प्यार करती थी। उसके कई बच्चे हुए और उसकी ज़ारिट्ज़ा बक्त्रियाना हमेशा ही बहुत सुन्दर रही।

5 पाताल की ज़ारेवनाज़[38]

एक बार की बात है कि रूस में एक जगह एक पति पत्नी रहते थे। उनके तीन बेटे थे। उनके तीनों बेटे बड़े हो रहे थे सो उन पति पत्नी ने सोचा कि अब घर में कुछ पोते पोतियॉ खेलने चाहिये।

सो उन्होंने अपने सबसे बड़े बेटे ग्रिगोरी[39] को बुलाया और उससे कहा कि वह बाहर जाये और अपने लिये एक पत्नी ढूँढे। ग्रिगोरी घर पर ही बहुत खुश था वह शादी भी नहीं करना चाहता था पर उन दिनों बच्चे वही करते थे जो उनसे करने को कहा जाता था।

सो ग्रिगोरी बाहर अपनी पत्नी ढूँढने चल दिया पर उसने उसे ढूँढने में बहुत मेहनत नहीं की। वह एक बहुत ही शरमीला लड़का था सो वह सारे शहर में एक तरफ से गया और यह सोचते हुए दूसरी तरफ से निकल आया कि उसको किसी ने देखा नहीं।

जब वह पुराने शहर के फाटक से निकल रहा था तो कुछ हॅसती हुई लड़कियॉ उसके पास से निकल गयीं। उसने उनको यह दिखाने की बहुत कोशिश की कि उसका उनसे कोई वास्ता नहीं था। जब वे वहॉ से चली गयीं वह वहॉ से भाग लिया।

---

[38] The Tzarevnas of the Underground Kingdom – a folktale from Russia, Asia.
Taken from the Web Site : http://www.oldrussia.net/copper.html .
Tzarevna means “Princess”

[39] Gregory – name of the eldest son of the old couple

शहर से बाहर निकल कर वह एक ऐसी सड़क पर आ गया जहॉ दूर दूर तक कोई दिखायी नहीं दे रहा था। वहॉ आ कर उसको एक बहुत ही डरावना ड्रैगन[40] मिल गया।

तो डर के मारे वह दूसरी तरफ भागने लगा पर ड्रैगन भी उसके सामने आ कर खड़ा हो गया और उससे बड़ी नम्र आवाज में बोला — "तुम मुझसे डरो नहीं मैं तुमको कोई नुकसान नहीं पहुॅचाऊॅगा। क्या मैं जान सकता हूॅ कि तुम कहॉ जा रहे हो?"

कुछ पल तो ग्रिगोरी कुछ बोल नहीं सका पर कुछ देर बाद हकलाते हुए बोला — "ओह नहीं नहीं। मैं अपने घर वापस जा रहा हूॅ। मेरे माता पिता मेरी शादी करना चाहते हैं। पर मुझे कोई ठीक सी लड़की ही नहीं मिल रही है।"

ड्रैगन बोला — "तुम मेरे साथ आओ। मैं तुम्हारा इम्तिहान लेता हूॅ। अगर तुम उस इम्तिहान में पास हो गये तो तुमको पत्नी मिल जायेगी।"

क्योंकि वह ड्रैगन बहुत ही नम्रता से बोल रहा था इसलिये ग्रिगोरी को लगा कि विचार बुरा तो नहीं है सो वह इम्तिहान देने के लिये उसके साथ चल दिया।

चलते चलते वे दोनों एक काले संगमरमर की बड़ी सी चट्टान के पास आ पहुॅचे। ड्रैगन बोला — "अगर तुम इस चट्टान को हटा पाओगे तो तुमको वह मिल जायेगा जो तुम ढूॅढ रहे हो।"

[40] Dragon

ग्रिगोरी को वह पत्थर बिल्कुल भी भारी नहीं लग रहा था बल्कि उसको देख कर तो वह अपने आपको बहुत ही ताकतवर महसूस कर रहा था। सो उसने यह बोलते हुए पत्थर हटाना शुरू किया — "ओह इस पत्थर को तो मैं चुटकियों में हटा दूँगा।"

कह कर उसने पत्थर को पहले खींचा फिर उसको धक्का दिया पर वह पत्थर तो हिल कर ही न दिया। यह देख कर वह ड्रैगन से बोला — "चिन्ता न करो। मुझे लग रहा है कि शायद मैं इसको गलत तरीके से हटाने की कोशिश कर रहा हूँ। शायद इसको एक तरफ को धक्का देना पड़ेगा।"

उसने फिर ऐसा ही किया। पत्थर को धक्का लगाते लगाते वह हॉफने लगा, उसकी सॉस तेज़ हो गयी, उसके सिर में हथौड़े बजने लगे, उसका पसीना छूट गया और वह तो बस बिल्कुल बेहोश होने वाला ही हो गया।

यह देख कर ड्रैगन बोला — "अफसोस तुम तो इस इम्तिहान में ही फेल हो गये। तुमको अब पत्नी नहीं मिलने वाली।"

ग्रिगोरी को यह देख कर थोड़ा बुरा लगा कि वह इम्तिहान में फेल हो गया पर दूसरी तरफ यह सोच कर वह खुश भी हुआ कि अब उसको शादी नहीं करने पड़ेगी। यही सब सोचता हुआ वह अपने घर वापस आ गया।

घर आ कर उसने अपने माता पिता को बताया कि उसके साथ उस दिन क्या हुआ था। उसके माता पिता बहुत ही दुखी हुए पर उन्होंने यह ग्रिगोरी से कहा नहीं।

कुछ दिन बाद उन्होंने अपने दूसरे बेटे मीशा[41] को बाहर भेजने का इरादा किया कि वह भी बाहर जाये और अपने लिये एक पत्नी ढूँढ कर लाये।

मीशा भी वैसा ही महसूस करता था जैसा ग्रिगोरी महसूस करता था। उसको भी घर में बैठे रहना बहुत अच्छा लगता था और ज़िन्दगी को आसान तरीके से जीना अच्छा लगता था। पर उसको भी मालूम था कि उसको भी जाना पड़ेगा।

उसके साथ भी वही हुआ जो ग्रिगोरी के साथ हुआ था। उसको भी सड़क पर वही ड्रैगन मिला जो ग्रिगोरी को मिला था, या फिर शायद दूसरा भी हो सकता था, पर कुछ भी हो उसने भी मीशा से यही कहा कि वह उसका एक इम्तिहान लेगा और अगर वह उसमें पास हो गया तो समझो कि उसको उसकी पत्नी मिल गयी।

पर वह भी रोता हुआ घर वापस आया और रोते हुए अपने माता पिता को बताया कि वह भी वह पत्थर नहीं हटा सका।

माता पिता के मुँह से निकला — "ओह बेचारा मीशा। हम जानते है कि तुमने उस पत्थर को हटाने में अपनी पूरी कोशिश लगा दी होगी। पर खैर अब क्या हो सकता है।"

---

[41] Misha – name of the second son of the couple.

हालॉकि वे इस बात से पहले की तरह फिर से बहुत ही दुखी हुए फिर भी उन्होंने अपने इस दुख को छिपा कर ही रखा। पर रात को जब उनके बच्चे सो गये तो दोनों इस बारे में बात करने लगे कि अब क्या करना चाहिये।

पिता बोला — "यह सब देख कर अब हम इवान[42] को तो उसकी पत्नी ढूँढने के लिये बाहर नहीं भेज सकते क्योंकि वह तो कोई काम ठीक से करता ही नहीं है। वह तो सारा दिन बस अंगीठी के पास बैठा बैठा सूरजमुखी के फूल के बीज खाता रहता है।

इसके अलावा उसको बाहर भेजना खतरे वाला काम भी तो हो सकता है। क्या पता वह ड्रैगन उससे गुस्सा हो जाये और वह उसको मार दे।"

इसलिये इवान को बाहर नहीं भेजा गया जो इवान को बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगा। उसने अपने माता पिता की बहुत मिन्नतें कीं और उनको बाहर जाने के लिये मना ही लिया सो उनको उसको भी अपनी पत्नी ढूँढने के लिये बाहर भेजना ही पड़ा।

पर अगली सुबह उन्होंने फिर अपना विचार बदल दिया। पर इस बात के लिये अब काफी देर हो चुकी थी क्योंकि इवान तो सुबह ही घर छोड़ कर अपनी यात्रा पर निकल गया था।

उसको भी सड़क पर ड्रैगन मिला। उसने उससे भी पूछा — "तुम कहॉ जा रहे हो?"

[42] Ivan – name of the third and the youngest son of the couple.

इवान बोला — "मेरे भाई शादी करना चाहते थे पर उनको तो पत्नी मिली नहीं अब मेरी बारी है।"

उस ड्रैगन ने अपनी भौंहें उठा कर उससे पूछा — "क्या तुम सचमुच में शादी करना चाहते हो?"

इवान बोला — "क्यों नहीं।"

"तो तुम्हें एक इम्तिहान पास करना पड़ेगा।"

"ठीक है।"

"पर क्या तुम सचमुच में इम्तिहान पास करना चाहते हो? तुम्हें मालूम है कि तुम्हारे भाई तो उस इम्तिहान में फेल हो चुके हैं?"

"पर मैं उस इम्तिहान को पास करना चाहता हूँ।"

"तो फिर आओ मेरे साथ।"

दोनों उसी काले संगमरमर की चट्टान के पास आ पहुँचे जहाँ वह ड्रैगन पहले उसके दोनों भाइयों को ले कर आया था। ड्रैगन ने उससे भी उस चट्टान को वहाँ से हटाने के लिये कहा।

इवान ने उस चट्टान में एक ज़ोर की ठोकर मारते हुए कहा — "तुम्हारा मतलब इस चट्टान से है?"

"हाँ तुमने ठीक समझा मेरा मतलब इसी चट्टान से था।"

इवान चट्टान हटाते हुए बोला — "पर मेरे भाई लोग इसको क्यों नहीं हटा सके।" इवान ने देखा कि उस चट्टान के नीचे तो एक गहरी दरार खुली हुई थी।

ड्रैगन बोला — "शायद वे इसको हटाने के लिये काफी ताकत का इस्तेमाल कर रहे थे।"

"देखता हूँ यह कितनी गहरी होगी।" कह कर इवान नीचे जमीन पर झुक कर उसके अन्दर झाँकने लगा। उसने देखा कि उसमें तो बहुत अँधेरा है और वह तो काफी गहरी चली गयी है। क्योंकि उसके अन्दर तो एक खोखली नली चली गयी थी और नीचे जा कर तो वह दिखायी भी नहीं दे रही थी।

यह देख कर इवान काँप गया और एकदम से पीछे हट गया।

उसने ड्रैगन से पूछा — "इसमें अन्दर क्या है?"

"क्या? इसके नीचे? इसके नीचे तो पाताल[43] है और क्या है?"

"मैंने तो इसके बारे में कभी नहीं सुना। क्या है यह?"

"अरे तुमको नहीं पता। दूसरे राज्यों की तरह से वहाँ भी राज्य हैं जैसे "ताँबे का राज्य", "चाँदी का राज्य" और "सोने का राज्य"[44] और हर राज्य में एक एक ज़ारेवना[45] है।"

इवान बोला — "अरे यह तो बहुत अच्छा है। सो जब मैं यह इम्तिहान पास कर लूँगा तो वह लड़की मुझे कहाँ मिलेगी जिससे मुझे शादी करनी है।"

"वह लड़की तुम्हें नीचे मिलेगी। तुम कम से कम एक ज़ारेवना से शादी कर लो।"

---

[43] Translated for the word "Underworld".

[44] Copper Kingdom, Silver Kingdom, Golden Kingdom

[45] Tzarevna – Princess – daughter of the Tzar

"क्या उनमें से एक से शादी? नहीं नहीं कभी नहीं। बहुत बहुत धन्यवाद। मैं पाताल के राज्यों में नहीं जा रहा। मुझे तो वहॉ लोग मार देंगे।"

अचानक ड्रैगन ज़ोर से चिल्लाया — "पर इवान तुम इसी लिये तो यहॉ हो कि तुमको उन्हें आजाद कराना है। वे सब वहॉ पर कैद हैं।"

ड्रैगन की भयानकता को देख कर तो इवान इतना घबरा गया कि वह तो बस यही सोचता रह गया कि किसी तरह से वह सुरक्षित घर पहुॅच जाये।

वह बुड़बुड़ाया — "पहले मैं इसके बारे में सोच लूॅ।"

यह सोचते हुए कि थोड़ी देर में ही ड्रैगन थक जायेगा और वहॉ से चला जायेगा वह वही खड़ा खड़ा उस दरार में से उस खोखली नली को देखता रहा।

उसने देखा कि उस दरार में उस खोखली नली में हो कर चमड़े की एक कुरसी दो रस्सियों के सहारे नीचे की तरफ लटक रही थी। उसके मुॅह से निकला — "अरे यह क्या है?"

ड्रैगन बोला — "तुम इस चमड़े की कुरसी में बैठ जाओ और मैं तुमको नीचे उतार दूॅगा। अगर तुमको वहॉ देखने में अच्छा न लगे तो तुम अपनी रस्सी दो बार खींच देना मैं तुमको वापस ऊपर खींच लूॅगा।"

अब तक इस पाताल के बारे में इवान की उत्सुकता काफी जाग चुकी थी सो उसने सोचा कि क्यों न एक बार वहॉ जा कर देखा जाये कि वहॉ क्या है।

सो वह ड्रैगन से बोला — "पर अगर में यह रस्सी दो बार खींचूँ तो तुम मुझको तुरन्त ही ऊपर खींच लेना। ठीक है?"

ड्रैगन ने इवान से वायदा किया कि जैसे ही वह वह रस्सी दो बार खींचेगा तो वह उसको ऊपर खींच लेगा। इवान उस चमड़े की कुरसी में बैठ गया और ड्रैगन ने वह कुरसी नीचे उतार दी।

इवान उस कुरसी में बैठा झूलता हुआ उस खोखली नली के सहारे अँधेरे में नीचे चला जा रहा था। वह सोच रहा था कि वह अँधेरा कभी खत्म होने पर भी आयेगा भी या नहीं।

नीचे जाते जाते इवान ने आखिरी बार रोशनी के लिये ऊपर देखा यानी रूस का आसमान देखा और फिर सोचा कि पता नहीं अब वह आसमान फिर कभी देखेगा या नहीं।

उस खोखली नली में अब सब कुछ बिल्कुल शान्त हो गया था। उसकी दीवारों में लगे क्रिस्टल चमक रहे थे पर उनसे वहॉ कोई रोशनी नहीं हो रही थी।

उसने चिल्ला कर ड्रैगन से अपने आपको वापस खींच लेने के लिये आवाज लगायी पर वहॉ तो कुछ भी नहीं हुआ। वह तो यह बिल्कुल ही भूल गया था कि अपने आपको ऊपर खींचने के लिये उसको चिल्लाना नहीं था बल्कि रस्सी को दो बार खींचना था।

उसकी अपनी ही आवाज की गूँज उसको सुनायी दी तो वह और डर गया। उसकी कुरसी भी बहुत ज़ोर ज़ोर से हिलने लगी। वह अगर उस कुरसी में ज़रा सा भी हिलता तो उस खोखली नली की दीवार से टकरा जाता।

मिट्टी के ढेले और पत्थर के टुकड़े नीचे गिरने लगते। उसने उनके नीचे गिरने की आवाज सुननी चाही भी पर उसे कुछ सुनायी ही नहीं दिया।

सो जब उसकी कुरसी झूलती हुई उस खोखली नली से हो कर नीचे जा रही थी उसके मन में एक अजीब सा विचार आया कि यह तो एक जाल भी हो सकता है और वह ड्रैगन तो मुझे कभी भी नीचे गिरा सकता है।

और यह विचार आते ही उसने अपनी ऑखें बन्द कर लीं अपना चेहरा अपनी बॉहों से ढक लिया और यह सोचना शुरू कर दिया जैसे कि वह अपने घर में अपने बिस्तर पर लेटा हुआ है।

हालॉकि इससे उसका कुछ खास काम नहीं बना पर फिर भी वह कुछ शान्ति महसूस करने लगा। वह सोच रहा था कि पता नहीं ड्रैगन अभी भी उसकी कुरसी की रस्सी पकड़े वहॉ खड़ा होगा या नहीं। फिर उसने सोचा "जरूर खड़ा होगा क्योंकि नहीं तो वह तो इससे भी कहीं और ज़्यादा तेज़ी से नीचे जा रहा होता।"

जल्दी ही अब उसको सॉस लेने में भी परेशानी होने लगी। उसकी पलकें भारी होने लगी थीं। "मुझे जागते रहना चाहिये। कहीं ऐसा न हो कि इस गड्ढे का कहीं कोई अन्त ही न हो।"

धीरे धीरे वह बेहोश सा होने लगा।

जब वह कुछ होश में आया तो उसने धुँधलके में देखा कि वह ठंडे पत्थरों के ऊपर लेटा हुआ है और उस खोखली नली से हरे रंग की रोशनी निकल रही है।

उसने देखा कि वह अभी भी उसी चमड़े की कुरसी में बैठा हुआ है। उसने उस कुरसी की चमड़े की पट्टियॉ खोल दीं। अब वह थोड़ा आराम से सॉस ले पा रहा था या हो सकता है कि ऐसा उसको इसलिये महसूस हो रहा हो कि वह अब इस माहौल का आदी हो चुका था।

इवान तॉबे के राज्य में

इवान ने अपना चारों तरफ देखा कि वह वह रास्ता ढूँढ सके जहॉ से वह पाताल में पहुँच पायेगा। जब उसकी ऑखें धुँधलके में देखने की आदी हो गयीं तो उसको उस खोखली नली से निकलते हुए कई रास्ते दिखायी दिये।

उनमें से एक रास्ते के आखीर पर उसको लाल से रंग की रोशनी चमकती दिखायी दी। वह उसी चमकती हुई रोशनी की तरफ चल दिया। जब वह उसके पास पहुँचा तो उसने देखा कि वह

रोशनी तो तॉबे के रंग की थी। कुछ ही देर में वह रास्ता बन्द हो गया और वह बाहर खड़ा नजर आया।

बाहर निकल कर उसने देखा कि वह तो समुद्र के किनारे एक तॉबे के जंगल में चल रहा था। उसने ऊपर आसमान की तरफ देखा पर उसको सूरज कहीं दिखायी नहीं दिया। केवल भारी भारी बादल ही हल्की हवा में लटके हुए थे और पेड़ों के ऊपर कोहरा छाया हुआ था।

जब वह उस तॉबे के जंगल से बाहर निकला तो उसके सामने तॉबे का बना एक महल खड़ा था। महल का दरवाजा खुला और उसमें से एक बहुत ही सुन्दर ज़ारेवना सीढ़ियॉ उतर कर उसके सामने आयी।

ऐसा लगता था जैसे कि उस राज्य में हर चीज़ तॉबे की बनी हुई थी। यहॉ तक कि ज़ारेवना जो कपड़े पहने हुई थी वे कपड़े भी बहुत ही पतले तॉबे के बने हुए थे और जब वह उसके पास आ रही थी तो बड़ी अजीब सी आवाज कर रहे थे। उसके लम्बे लम्बे बाल भी तॉबे के रंग के थे। उसने इवान का बहुत प्यार से स्वागत किया।

"आओ। इस तॉबे के राज्य में तुम्हारा स्वागत है। आओ महल में आओ और मुझे बताओ कि तुम कहॉ से आये हो और कहॉ जा रहे हो।"

इवान के कपड़े और उसके शरीर की खाल भी उसके तॉबे की रोशनी से तॉबे के रंग की हुई जा रही थी। वह उसकी चकाचौंध से कुछ बेहोश सा होता हुआ उसके सामने काफी नीचे तक झुक कर बोला — "प्रिय राजकुमारी जी आप मुझसे कई सवाल पूछ रही हैं और आपने मुझे अभी तक कुछ खाने पीने के लिये दिया नहीं है।"

यह सुन कर वह तुरन्त ही अन्दर गयी और इवान के लिये कुछ खाने और कुछ पीने के लिये ले आयी। हालॉकि वहॉ का वह तॉबे के रंग का खाना देखने में बड़ा अजीब सा था पर उसने जितने खाने अब तक खाये थे उन सबमें वह सबसे ज़्यादा स्वादिष्ट था।

उसने सोचा शायद उसके ऊपर जो तॉबे के रंग की रोशनी पड़ रही थी इसी लिये वह उसको ऐसा लग रहा होगा।

लगता है जैसे कि उस ज़ारेवना ने इवान के मन की बात पढ़ ली हो सो वह मुस्कुरा कर बोली — "ऐसा मत सोचना कि यह सब तॉबे के रंग की रोशनी की करामात है। बहुत सारे लोगों ने यह गलती की है और हमारे पानी में तैरने की भी गलती की है।

यह विचार ठीक नहीं है। इस राज्य में हर चीज़ तॉबे की बनी हुई है। यहॉ तक कि अब तो तुम भी तॉबे के बने हुए हो गये हैं।"

यह सुन कर इवान ने अपना चेहरा छू कर देखा तो कॉप गया। वह ठीक कह रही थी। उसकी खाल सख्त और ठंडी हो गयी थी।

"पर मैं धातु का आदमी नहीं बनना चाहता।"

जैसे ही वह यह बोला उसको लगा कि उसकी आवाज भी धातु की आवाज जैसी हो गयी है।

वह हॅस कर बोली — "पर अब तो तुम वैसे ही बन गये हो।"

अचानक ज़ारेवना को लगा कि इवान को धातु का बनने में अच्छा नहीं लग रहा है सो वह फिर बोली — "तुम चिन्ता मत करो इवान। यह बदलाव तो केवल उसी समय के लिये है जब तक तुम यहॉ हो बाद में यह सब खत्म हो जायेगा। यह सब तो जादू का कमाल है।

जब हम लोग ऊपर की दुनियॉ में चले जाते हैं तो हम लोग भी सामान्य लोगों की तरह ही हो जाते हैं। इसलिये अब तुम यहॉ आराम से बैठो और मुझे अपने बारे में कुछ बताओ। अगर तुम मुझे यहॉ से आजाद कराने आये हो तो मेरा यह जानना बहुत जरूरी है।"

इवान ने पूछा — "आप यहॉ कबसे रहती हैं।"

राजकुमारी ने कुछ दुखी होते हुए कहा — "मुझे किसी और जगह की याद ही नहीं है। मुझे केवल सूरज और चॉद नाम की चीज़ों की भी बहुत धुँधली सी याद है। पर यह भी अब बहुत पुरानी बात हो गयी।"

तब इवान ने ज़ारेवना को अपने बारे में और ड्रैगन के मिलने के बारे में सब कुछ बताया। उसने उसको यह भी बताया कि वह

अपने लिये एक पत्नी ढूँढने निकला था। उसको बहुत खुशी होगी अगर वह उससे शादी कर लेगी।

राजकुमारी ने जवाब दिया — "नहीं। यह नहीं हो सकता इवान क्योंकि मैं यह जगह तभी छोड़ सकती हूँ जबकि पहले सुनहरी ज़ारेवना यहाँ से आजाद हो जाये।

उसके लिये तुम पहले समुद्र के किनारे वाले जंगल में से जाओ और फिर अँधेरी सुरंग में से हो कर जाओ तो तुम चाँदी के राज्य में पहुँच जाओगे। वहाँ तुमको एक और ज़ारेवना मिलेगी जो मुझसे भी ज़्यादा सुन्दर होगी।"

सो इवान उसे वही छोड़ कर चाँदी के राज्य में जाने के लिये तैयार हुआ। उसके जाने से पहले इस ताँबे के राज्य वाली ज़ारेवना ने उसको उसकी रक्षा के लिये एक ताँबे की अंगूठी दी।

इवान ने उसको इसके लिये धन्यवाद दिया और वहाँ से चल दिया।

इवान चाँदी के राज्य में

इवान सुरंग में चलता रहा तो उसको उस सुरंग के आखीर में एक सफेद रोशनी चमकती दिखायी दी। जैसे जैसे वह उस रोशनी के पास आता गया उस रोशनी की चमक तेज़ और और तेज़ होती गयी। जल्दी ही वह एक बड़ी सी गुफा में खड़ा हुआ था।

उसकी तो छत ही बहुत ऊँची दिखायी देती थी जैसे वह मीलों ऊपर तक हो। उस गुफा की छत से चाँदनी की एक चमकीली किरण सफेद बिर्च के जंगल[46] के ऊपर पड़ रही थी। चाँदी जैसे सफेद समुद्र के किनारे पर एक महल खड़ा था।

गुफा के फर्श पर चाँदी का मुलायम रेत बिखरा पड़ा था। उसकी छत से चमकते हुए पत्थर लटके थे जिनसे रोशनी हो रही थी। आवाजों में वहाँ केवल हवा की और समुद्र के किनारे पर उसकी लहरों के टकराने की ही आवाज हो रही थी।

समुद्र के किनारे एक ज़ारेवना अपनी घोड़ी पर सवार हुई घूम रही थी। इवान को देख कर वह उसकी तरफ घूमी तो घोड़े की कुदान से समुद्र का ठंडा पानी जो इधर उधर बिखरा तो इवान काँप गया।

वह अपने घोड़े की रास पकड़ कर घोड़े को सीधे उसके सामने ले आयी। अपने चेहरे से अपने चाँदी के बाल हटाते हुए वह बोली — "इस चाँदी के राज्य में तुम्हारा स्वागत है।"

इवान ने सोचा कि जैसे पहले वाली ज़ारेवना ताँबे की बनी थी शायद यह ज़ारेवना चाँदी की बनी हुई होगी। उसने उसको बहुत

[46] Translated for the words "Silver Birch" tree – see its picture above.

नीचे तक झुक कर नमस्ते की। उसने भी इवान से पूछा कि वह कहॉ से आया था और कहॉ जा रहा था।

थोड़ा रुक कर वह बोला — "प्रिय राजकुमारी, तुम्हारे सवालों के जवाब देने से पहले मुझे कुछ खाना और पीना चाहिये।"

वह उसको महल के अन्दर ले गयी और उसको कुछ खाने के लिये और शराब पीने के लिये दी। वहॉ खाना चॉदी की तरह सफेद था और शराब भी बिल्कुल चमकती हुई सफेद थी।

जब वह खा रहा था तो उसने अपने हाथों की तरफ देखा। उसने देखा कि उसका तॉबे जैसा रंग तो बिल्कुल ही चला गया था और अब उस रंग की जगह चॉदी का रंग लेने लगा था।

उसने अपने बालों में अपनी उॅगलियॉ फिरायीं तो उनमें भी उसको कुछ अजीब सी आवाज सुनायी दी। उसने सोचा "उम्मीद है कि यह सब भी बहुत देर तक नहीं रहेगा।

जब वह खा चुका तो ज़ारेवना से बोला कि वह एक पत्नी की तलाश में था। क्या वह उससे शादी करना पसन्द करेगी।

वह बोली — "अफसोस ऐसा नहीं हो सकता। तुमको इस अॅधेरी सुरंग से जाना पड़ेगा जब तक कि तुम सोने के राज्य में न पहुॅच जाओ। वहॉ एक और ज़ारेवना तुम्हारा इन्तजार कर रही है। पहले तुम्हें उसे आजाद कराना पड़ेगा।"

उसने भी उसको एक चॉदी की अॅगूठी दी और कहा — "लो यह चॉदी की अॅगूठी लो और देखो इसे हमेशा पहने रहना। यह तुम्हारी यात्रा में तुम्हारी रक्षा करेगी।"

इवान ने उससे वह चॉदी की अॅगूठी ली उसको धन्यवाद दिया और अपनी आगे की यात्रा पर आगे बढ़ गया।

इवान सोने के राज्य में

उस अॅधेरी सुरंग में कुछ दूर चलने के बाद इवान को उसके आखिरी हिस्से पर एक सुनहरी रोशनी दिखायी दी। पहले की तरह से जब वह उस सुरंग के आखीर में पहुॅचा तो यह गुफा तो पहली दो गुफाओं से भी बहुत बड़ी थी।

ज़ार के इस राज्य में तो हर चीज़ सोने में नहायी जैसी लग रही थी। एक पल को तो उसको लगा कि वह सूरज देख रहा है पर जब उसने ऊपर देखा तो उसको इस रोशनी में थोड़ी गरमी तो लगी पर बाहर की दुनियॉ में उसे सूरज कहीं दिखायी नहीं दिया।

पर जब उसने बाद में उसके बारे में सोचा तो उसने देखा कि वह तो पानी के ऊपर धूप की चमक पड़ रही थी। उस रोशनी में तो उसकी अपनी खाल और कपड़े भी सुनहरे लग रहे थे। उस सोने के राज्य में सारी चीज़ें असली सोने की थीं।

ज़ारेवना भी अपने महल के सामने सुनहरी रेत पर खड़ी हुई थी। वह इवान को देख कर बहुत खुश हुई और उसने इवान के सामने सुनहरी खाना और सुनहरे रंग की चमकती शराब रखी।

इवान ने उसको बताया कि वह अपने घर से अपनी पत्नी ढूँढने निकला था। फिर उसने उससे कहा — "अगर तुम मेरी पत्नी बनना चाहती हो तो अभी मेरे साथ चलो।"

यह सुन कर उसको बड़ा आश्चर्य हुआ जब राजकुमारी ने उसे मुस्कुरा कर जवाब दिया — "हॉ मैं तुमसे शादी करूँगी। पर पहले तुम यह सोने की अँगूठी लो और देखो तुम इसको ताँबे की और चाँदी की अँगूठियों के साथ साथ हमेशा पहने रहना। यह तुम्हारी हमेशा रक्षा करेगी। अब हम चलते हैं और अपनी बहिनों को आजाद कराते हैं।"

कह कर वे उसी अँधेरी सुरंग से वापस चल दिये। वे चाँदी के राज्य से गुजरे। वहाँ चाँदी के राज्य वाली ज़ारेवना ने उनका बड़े ज़ोर शोर से स्वागत किया और वह भी उनके साथ चल दी। फिर वे ताँबे के राज्य में आये जहाँ से पहली ज़ारेवना भी उनके साथ हो ली।

उसके बाद वे उस जगह आये जहाँ इवान ऊपर से उस खोखली नली से नीचे उतरा था। उसमें चमड़े की कुरसी अभी भी लटकी हुई थी पर उस खोखली नली का अन्त उसे कहीं दिखायी नहीं दे रहा था।

उसको पता ही नहीं था कि उसके दोनों भाई वहॉ खड़े हुए थे। असल में जब इवान कई दिनों तक नहीं लौटा तो उसके माता पिता ने उनको इवान को ढूँढ लाने के लिये भेजा था।

उन्होंने अन्दाज लगाया कि वह शायद यहीं नीचे होगा सो वे वहॉ घंटों खड़े खड़े इस बात की हिम्मत बटोर रहे थे कि वे वहॉ नीचे कैसे उतरें।

बाद में जब उनकी हिम्मत नहीं पड़ी तो उन्होंने एक दूसरे को यह कह कर बहला लिया कि शायद इवान मर गया।

वे लोग वहॉ से जाने ही वाले थे कि तॉबे के राज्य वाली ज़ारेवना उस चमड़े की कुरसी में चढ़ गयी और उसकी रस्सी को एक हल्का सा झटका दिया।

इवान के भाइयों ने रस्सी हिलती देखी तो उनको लगा कि कोई उनसे नीचे से कुछ कहना चाहता है सो उन्होंने वह रस्सी खींचनी शुरू कर दी।

जब वह चमड़े की कुरसी ऊपर आयी तो उसमें तो तॉबे के राज्य की ज़ारेवना बैठी हुई थी। ऊपर आ कर उसने वह कुरसी फिर से नीचे भेज दी। इस बार चॉदी के राज्य की ज़ारेवना ऊपर आयी और फिर सोने के राज्य की ज़ारेवना ऊपर आयी।

आखीर में इवान उस चमड़े की कुरसी में बैठा। उसके भाइयों ने उसे खींचा पर अब तक वे उस रस्सी को खींचते खींचते थक चुके थे सो वे बहुत धीरे धीरे रस्सी खींच रहे थे।

पर जब उनको यह पता चला कि उस कुरसी में इवान था तो उनको उससे जलन होने लगी कि इवान वहॉ सफल हो गया था जहॉ वे बुरी तरह फेल हो गये थे।

ग्रिगोरी बोला कि "हम उसकी सहायता क्यों करें।"

मीशा भी बोला "इस तरह से तो सारे गॉव में लोग हमारी हॅसी उड़ायेंगे और हम बदनाम हो जायेंगे।"

सो जब तक इवान आधे रास्ते तक भी नहीं आया था कि उसके आने से पहले ही ग्रिगोरी नीचे झुका और इससे पहले कि ज़ारेवनाऐं उसे रोक सकतीं उसने उस चमड़े की कुरसी की रस्सी काट दी।

तीनों ज़ारेवनाऐं इवान के लिये बहुत ज़ोर ज़ोर से रो पड़ीं। उन्होंने इवान के भाइयों से बहुत प्रार्थना की कि वे उसको बचा लें पर वे तो उसकी सुनने वाले थे नहीं।

ज़ारेवनाऐं तो बस अब इसी से सन्तुष्ट थीं कि इवान उनकी दी हुई ॲगूठियॉ अभी तक पहने था।

इवान का पाताल से बाहर निकलना

उधर रस्सी के कटते ही इवान उस ॲधेरे खोखली नली में नीचे गिर पड़ा। वह दो दिन तक तो वहॉ से हिल भी नहीं सका। जब वह हिलने डुलने लायक हो गया तो वह बहुत ही नाउम्मीद सा बैठ गया कि अब वह बाहर जाने का रास्ता कैसे पायेगा।

उसकी ऑखों में ऑसू आ गये। वह यही समझ नहीं पा रहा था कि वह वहॉ से बाहर जाने के लिये किससे पूछे और अब कौन सी सुरंग ले। फिर यह सोच कर उसने एक दूसरी ही सुरंग ली कि शायद यही सुरंग उसको वहॉ से बाहर ले जायेगी।

वह सुरंग धीरे धीरे नीची होती जा रही थी। कहीं कहीं तो उस सुरंग की छत इतनी नीची थी कि उसको बहुत झुक कर चलना पड़ रहा था और कभी कभी तो उसको पत्थरों पर घुटनों के बल भी चलना पड़ रहा था।

कुछ देर इस तरह चलने के बाद इवान को लगा कि वह सुरंग कुछ चौड़ी और ऊॅची हो गयी है। जल्दी ही वह एक बहुत ही बड़ी गुफा में खड़ा था। यह गुफा तो उसको किसी दूसरी दुनियॉ का ही हिस्सा लग रही थी।

हालॉकि वहा काफी अॅधेरा था पर फिर भी वह वहॉ ठीक से देख पा रहा था। वहॉ आसमान में बादल बहुत नीचे थे सो वह यह नहीं जान सका कि उस राज्य के आसमान में चॉद या तारे थे या नहीं।

वह वहॉ एक जंगल में दलदल के किनारे खड़ा था। सीलन की गन्ध चारों तरफ उड़ रही थी, हवा ठंडी थी सो वह इधर उधर किसी ऐसी गरम जगह की तलाश में था जहॉ वह उस ठंड से बच सके। सारे में वहॉ कई रंगों के और कई शक्लों के मुशरूम उगे हुए थे।

सुबह होने के कुछ देर बाद ही इवान को एक बहुत ही छोटा सा बूढ़ा मिला। उसकी बहुत लम्बी सफेद दाढ़ी थी और वह एक पेड़ की अजीब सी शक्ल की जड़ पर बैठा हुआ था।

उसने उस बूढ़े को अपनी सारी कहानी बतायी और पूछा कि वह कैसे मॉ रूस की नम जमीन पर वापस जा सकता है। उस बूढ़े ने अपनी एक उँगली से पास में लगे ओक के पेड़ों के एक झुंड की तरफ इशारा किया और बोला — "क्या तुम उन ओक के पेड़ों के पीछे खड़ी गोल मीनार देख रहे हो?"

इवान ने उधर देखा जिधर वह बूढ़ा इशारा कर रहा था तो पेड़ों के पीछे उसको एक पतली सी मीनार का ऊपर का हिस्सा वहॉ से झॉकता हुआ दिखायी दे गया। वह बोला "हॉ। मुझे वह मीनार दिखायी दे रही है।"

बूढ़ा आगे बोला — "उस मीनार में एक बहुत ही लम्बा जादूगर[47] रहता है। वह इतना लम्बा है कि उसका सिर तो छत को छूता है। तुम वहॉ चले जाओ वह तुमको बतायेगा कि तुम वापस रूस कैसे पहुँच सकते हो।"

इवान ने उस बूढ़े को धन्यवाद दिया और उस लम्बी मीनार की तरफ चल दिया जिसमें वह लम्बा जादूगर रहता था। जब वह उस मीनार के पास पहुँचा तो उसको लगा कि जो कुछ वह सोच रहा था

[47] Translated for the word "Sorcerer".

वह वह नहीं था बल्कि वहॉ तो एक मुलायम सा धुऑ था जो उस मीनार की एक बहुत ही छोटी सी खिड़की से बाहर निकल रहा था।

वह मीनार के और पास गया और वहॉ जा कर उसका दरवाजा खोला तो चॉदी के जाले के कुछ टुकड़े उसके चेहरे पर आ कर पड़े। इससे उसको लगा कि जैसे वह मकड़ियों के हजारों जालों के बीच चल कर आ रहा हो।

उसने अपने चेहरे से जितने अच्छी तरह से वह साफ कर सकता था वे छोटे छोटे रेशमी जाले के टुकड़े साफ किये और अन्दर जाने से पहले उसने अपनी बहुत ज़ोर से आती हुई छींक को भी रोका जो उन जालों की वजह से उसको आने वाली थी।

खुशकिस्मती से दरवाजा बाहर की तरफ खुला वरना उसको उस मीनार में घुसने में भी बहुत मुश्किल होती। क्योंकि हालॉकि वह मीनार बहुत ऊॅची थी पर साथ में वह तंग भी बहुत थी। उसमें घुसने के लिये भी इवान को अपने आपको उसकी दीवार से सट कर ही उसके अन्दर घुसना पड़ा।

जैसे ही वह उस मीनार के अन्दर घुसा तो उसको वहॉ वह जादूगर खड़ा दिखायी दे गया।

उसके अन्दर वह लम्बा जादूगर खड़ा खड़ा अपनी चॉदी जैसी दाढ़ी के बालों को हाथीदॉत की कंघी से कंघी कर रहा था। उसके सिर के बाल उसकी दाढ़ी जितने ही लम्बे थे पर उसकी खोपड़ी पर गंजेपन का

एक चमकदार चकत्ता था। शायद यह चकत्ता वहॉ इसलिये था कि उस जगह वह उस मीनार की छत से छूता था।

उसने कत्थई रंग की एक थैले जैसी पोशाक पहन रखी थी जिस पर सारे में चॉदी के बाल लगे हुए थे।

जब उसने इवान को देखा तो उसने अपनी दाढ़ी के बालों में कंघी करना रोक दिया और कंघी को साफ करना शुरू कर दिया। इससे उसके बालों के कई सारे छोटे छोटे बादल खिड़की के बाहर उड़ गये। और बहुत सारे बाल उसके कमरे में भी इधर उधर उड़ने लगे।

कुछ बाल उसके चेहरे के चारों तरफ भी उड़ने लगे जिससे उसके चेहरे का काफी हिस्सा ढक गया। इससे इवान उसका पूरा चेहरा भी एक बार में नहीं देख सका।

इवान से बात करने से पहले जादूगर को अपना गला साफ करने में कई मिनट लग गये। तब कहीं जा कर वह इवान से बड़ी ऊॅची आवाज में बोला — "किसी ने रूसी हड्डियों को यहॉ आने के लिये नहीं कहा। वे तो यहॉ अपने आप ही आयी हैं।"

यह सुन कर इवान ने थोड़ा इन्तजार किया कि शायद वह जादूगर कुछ और बोले पर वह और कुछ भी नहीं बोला क्योंकि बदकिस्मती से उसके सिर के सामने जादूगर के बालों का एक बहुत बड़ा बादल आ गया था सो न तो वह कुछ देख ही सका और न ही कुछ बता सका कि वह जादूगर क्या सोच रहा था।

इवान ने उस जादूगर को हॅसाने की बहुत कोशिश की जैसे अपनी गरदन टेढ़ी करके और उसके चेहरे की तरफ देख कर वह बोला — "हॉ वे अपने आप ही आयी हैं।"

उस लम्बे जादूगर ने उसकी इस बात का कोई जवाब नहीं दिया और फिर से अपनी दाढ़ी में कंघी करने लग गया।

इवान आगे बोला — "ओ ताकतवर जादूगर। क्या तुम मुझे बता सकते हो कि मैं वापस अपनी मॉ रूस की नम जमीन पर कैसे पहुॅच सकता हू?"

पर वह जादूगर फिर से अपनी कंघी साफ करने लग गया। उसकी कंघी से निकले बालों का बादल काफी तो खिड़की से बाहर उड़ गया पर काफी फिर भी कमरे में भी उड़ता रहा।

कई मिनटों बाद उसने फिर अपना गला साफ किया और अपनी उसी ऊॅची आवाज में बोला — "मॉ रूस की नम जमीन पर पहुॅचने के लिये तुमको यहॉ से दॉयी तरफ करीब करीब तीस गहरी झील जाना चाहिये।

वहॉ दूर जा कर तुमको एक झोंपड़ी मिलेगी जो मुर्गे की टॉगों पर खड़ी होगी। उस झोंपड़ी में एक बूढ़ी जादूगरनी बाबा यागा रहती है।

उस झोंपड़ी में घुसने से पहले तुमको जादू के कुछ शब्द बोलने होंगे। इस बुढ़िया के पास एक गरुड़[48] चिड़ा है जो तुमको मॉ रूस की नम जमीन तक ले जा सकता है।"

इवान ने पूछा — "और वे जादू के शब्द क्या हैं?"

ऊपर से आवाज आयी — "तुमको पता चल जायेगा।"

और उस जादूगर ने फिर से अपना गला साफ करना शुरू कर दिया। उसको अपना गला साफ करते करते फिर मिनटों लग गये और इवान बड़ी उत्सुकता से उन जादू के शब्दों को सुनने का इन्तजार करता रहा।

उसको जादूगर के ये शब्द सुन कर बड़ी नाउम्मीदी हुई — "यहॉ बहुत ही खुश्की है।"

यह सुन कर तो इवान का अपना गला भी खुश्क होने लगा था। वह बोला "हॉ यह तो है।" और कुछ ताजा हवा लेने के लिये वह उस मीनार के बाहर निकल आया।

उसकी समझ में यही नहीं आया कि जादूगर के उन "जादू के शब्दों" से उसका क्या मतलब था। शायद उसको कुछ गलती लग गयी होगी क्योंकि वह यह सब कैसे जान सकता था।

फिर उसने सामने की तरफ देखा तो उसको सामने कुछ झीलें दिखायी दीं सो वह वहीं उनके आस पास चक्कर काटता रहा।

[48] Translated for the word "Eagle" – see its picture above.

उसको वहॉ उनके आस पास चक्कर काटते हुए और यह गिनते हुए कि वे वाकई में तीस झीलें थीं कई दिन बीत गये क्योंकि दूर उसको कई और भी झीलें दिखायी दे रही थीं।

उसको यह पता ही नहीं चल पा रहा था कि उसने उन झीलों को ठीक से गिन लिया था या नहीं।

पर हॉ उसको तीस झीलें गिनने के बाद जब तीसवीं झील के किनारे एक झोंपड़ी दिखायी दे गयी जो मुर्गे की टॉगों पर खड़ी थी तो उसको लगा कि उसने उन झीलों को ठीक ही गिना था।

जब वह उस झोंपड़ी के पास पहुॅचा तो उसने देखा कि वह झोंपड़ी तो घूमे जा रही है घूमे जा रही है। और वह तो बहुत तेज़ी से घूम रही है।

और वह केवल तेज़ी से घूम ही नहीं रही है बल्कि बहुत ज़ोर की चीं चीं की आवाज भी कर रही है। उस चीं चीं की आवाज से तो उसके कान ही फटे जा रहे थे।

उसके घूमने की आवाज और इस चीं की आवाज दोनों ने मिल कर तो उसका सिर बहुत भारी सा कर दिया।

फिर पता नहीं कहॉ से उसके दिमाग में वे जादू के शब्द आ गये जिनको उसे उस झोंपड़ी में घुसने से पहले बोलना था और उसने उनको गाना शुरू कर दिया —

ओ छोटी झोंपड़ी ओ छोटी झोंपड़ी तुम अपना दरवाजा मेरी तरफ करो
और मुझे अन्दर आने दो

अचानक घूमती हुई झोंपड़ी रुक गयी। उसकी आवाज भी धीरे धीरे कम होती गयी और वह एक लम्बी सी चीं की आवाज करके रुक गयी। उसकी टॉगें इतनी नीचे को झुक गयीं कि वह झोंपड़ी जमीन से आ कर लग गयी।

अब उसका दरवाजा इवान के सामने था। अचानक एक लम्बी सी उसॉस के साथ उस झोंपड़ी का दरवाजा खुला। इवान सोचने लगा "यह मैंने कैसे किया?" पर फिर उस झोंपड़ी में घुस गया।

अन्दर पहुॅच कर उसने देखा कि बाबा यागा अपनी पुराने ढंग की ईंटों की अॅगीठी पर लेटी हुई है। वह खर्राटे मार रही थी।

उसकी लम्बी नाक छत को छू रही है। पर फिर एक पल में ही उसने अपनी लम्बी नाक इवान की तरफ की और बोली — "मुझे यहॉ किसी रूसी हड्डी की खुशबू आ रही है। तुम यहॉ क्या कर रहे हो?"

इवान ने डर से कॉपते हुए इधर उधर देखा कि वह यह किससे पूछ रही थी। फिर यह समझते हुए कि वह यह उसी से कह रही थी वह हकलाते हुए बोला — "लम्बे जादूगर ने मुझे आपके पास इसलिये भेजा है ताकि मैं आपके गरुड़ पर सवार हो कर अपनी मॉ रूस की नम जमीन पर जा सकूॅ।"

बाबा यागा वहीं से चिल्लायी — "ओ रूसी हड्डी। बाहर बागीचे में जाओ और वहॉ जा कर उस स्त्री को ढूॅढो जो सात दरवाजों की चौकीदार है।

उससे चाभी लो और उन सातों दरवाजों को खोलो। जब तुम आखिरी दरवाजा खोलोगे तो वह गरुड़ अपने पंख फड़फड़ायेगा। अगर तुम उससे डर नहीं गये तो तुम उसकी पीठ पर बैठ कर उड़ कर वहॉ जा सकते हो। और हॉ मेरे उस पालतू चिड़े के लिये काफी सारा मॉस ले जाना मत भूलना।"

इवान सोच रहा था "कौन सा बागीचा? यह किस बागीचे की बात कर रही है?" क्योंकि वह जानता था कि उसके घर के बाहर तो कोई बागीचा था ही नहीं वहॉ तो केवल जंगल था।

पर यही सोचते सोचते जब वह बाहर निकला तो यह देख कर उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा कि वहॉ से सारी झीलें गायब हो चुकी थीं और वहॉ अब एक बहुत सुन्दर बागीचा था और वह उसमें खड़ा था।

उस बागीचे के चारों तरफ एक बहुत पुरानी दीवार थी जिसमें सात ठोस ओक की लकड़ी के दरवाजे लगे थे। एक बहुत ही भयानक शक्ल वाली स्त्री उन सातों दरवाजों की चौकीदाारी कर रही थी।

हालॉकि उसका तो यह सब देख कर ही दिल डूबने लगा पर फिर उसने सोचा कि अगर मेंने बाबा यागा से बात कर ली और मुझे कुछ नहीं हुआ तो यह स्त्री उससे ज़्यादा बुरी तो नहीं हो सकती।

पर जब वह उसके कुछ फीट पास तक आ गया तो अचानक ही उसने एक बड़ी सी तलवार निकाल ली। उसकी ऑखों में

वहशीपना छा गया। यह देख कर इवान का तो जैसे खून ही जम गया।

वह वहीं से चिल्लाया — "बाबा यागा ने मुझसे तुमसे चाभी लेने के लिये कहा है।"

यह सुन कर उस स्त्री ने अपने हाथ से तलवार छोड़ दी और उसका स्वागत किया। वह उसके यात्रा के लिये कुछ खाना पीना और कुछ और सामान ले कर आयी।

इवान ने बाबा यागा का कहा माना सो वह निडर हो कर गरुड़ की पीठ पर बैठ गया और उससे जितना भी मॉस लिया जा सका उतना मॉस उसके लिये उसने ले लिया।

कुछ समय बाद इवान को भूख लगने लगी तो उसने सोचा कि "मैं उस मॉस में से थोड़ा सा मॉस खा लेता हूँ। हमारे पास तो हम दोनों के लिये जितना मॉस चाहिये उससे कहीं ज़्यादा मॉस है।"

सो उसने उसमें से थोड़ा सा मॉस खा लिया।

जब वे लोग कुछ देर तक उड़ चुके तो गरुड़ ने अपनी बटन जैसी पीली पीली ऑखें इवान की तरफ घुमायीं तो इवान ने उसको कॉपते हाथों से मॉस का एक टुकड़ा खिला दिया। गरुड़ ने भी उसे इवान के हाथों से छीन कर एक ही बार में खा लिया।

उस उड़ान के दौरान ऐसा कई बार हुआ कि जब भी गरुड़ ने उसकी तरफ देखा तभी उसने उसको मॉस खिलाया पर हर बार उसे

लगा कि वह गरुड़ तो अपनी तेज़ चोंच से उसका हाथ ही काट लेगा परन्तु ऐसा हुआ नहीं।

जल्दी ही सारा मॉस खत्म हो गया पर रास्ता तो अभी बाकी था। गरुड़ ने फिर इवान की तरफ देखना शुरू किया।

अब इवान को तो मालूम था कि उसके पास जितना मॉस था वह सब खत्म हो गया था सो वह उस पर चिल्लाया — "घूम कर देखो अब सारा मॉस खत्म हो गया। तुम्हारे लिये अब मेरे पास कुछ भी नहीं बचा।"

इस पर गरुड़ ने उसको अपनी तेज़ निगाहों से घूरा। इवान ने भी उसको घूरा पर उसका तो एक एक जोड़ कॉप रहा था।

इवान को लगा कि यह गरुड़ तो पता नहीं कब तक उसको इस तरह से घूरता रहेगा पर उसने देखा कि जल्दी ही उसने अपना मुँह फिरा लिया और इवान ने शान्ति की सॉस ली।

अचानक एक चीं की आवाज के साथ जिससे इवान का खून तो बस जम सा ही गया गरुड़ ने एक बार फिर अपना सिर घुमा कर इवान की तरफ देखा और उसकी गरदन से मॉस का एक टुकड़ा काट लिया।

इवान ने देखा कि वे उस समय एक खोखली नली में से ऊपर की तरफ उड़ रहे थे। इवान तो इस सबसे इतना डर गया और उसे इतना धक्का लगा कि उसे अपनी गरदन में से मॉस निकाले जाने का ज़रा भी दर्द महसूस नहीं हुआ।

अब उसको यह लगने लगा कि यह गरुड़ तो उसको टुकड़े टुकड़े करके खा जायेगा। सो उसने तय किया कि अबकी बार अगर उसने उसकी तरफ देखा तो वह उसके ऊपर से कूद नीचे पड़ेगा।

उसको सपने में लगा कि वे उस खोखली नली में से दूर बहुत दूर किसी रोशनी की तरफ उड़े जा रहे हैं।

उसने देखा कि जब वे उस नली के आखिरी सिरे पर पहुँचे तो वह गरुड़ काले संगमरमर की चट्टान के पास उतर रहा था।

इवान तुरन्त ही उसकी पीठ से नीचे लुढ़क गया। वह नम घास पर लेट गया और सोचने लगा कि अब तो यह गरुड़ बस उसको खा ही जायेगा।

पर यह देख कर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ जब उसको खाने की बजाय वह उसके गले के मॉस का टुकड़ा जो उसने खा लिया था वापस लाया और इवान से कहा कि वह उसको अपने घाव के ऊपर रख ले। इससे उसका घाव भर जायेगा। इसके बाद वह उस खोखली नली से हो कर वहॉ से चला गया।

इवान ने ऐसा ही किया। उसका घाव कुछ पलों में ही भर गया।

सूरज की किरणों की गरमी से इवान के शरीर में कुछ जान सी आयी और उसने अपने अन्दर ताकत महसूस की। जब वह वहॉ

लेटा हुआ था तो सूरज की एक किरण उसकी एक अँगूठी पर पड़ी तब उसे याद आया कि वह कहाँ था और अब कहाँ है।

उसने झुक कर माँ रूस की नम जमीन को चूमा और देखा कि उसकी खाल और उसके कपड़े सब कुछ सामान्य रंग के हो गये हैं। भगवान की प्रार्थना कह कर वह अपने घर को वापस चल दिया।

घर आ कर उसने देखा कि तीनों ज़ारेवना उसके माता पिता के घर में उसका इन्तजार कर रही थीं। क्योंकि वह ऊपर की दुनियाँ में आ गयी थीं इसलिये उनके ऊपर पड़ा जादू भी टूट गया था।

इवान के माता पिता को बता दिया गया था कि उसके बड़े भाइयों ने उसके साथ क्या किया था। उन्होंने उनको घर से बाहर निकाल दिया।

इवान ने उनसे प्रार्थना की कि वे उसके भाइयों को माफ कर दें और उनको फिर से घर में बुला लें। उसके माता पिता ने उसकी प्रार्थना पर उनको घर वापस बुला लिया।

इवान ने सोने के राज्य वाली ज़ारेवना से शादी कर ली और फिर उनके कई बच्चे हुए। दूसरी ज़ारेवनाओं ने भी शादियाँ कर लीं पर इवान के भाइयों के साथ नहीं। फिर सब खुशी खुशी रहे।

6 ज़ार सुलतान की कहानी[49]

यह बहुत पुरानी बात है कि रूस के एक प्रदेश में रात गये तीन बहिनें मोमबत्ती की रोशनी में चरखे पर बैठी बैठी सूत कात रही थीं।

उनमें से सबसे बड़ी बहिन ने अपनी शान बघारते हुए कहा — "अगर मैं ज़ार की पत्नी[50] होती तो मैं उसके लिये बहुत स्वादिष्ट खाना बेक करती। मैं उसके लिये कितना बढ़िया शाही स्वादिष्ट खाना बनाती।"

इस पर बीच वाली बहिन बोली — "अगर ज़ार मुझसे शादी कर लेता तो मैं उसके लिये बहुत ही बढ़िया सोने के तार वाला कपड़ा बुनती।"

इस पर तीसरी सबसे छोटी वाली बहिन बोली — "अगर ज़ार मुझसे शादी कर ले तो मैं ज़ार को एक बहुत सुन्दर और बहादुर बेटा दूँगी।

जैसे ही वह यह कह कर चुकी कि घर का दरवाजा खुला और यह लो उन लड़कियों को यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि ज़ार

[49] The Story of the Tzar Saltan – a folktale from Russia, Asia. By Alexander Pushkin. Taken from the Web Site : https://www.marxists.org/subject/art/literature/children/texts/pushkin/tsar.html

[50] Translated for the word "Tzaritsa" – means he wife of Tzar ot Tsar. Tzar is the title of the King of Russia till 1917.

तो खुद वहीं खड़ा था। उसने दरवाजे से ही उनकी सारी बातें सुन ली थीं।

उसको तो केवल उसकी किस्मत ही वहॉ ले गयी थी। और जो कुछ उसने आखीर में सुना उसको सुन कर तो उसके दिल की धड़कन ही बहुत तेज़ हो गयी।

अन्दर जा कर सुलतान ने उन लड़कियों को नमस्ते की और उन तीनों में से सबसे छोटी वाली बहिन को अपनी पत्नी के लिये चुन लिया कि वही उसकी पत्नी बनेगी और उसे अपने महल ले गया। उसने कहा कि अगले सितम्बर में वह उसको वैसा ही बेटा देगी जैसा कि उसने अभी कहा था।

और तुम दोनों सुन्दर लड़कियों तुम लोग भी अपना घर बिना किसी झिझक के मेरे और मेरी होने वाली पत्नी के साथ चलो। तुममें से एक मेरी शाही कपड़ा बुनने वाली बनेगी और दूसरी मेरा शाही खाना बनाने वाली।"

कह कर ज़ार अपनी होने वाली पत्नी को ले कर आगे आगे चल दिया और दोनों बड़ी बहिनें उनके पीछे पीछे चल दीं।

वहॉ जा कर ज़ार ने बिल्कुल भी समय बरबाद नहीं किया और उसी शाम को ही उसने सबसे छोटी वाली बहिन से शादी कर ली।

ज़ार सुलतान और उसकी पत्नी मेज पर एक दूसरे के पास बैठे। फिर आये हुए मेहमान उनको बरफ के समान सफेद हाथी दॉत के काउच तक ले कर उनको रात के लिये अकेला छोड़ गये।

यह सब देख कर कपड़ा बुनने वाली बहिन लम्बी लम्बी साँसें भरने लगी और खाना बनाने वाली बहिन रोने लगी। दोनों के दिल में अपनी छोटी बहिन की खुशकिस्मती के लिये जलन और नफरत भरी थी। वे उसकी खुशी को सहन नहीं कर पा रही थीं।

कुछ ही दिनों में छोटी बहिन को बच्चे की आशा हो गयी।

इन्हीं दिनों लड़ाई छिड़ गयी तो ज़ार सुलतान को लड़ाई के लिये जाना पड़ा। ज़ार सुलतान ने अपनी पत्नी को गले से लगाया और अपने पीछे उसको अपना और राज्य के वारिस का ठीक से खयाल रखने के लिये कहा।

घर में दुश्मनों से लड़ते हुए छोटी बहिन ने राज्य के वारिस को जन्म दिया। बच्चा बड़ा, सुन्दर और प्यारा था। माँ ने गरुड़ की तरह से उसने उस बच्चे की बहुत सावधानी से देखभाल की और यह खुशी की खबर एक तेज़ घुड़सवार के हाथों ज़ार सुलतान को भेजी।

पर शाही कपड़ा बुनने वाली, शाही खाना बनाने वाली और उनकी माँ जो बहुत चालाक और धोखा देने वाली थी तीनों ने मिल कर उस छोटी बहिन को बरबाद करने का सोचा।

सो उन्होंने उस घुड़सवार को रास्ते में ही पकड़ लिया और उसकी बजाय एक दूसरा घुड़सवार ज़ार सुलतान के पास भेज दिया। उन्होंने उस सन्देश को तो उससे चुरा लिया जो उसको रानी

ने लिख कर दिया था और एक दूसरा सन्देश उसकी जेब में लिख कर रख दिया।

उस दूसरे सन्देश में उन्होंने लिखा — "तुम्हारी पत्नी ने एक डरावने बच्चे को जन्म दिया है जो न तो लड़का ही है और न लड़की ही है। और न ही हमने ऐसा जीव पहले कभी कोई देखा है।"

यह सन्देश पढ़ कर तो ज़ार सुलतान गुस्से से भर गया। वह चिल्ला कर बोला — "इस घुड़सवार को फाँसी चढ़ा दो। किसी पास वाले पेड़ से टाँग कर इसको लटका दो।"

लेकिन फिर अनमनेपन से उसने उसको यह सोच कर वापस भेज दिया कि इतनी जल्दी नहीं करनी चाहिये। वह शहर में तब तक इन्तजार करे जब तक ज़ार सुलतान लड़ाई से वापस घर लौटता है।

जब शहर के दरवाजे तक आया तो शाही कपड़ा बुनने वाली, शाही खाना बनाने वाली और उनकी माँ जो बहुत चालाक और धोखा देने वाली थी तीनों ने उसको खूब शराब पिलायी।

और जब वह शराब पी कर खूब धुत हो गया तो उन्होंने उसका वह सन्देश चुरा लिया जो उन्होंने उसको लिख कर दिया था और वह सन्देश उसकी जेब में रख दिया जो ज़ार सुलतान की पत्नी ने उसको लिख कर दिया था।

वह घुड़सवार लॅगड़ाता लॅगड़ाता राजा के दरबार में इस हुकुम के साथ पहुॅचा "रानी और उसके बच्चे को सुबह होने से पहले पहले गुप्त रूप से डुबो दो।"

अपने राजा के वारिस के लिये और एक नौजवान मॉ और उसके बच्चे के लिये रोते हुए दुखी होते हुए ज़ार के नौकरों ने रानी को उसकी इस बदकिस्मती के बारे में बताया।

सो इस हुकुम का पालन किया गया। रानी और बच्चे को एक ताबूत में बन्द किया गया और उस ताबूत को कस कर बन्द करके समुद्र में फेंक दिया गया। इस तरह ज़ार का हुकुम बजा लाया गया।

रात में तारे चमक रहे थे गहरे नीले रंग के बादल लम्बी लम्बी सॉसें भर रहे थे। ऊपर नीले आसमान में तूफान के बादल घिरते आ रहे थे। वह ताबूत हवा से समुद्र की लहरों पर ऊपर नीचे झूल रहा था।

रानी उस समय एक विधवा की तरह से दुखी थी जबकि बच्चा बड़ा हो रहा था। इस तरह से उनको घंटों बीत गये। सुबह हो गयी रानी इन्तजार करती रही।

पर उसके बेटे ने लहरों से कहा — "ओ नीली लहरों, तुम जब भी चाहो जहॉ भी चाहो कहीं भी आने जाने के लिये आजाद हो। तुम तो पत्थरों को भी बड़ी आसानी से अपने साथ ले जाती हो। तुम

तो पहाड़ों पर भी बाढ़ ला देती हो। तुम तो जहाज़ों को भी आसमान तक उठा देती हो।

मेरी प्रार्थना सुनो ओ लहरों, हमें बचा लो। हमको सूखी जमीन पर ले चलो।"

और लहरों ने उस ताबूत को और उसमें बन्द दो कैदियों को सुरक्षित रूप से समुद्र के रेतीले किनारे पर उतार दिया। मॉ और बेटे ने यह महसूस किया कि अब उनको लहरों के थपेड़े नहीं लग रहे हैं और वे सख्त जमीन पर हैं पर इस ताबूत में से उन्हें निकालेगा कौन?

यकीनन भगवान ही उनकी सहायता करेगा। वह उनको इस तरह नहीं छोड़ेगा। वे बड़बड़ाये "अब हम अपनी इस जेल इस ताबूत को कैसे तोड़ें।"

बेटा अपने पंजों पर खड़ा हुआ और अपने आपको ऊपर तक खींचता हुआ बोला — "मुझे मिल गया।" और उसने अपना सिर उस ताबूत के ढक्कन में मारा तो वह ढक्कन खुल गया और वे दोनों उस ताबूत से बाहर निकल आये। अब मॉ और बेटा आजाद थे।

उन्होंने देखा कि वे लोग एक टापू पर खड़े थे। वहीं उनको एक छोटी सी पहाड़ी दिखायी दे गयी। उसकी चोटी पर एक ओक का पेड़[51] खड़ा था और उनके चारों तरफ समुद्र बह रहा था।

[51] Oak Tree is a large shady kind of tree

बेटा बोला — "शायद हमको यहॉ कुछ खाना पीना मिल जायेगा।"

सो उसने ओक के पेड़ की एक शाख तोड़ी और उसको मोड़ कर अपने गले में पड़ी रेशमी रस्सी की सहायता से उसकी एक कमान बना ली। फिर पास में लगे सरकंडे का एक तीर बनाया और उस टापू पर शिकार की खोज में निकल पड़ा।

चलते चलते वह जैसे ही समुद्र के किनारे आया कि उसने एक चीख की आवाज सुनी। उसको लगा कि कोई परेशान था। उसने चारों तरफ देखा तो उसको एक हंस परेशान सा दिखायी दिया। उसके ऊपर एक काइट चिड़िया अपने पंख फैलाये उड़ रही थी और उसकी चोंच में खून लगा हुआ था।

जबकि हंसिनी बेचारी वहीं पानी में अपने पंख फड़फड़ा रही थी। उसके पंखों की फड़फड़ाहट से पानी इधर उधर उछल रहा था। बेटे ने उस काइट चिड़िया पर अपना तीर चला दिया और वह तीर उसके गले में पूरा घुस गया।

उसके गले से खून बह निकला और वह चिड़िया इस तरह से चीखती हुई समुद्र में गिर गयी जैसे कोई आत्मा नरक में जाती हुई चीखती है।

बेटे ने अपनी कमान नीचे की और हंसिनी की चोंच और पंखों की तरफ देखा तो उसने देखा कि वह हंसिनी बेचारी भी अपने दुश्मन से लड़ते लड़ते बहुत थक चुकी थी।

वह जितनी सादा रूसी भाषा में बोल सकती थी उतनी सादा रूसी भाषा में बोली— "ओ ज़ारेविच[52], मुझको आजाद करने वाले निडर बहादुर, तुम इसलिये दुखी न हो कि मेरी वजह से तुम्हारा तीर समुद्र में चला गया है।

तुम्हारे लिये इसकी यह कम से कम सजा है कि तुमको तीन दिन तक उपवास रखना पड़ेगा। मैं तुम्हारे इस ऐहसान का बदला जरूर चुकाऊँगी। एक दिन मैं तुम्हारी सहायता जरूर करूँगी।

और हॉ, यह हंसिनी नहीं है जिसको तुमने आजाद किया है यह तो एक बहुत सुन्दर लड़की है।

और वह जिसे तुमने मारा है, ओ भले नाइट[53], वह काइट चिड़िया नहीं थी वह तो एक जादूगर[54] था। मैं तुम्हारा यह ऐहसान ज़िन्दगी भर नहीं भूलूँगी और तुम्हारी मुसीबत के समय हमेशा तुम्हारी सहायता करूँगी। जाओ अब तुम आराम करो सब कुछ अच्छा ही होगा।"

इतना कह कर वह हंसिनी आसमान में उड़ गयी।

---

[52] Tzarevich means "the son of Tzar"

[53] Knight – a knight is a person granted an honorary title of *knighthood* by a monarch or other political leader for service to the Monarch or country, especially in a military capacity. See his picture above.

[54] Translated for the word "Wizard"

उसके जाते ही उन किस्मत के मारे मॉ और बेटा दोनों की ऑखों में नींद आने लगी जैसे कोई उनको जबरदस्ती सुला रहा हो और वे दोनों भगवान से अपनी ज़िन्दगी के लिये प्रार्थना करते हुए तुरन्त ही सो गये।

सुबह जब सूरज निकला तो ज़ारेविच को यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वहॉ उस टापू पर तो शहर फैला पड़ा था। उस शहर के चारों तरफ बरफ जैसी सफेद एक ऊॅची और चौड़ी मजबूत दीवार खिंची हुई थी। उस शहर में सुनहरे गुम्बद वाले चर्च खड़े हुए थे और बड़े बड़े घर बने हुए थे।

उन सबको देख कर वह ज़ोर से बोला — "मॉ देखो तो।"

बेटे की आवाज सुन कर मॉ भी उठी और उसने भी जब वह शहर देखा तो उसके मुॅह से भी निकला "ओह। यह सब क्या है।"

बेटा बोला — "मॉ अभी तो चीज़ें शुरू हुई हैं। मेरी सफेद हंसिनी ने अभी तो अपना तमाशा दिखाना शुरू किया है।"

यह सब देख कर वे दोनों शहर की तरफ चले। शहर के दरवाजे में घुसे। उसी समय चर्च के घंटे भी इतने ज़ोर से बजे जैसे कोई बिजली कड़कती है कि उनसे कोई मुर्दा भी जाग जाये। फिर वहॉ चर्च के गवैयों ने लौर्ड[55] के गीत गाना शुरू किया।

[55] Lord word is used here for Jesus Christ

कुलीन लोग[56] सोने के काम की गयी गाड़ियों में आ रहे थे। सारे लोग उन मॉ बेटा को देख कर बहुत खुश हुए।

अपनी मॉ का आशीर्वाद ले कर वह उनकी तरफ शान से बढ़ा और उसी दिन से उसने अपने नये राज्य में राज करना शुरू कर दिया। वह शाही सिंहासन पर बैठा और राजकुमार गिडौन[57] के नाम से राज करने लगा।

समुद्र पर हवाऐं चलने लगीं तो उनसे उसके ऊपर पाल वाली नावें चलने लगी। नाविक और सौदागर नावों के डैक पर इधर उधर घूमने लगे। सुन्दर सारस अपनी अपनी गरदनें उठा कर ज़ोर ज़ोर से बोलने लगे। सो उस टापू पर अब रौनक रहने लगी।

उस नये बने शानदार सुनहरे शहर में एक किला था जिसमें बहुत सारी तोपें लगी हुई थीं जो आवाज करती हुई सौदागरों से यह कह रही थीं कि तुम लोग अपनी अपनी नावें यहॉ किनारे पर ले आओ। जब उन सौदागरों ने अपनी अपनी नावें किनारे पर लगा लीं तो राजकुमार गिडौन ने उनकी मेहमानदारी की।

उसने पहले तो उनको खूब अच्छी तरह से खिलाया पिलाया फिर उनसे पूछा — "आप लोगों के पास बेचने के लिये क्या क्या है? आप लोग कब चले थे और अब किधर जा रहे हैं?"

[56] Translated for the word "Noble"

[57] Prince Guidon

सौदागर बोले — "हमने सात समुद्रों की यात्रा की है। हमारे पास ओ राजकुमार बहुत कीमती कीमती फ़र हैं बेचने के लिये। हमारे पास सफेद लोमड़े ओर सैबिल[58] के फ़र हैं। पर अब हमको बहुत देर हो गयी है हमें जाना है। हमारा रास्ता पूर्व की तरफ बूयान टापू[59] से हो कर पूर्व में ज़ार सुलतान के राज्य तक है।"

यह सुन कर राजकुमार गिडौन बोला — "ओ भले लोगों, अच्छी हवाऐं आप लोगों को आपके घर जल्दी पहुॅचाऐं। जब आप ज़ार सुलतान से मिलें तो उनको मेरी तरफ से बहुत नीचे झुक कर सलाम कहियेगा।"

यहॉ सौदागरों ने राजकुमार को नीचे झुक कर सलाम किया और अपने रास्ते चल दिये और उधर राजकुमार दुखी मन से उनको जाते हुए देखता रहा जब तक वे ऑखों से ओझल नहीं हो गये।

उसी समय अचानक वह बरफ जैसी सफेद हंसिनी राजकुमार के सामने प्रगट हुई और बोली — "राजकुमार, तुम इतने दुखी क्यों होते हो। मुझे बताओ तो। तुम इतने उदास क्यों हो जैसे कि बादलों वाला दिन उदास होता है।"

---

[58] The sable is a small carnivorous mammal that inhabits forest environments, primarily in Russia from the Ural Mountains.

[59] Buyan Island – in Slavic mythology, Buyan Island is described as a mysterious island in the ocean with the ability to appear and disappear using tides. Three brothers – Northern, Western, and Eastern Winds live there. It figures prominently in many famous myths. Koshchei or Koshchev the Deathless keeps his soul hidden there, secreted inside a needle placed inside an egg in the mystical oak-tree.

राजकुमार बोला — "मेरा दिल दुखी और उदास है। मेरी बस एक ही इच्छा है और वह है अपने पिता से मिलने की।"

हंसिनी बोली — "क्या तुम उड़ना चाहोगे? वह जो समुद्र में जहाज़ जा रहा है उसके भी उस पार। तो एक मच्छर बन जाओ।"

राजकुमार इसके लिये इससे पहले हॉ या ना कहता कि यह कह कर हंसिनी ने अपने दोनों पंख समुद्र के नीले पानी में फड़फड़ाये जिससे राजकुमार सिर से ले कर पैर तक पानी में भीग गया।

पानी में भीग कर तुरन्त ही वह एक मच्छर बन गया और उसने ज़ ज़ करते हुए तेज़ी से इधर उधर उड़ना शुरू कर दिया। वह उस जहाज़ पर जा कर सबकी नजर बचा कर एक छेद में छिप कर बैठ गया।

हवा समुद्र के ऊपर से उड़ती हुई गाती हुई बह रही थी। वे बूयान टापू को पार करते हुए ज़ार के राज्य की तरफ चले जा रहे थे। वह जिस जमीन की इच्छा कर रहा था और जो उसको इतनी प्रिय थी वह उसको दूर और साफ दिखायी दे रही थी।

कुछ देर में वह जमीन भी आ गयी। नाविकों ने वहा जा कर अपने जहाज़ का लंगर डाला। वहॉ के लोगों ने मेहमानों का स्वागत किया और उनको महल की तरफ ले गये।

वहॉ ज़ार सुलतान अपने शाही कपड़े पहने शाही तरीके से राजगद्दी पर बैठा था। उसके सिर पर जवाहरातों से जड़ा ताज रखा

था। शाही खाना बनाने वाली और शाही कपड़ा बुनने वाली और उनकी चालाक और धोखेबाज मॉ उसके दॉये बॉये बैठी थीं।

ज़ार ने उनकी तरफ शाही शान से देखते हुए सब सौदागरों को उनकी जगहों पर बिठाया।

फिर उसने उनसे कहा — "ओ सौदागरों तुम लोग बहुत जगहों से घूम कर आ रहे हो। जहॉ जहॉ से तुम लोग आ रहे हो वहॉ सब ठीक तो है न? तुम लोगों ने वहॉ क्या क्या नयी चीज़ें देखीं?"

सौदागर बोले — "हमने सातों समुद्रों की यात्रा की। दुनियॉ में सब जगह शान्ति है। पर हमने वहॉ एक बहुत ही आश्चर्यजनक दृश्य देखा।

समुद्र में एक टापू था। उसके किनारे बहुत ढालू थे। कभी वह बहुत ही उदास, बिना लोगों का और बिना पेड़ों का हुआ करता था। वहॉ बस केवल एक ओक का पेड़ हुआ करता था।

पर अबकी बार जब हमने उसको देखा तो वहॉ तो एक बहुत बड़ा और आलीशान शहर बस गया। वहॉ तो बहुत बड़े बड़े शाही घर बन गये, सुनहरी गुम्बदों वाले चर्च बन गये, सुन्दर बागीचे बन गये। यह सब तो वहॉ बहुत ही सुन्दर और आश्चर्यजनक हो गया।

वहॉ राजकुमार गिडौन राज करते हैं और उन्होंने आपको अपनी नमस्ते भेजी है।

ज़ार भी आश्चर्य से बोला — "अगर भगवान ने मेरी ज़िन्दगी थोड़ी सी और बढ़ायी तो मैं उस टापू को देखने जरूर जाऊँगा और कुछ समय के लिये इस गिडौन का मेहमान बन कर रहूँगा।"

पर वह शाही खाना बनाने वाली और शाही कपड़ा बुनने वाली और उनकी चालाक और धोखेबाज माँ यह नहीं चाहती थीं कि ज़ार इतनी दूर वहाँ जा कर उस टापू को देखे।

सो खाना बनाने वाली दूसरों की तरफ आँख मारती हुई बोली — "वाह क्या ही आश्चर्य की बात है कि समुद्र के किनारे एक शहर है। क्या तुमने ऐसा कहीं सुना है? पर यहाँ एक ऐसा आश्चर्य है जिसको किसी को बताया जा सकता है कि एक गिलहरी एक फ़र के पेड़ में रहती है। वह सारा दिन गिरी तोड़ती रहती है और गाती रहती है।

उसकी वे गिरियाँ बहुत ही आश्चर्यजनक हैं। हर गिरी का छिलका असली सोने का है और हर गिरी पन्ने की है। यकीनन यह एक आश्चर्य है।"

ज़ार सुलतान को यह वाकई आश्चर्यजनक लगा पर हमारे मच्छर को यह सुन कर गुस्सा आ गया।

उसने अपनी मच्छर वाली ताकत से अपनी आंटी की दाँयी आँख पर काट लिया। दर्द से वह पीली पड़ गयी और चीख पड़ी। पर वह उस आँख से फिर कभी देख नहीं सकी।

उसकी बहिन ने, नौकरानियों ने और माँ ने खुद ने एक दूसरे के ऊपर गिरते पड़ते उस मच्छर को भगाने की कोशिश की — "ठहर जा ओ नीच मच्छर।" पर वह वहाँ से बहुत तेज़ी से भाग कर अपने घर चला गया।

दुखी हो कर गिडौन ने एक बार फिर समुद्र के किनारे से समुद्र की तरफ देखा तो अचानक वही बरफ से सफेद पंखों वाली हंसिनी वहाँ प्रगट हो गयी।

"नमस्ते मेरे सुन्दर राजकुमार। तुम इतने दुखी क्यों होते हो। मुझे बताओ तो। तुम इतने उदास क्यों हो जैसे कि बादलों वाला दिन उदास होता है।"

दुखी होते हुए राजकुमार बोला — "मेरा दिल दुखी और उदास है। मैं मानता हूँ कि एक ऐसा आश्चर्य है जिसको मेरे पास होना चाहिये। और यह आश्चर्य किसी को बताने के लायक भी है।

कि कहीं एक गिलहरी एक फ़र के पेड़ में रहती है। वह सारा दिन गिरी तोड़ती रहती है और गाती रहती है।

उसकी वे गिरियाँ बहुत ही आश्चर्यजनक हैं। उसकी हर गिरी का छिलका असली सोने का है और उसकी हर गिरी पन्ने की है। पर क्या यह बात मैं यकीन के साथ कह सकता हूँ कि ऐसा है?"

हंसिनी बोली — "तुम ठीक कहते हो राजकुमार। यह अफवाह झूठी नहीं है। हालाँकि यह तुम्हारे लिये एक आश्चर्य हो सकता है

पर मेरे लिये यह कोई नयी चीज़ नहीं है। तुम दुखी मत हो राजकुमार। मैं तुम्हारा यह छोटा सा काम जरूर करूँगी।"

यह सुन कर राजकुमार खुशी खुशी घर दौड़ गया। उसने जा कर देखा कि उसके महल का ऑगन तो बहुत बड़ा हो गया है। उसमें एक फ़र का पेड़ लगा है। उस फ़र के पेड़ पर एक गिलहरी बैठी बैठी गिरियॉ तोड़ रही है और गाती जा रही है।

उसकी हर गिरी का छिलका असली सोने का है और उसकी हर गिरी पन्ने की है जो उसके तोड़ने के बाद इधर उधर गिर रही है। वह आश्चर्यजनक गिलहरी गा रही थी — "वह अपने पैरों की सुन्दर उँगलियों को बड़ी आसानी से हिलाती हुई बागीचे में से हो कर जा रही है।"

वह गिलहरी अपनी पूँछ से सीपी और छोटे छोटे पत्थरों के ढेरों को बिखराती जा रही थी और राजकुमार उसका गाना सुन रहा था। आश्चर्यचकित सा राजकुमार गिडौन बहुत धीरे से फुसफुसाया — "तुमको बहुत बहुत धन्यवाद ओ सुन्दर हंसिनी। भगवान तुमको भी इतना ही आराम और सुख दे जितना तुमने मुझे दिया है।"

उसने उस गिलहरी के लिये क्रिस्टल शीशे और चॉदी का एक घर बनवाया। उसके लिये एक चौकीदार रखा और एक लिखने वाला रखा जो उसकी तोड़ी हुई गिरी के हर छिलके का हिसाब रखता था।

इस तरह राजकुमार का खजाना बढ़ने लगा और साथ में गिलहरी की शान भी।

समुद्र पर हवा चलती रहती। पाल वाली नावें तेज़ी से चलती रहतीं। वे उस टापू से भी आगे निकल जातीं जिस पर यह सुन्दर शहर बसा हुआ था। उस टापू पर लगी तोपें अपनी आवाजों से उन नावों को किनारे बुलाती रहतीं।

जब वे जमीन पर आ गयीं तो राजकुमार उनमें जाने वाले सौदागरों का मॉस और शराब से मेहमानदारी की और उनसे पूछा — "तुम लोगों के पास बेचने के लिये क्या क्या है? तुम लोग कहॉ जा रहे हो और कहॉ से आ रहे हो?"

उन्होंने कहा — "हम लोग डौन के स्टैप्स[60] के घोड़े बेचते हुए सात समुद्र की यात्रा करके आ रहे हैं ओ राजकुमार गिडौन। हम लोगों को पहले ही बहुत देर हो गयी है। हमें बहुत दूर जाना है पूर्व में बूयान टापू के उस पार ज़ार सुलतान के पास।"

राजकुमार फिर कहा — "ओ भले लोगों, अच्छी हवाऐं आप लोगों को आपके घर जल्दी पहुँचाऐं। जब आप ज़ार सुलतान से मिलें तो उनको मेरी तरफ से बहुत नीचे तक झुक कर सलाम करियेगा।"

[60] Steppes of Don – means the grassland of Don

सौदागरों ने राजकुमार को नीचे तक झुक कर सलाम किया और अपनी आगे की यात्रा पर चले गये। राजकुमार दुखी मन से उनको जाते हुए देखता रहा जब तक वे ऑखों से ओझल नहीं हो गये।

उनके जाने के बाद वह फिर दौड़ा दौड़ा समुद्र के किनारे गया जहॉ उसको वह हंसिनी फिर मिल गयी। उसने उससे कहा — "मेरा दिल दुखी और उदास है। मेरी बस एक ही इच्छा है और वह है अपने पिता से मिलने की। मेरा दिल अपने पिता के लिये बहुत रोता है।"

हंसिनी ने उसको अबकी बार मक्खी बना दिया और वह समुद्र के पार उड़ता चला गया। वह फिर से एक छोटे से छेद में छिप कर चुपचाप बैठ गया।

हवा गाती हुई बह रही थी। समुद्र पर जहाज़ हिलता हुआ जा रहा था बूयान टापू को पीछे छोड़ता हुआ ज़ार के राज्य की तरफ। जिस जमीन को वह इतना प्यार करता था वह जमीन दूर बड़ी साफ दिखायी दे रही थी।

जहाज़ ने वहॉ जा कर लंगर डाल दिया और नाविक और मेहमान सब महल की तरफ चल पड़े। वहॉ सुलतान अपने शाही कपड़े पहने शाही तरीके से अपन जवाहरात जड़ा ताज पहने बैठा था।

जबकि शाही एक ऑख वाली खाना बनाने वाली और शाही कपड़ा बुनने वाली और उनकी चालाक ओर धोखेबाज मॉ ज़ार के

आस पास बैठी थीं और उसको मेंढक की निगाहों की तरह से देख रही थीं।

ज़ार सुलतान ने सौदागरों को उनकी जगह पर बिठाया और कहा — "तुम लोग बहुत दूर दूर तक यात्रा करके आ रहे हो। । जहॉ जहॉ से तुम लोग आ रहे हो वहॉ सब ठीक तो है न? तुम लोगों ने वहॉ क्या क्या नयी चीज़ें देखीं?"

सौदागर बोले — "हमने सातों समुद्रों की यात्रा की। दुनियॉ में सब जगह शान्ति है। पर हमने वहॉ एक बहुत ही आश्चर्यजनक दृश्य देखा।

बहुत दूर एक टापू पर एक बहुत ही शानदार शहर बसा हुआ है। वहॉ के सुनहरे गुम्बद वाले चर्च बहुत ऊॅचे हैं। वहॉ हरे हरे बागीचे हैं और वहॉ के घर भी बहुत शाही हैं।

उसके महल के पास ही एक फ़र का पेड़ है जिसकी छाया में क्रिस्टल शीशे और चॉदी का एक पिंजरा रखा है। उस पिंजरे में एक गिलहरी है जो बहुत ही आश्चर्यजनक है और बहुत कम पायी जाने वाली है।

सारे दिन वह बड़े उत्साह के साथ गिरी तोड़ती रहती है और गाती रहती है। वे गिरियॉ जो वह तोड़ती है वे भी बहुत ही आश्चर्यजनक हैं। हर गिरी का छिलका सोने का है और उसकी हर गिरी असली पन्ने की है।

सन्तरी दिन रात उसका पहरा देते हैं। जैसे किसी लौर्ड के दास होते हैं ऐसे ही उस गिलहरी के भी हैं। उसके पास एक लिखने वाला भी है जो उसके तोड़ी हुई गिरियों की गिनती लिखता रहता है।

उसके आस पास से जो सिपाही निकलते हैं वे उसको अपने ढोल और बाजे से सैल्यूट मारते चलते हैं। जो रत्न वह गिलहरी उन गिरियों को तोड़ कर निकालती है लड़कियॉ उन रत्नों को इकट्ठा करके ताले में रखती रहती हैं।

गिरी के हर छिलके से सिक्के बनाये जाते हैं और वे सिक्के फिर बाजार में खरीदने बेचने के काम आते हैं। वहॉ के लोग बहुत अमीर हैं। वे झोंपड़ियों में नहीं बल्कि बड़े बड़े मकानों में रहते हैं। राजा गिडौन वहॉ के राजा हैं और उन्होंने आपको अपना सलाम भेजा है।"

ज़ार सुलतान बोला — "अगर भगवान ने मुझे कुछ उम्र और दी तो मैं इस आश्चर्यजनक टापू को देखने जरूर जाऊॅगा और थोड़े दिन गिडौन का मेहमान बन कर उनके पास रह कर आऊॅगा।"

X X X X X X X

पर वह शाही खाना बनाने वाली और शाही कपड़ा बुनने वाली ओर उनकी चालाक धोखेबाज मॉ ज़ार को वह टापू नहीं देखने देना चाहती थीं जो इतनी दूर था।

सो शाही कपड़ा बुनने वाली बोली — "ऐसा झूठ कहाँ है ज़रा बताओ तो। हमने तो ऐसा सुना है कि ऐसी बहुत सारी गिलहरियाँ हैं जो सारा दिन गिरियाँ तोड़ती रहती हैं और पन्नों के ढेर लगाती ही रहती हैं और सोने को इधर उधर फेंकती रहती हैं। मुझे तो इसमें ऐसा कोई आश्चर्य नहीं लगता।

और फिर यह सच है तो भी, और झूठ है तो भी, मुझे इससे अच्छा एक और आश्चर्य मालूम है।

समुद्र बिजली से ऊपर उठता है और बहुत ज़ोर से गरजता है और उसका पानी उसके एक बंजर किनारे पर बिखर जाता है और वहाँ **33** आश्चर्यजनक नाइट्स छोड़ जाता है। वे सब चमकदार कपड़े पहने हैं और बड़ी शान से मार्च कर रहे हैं।

हर एक नाइट एक दूसरे से ज़्यादा बहादुर है लम्बा है सुन्दर है और नौजवान है। वे सब इतने एक से हैं कि विश्वास नहीं होता। चरनोमोर[61] उनका नेता है और वे सब उसके पीछे पीछे चल रहे हैं। तुम्हारे लिये यह एक आश्चर्य है पर यह सच है।"

मेहमान सब अक्लमन्द थे सो यह सुन कर वे सब चुप से रह गये। वे उससे कोई बहस नहीं कर सके पर ज़ार इसको देखने के लिये बहुत उत्सुक हो उठा और गिडौन बहुत गुस्सा।

[61] Chernomor – the leader of the troops. He is a sorcerer. He is mentioned in the folktale entitled "Ruslan and Ludmilla" – Folktale No 1.

वह तुरन्त ही उठा और अपनी आंटी की बॉयी ऑख पर जा कर वहॉ उसको काट लिया। वह तो पीली पड़ गयी और दर्द के मारे चीख पड़ी। अब तो उसकी उस ऑख से उसको दिखायी भी नहीं पड़ रहा था।

वह गुस्से से चीख पड़ी — "पकड़ लो इस कीड़े को और मार दो इसको।"

पर गिडौन तो जल्दी से और शान्ति से वहॉ से अपने घर उड़ गया। वह नीले समुद्र के किनारे किनारे देखता देखता चला जा रहा था कि एक बार फिर वह बरफ से सफेद पंखों वाली हंसिनी वहॉ प्रगट हुई।

"नमस्ते मेरे सुन्दर राजकुमार। तुम इतने दुखी क्यों होते हो। मुझे बताओ तो। तुम इतने उदास क्यों हो जैसे कि बादलों वाला दिन उदास होता है।"

दुखी होते हुए राजकुमार बोला — "मेरा दिल दुखी और उदास है। मैं मानता हूॅ कि यह एक ऐसा आश्चर्य है जिसको मेरे पास होना चाहिये। तुम मुझे यह बताओ कि यह आश्चर्य क्या है।

समुद्र बिजली से ऊपर उठता है और बहुत ज़ोर से गरजता है और उसका पानी उसके एक बंजर किनारे पर बिखर जाता है और वहॉ **33** आश्चर्यजनक नाइट्स छोड़ जाता है। वे सब चमकदार कपड़े पहने हैं और बड़ी शान से मार्च कर रहे हैं।

हर एक एक दूसरे से ज़्यादा बहादुर है लम्बा है सुन्दर है और नौजवान है। वे सब इतने एक से हैं कि विश्वास नहीं होता। चरनोमोर उनका नेता है और वे सब उसके पीछे पीछे चल रहे हैं।"

इसके जवाब में हंसिनी बड़बड़ायी — "क्या गिडौन बस यही सब तुमको परेशान कर रहा है? तुम आश्चर्य मत करो। यह तुम्हारे लिये आश्चर्य हो सकता है पर मेरे लिये नहीं।

क्योंकि समुद्र के ये नाइट्स और कोई नहीं मेरे भाई हैं। तुम दुखी मत हो आराम से घर जाओ और इन्तजार करो। तुमको अपने महल के दरवाजे पर मेरे भाई मिल जायेंगे।"

राजकुमार खुशी खुशी अपने घर वापस लौट गया। वह अपनी मीनार पर चढ़ा और समुद्र की तरफ देखने लगा।

लो समुद्र का पानी तो किनारे पर आ गया और उसके बंजर किनारे पर बिखर गया। वहॉ वह एक आश्चर्यजनक दृश्य छोड़ गया।

वहॉ **33** सुन्दर नौजवान बहादुर नाइट्स थे जो चमकीले कपड़े पहने थे और दो दो की लाइन में बड़ी शान से मार्च कर रहे थे। हर एक एक दूसरे से ज़्यादा बहादुर था लम्बा था सुन्दर था और नौजवान था। वे सब इतने एक से थे कि विश्वास नहीं होता था।

चरनोमोर उनका नेता था और वे सब उसके पीछे चल रहे थे। उनका नेता उनको ले कर सबसे पहले शहर के दरवाजे तक गया।

राजकुमार गिडौन भागता हुआ अपने मेहमानों का स्वागत करने गया। लोगों को विश्वास ही नहीं हुआ कि वे सब कौन थे और कहॉ से आये थे सो वे सब उन सबके चारों ओर इकट्ठा हो गये।

नाइट्स का नेता बोला — "राजकुमार, हंसिनी की प्रार्थना पर हम तुम्हारे सुन्दर शहर की रक्षा करने के लिये समुद्र से बाहर आये हैं। इसको बाद हम हमेशा ही तुम्हारे शहर की रक्षा करने के लिये नीले समुद्र से बाहर आते रहेंगे।

हम तुम्हारे शहर की चहारदीवारी की हमेशा ही चौकीदारी करते रहेंगे। अब हमें जाने दो क्योंकि हमको जमीन पर रहने की आदत नहीं है। पर हम वायदा करते हैं कि हम वापस आयेंगे।"

और वे सब वहॉ से गायब हो गये।

समुद्र पर हवाऐं चलने लगीं तो उनसे उसके ऊपर पाल वाली नावें चलने लगी। नाविक और सौदागर नावों के डैक पर इधर उधर घूमने लगे। सुन्दर सारस अपनी अपनी गरदनें उठा कर ज़ोर ज़ोर से बोलने लगे। सो उस टापू पर रौनक रहने लगी।

उस नये बने शानदार सुनहरे शहर में एक किला था जिसमें बहुत सारी तोपें लगी हुई थीं जो आवाज करती हुई सौदागरों से यह कह रही थीं कि तुम लोग अपनी अपनी नावें यहॉ किनारे पर ले आओ। जब उन सौदागरों ने अपनी अपनी नावें किनारे पर लगा लीं तो राजकुमार गिडौन ने उनकी मेहमानदारी की।

उसने पहले तो उनको खूब अच्छी तरह से खिलाया पिलाया फिर उनसे पूछा — "आप लोगों के पास बेचने के लिये क्या क्या है? आप लोग कब चले थे और अब किधर जा रहे हैं?"

सौदागर बोले — "हमने सात समुद्रों की यात्रा की है। हमने ओ राजकुमार डैमैस्क[62] के लोहे की तलवारें बेची हैं। चॉदी ओर सोना भी बेचा है। हम लोगों को पहले ही बहुत देर हो गयी है अब हमको चलना चाहिये। हमें बहुत दूर जाना है पूर्व में बूयान टापू के भी उस पार ज़ार सुलतान के पास।"

राजकुमार फिर कहा — "ओ भले लोगों, अच्छी हवाऐं आप लोगों को आपके घर जल्दी पहुॅचाऐं। जब आप ज़ार सुलतान से मिलें तो उनको मेरी तरफ से बहुत नीचे तक झुक कर सलाम कर दीजियेगा।"

सौदागरों ने राजकुमार को नीचे तक झुक कर सलाम किया और अपनी आगे की यात्रा पर चले गये। राजकुमार दुखी मन से उनको जाते हुए देखता रहा जब तक वे ऑखों से ओझल नहीं हो गये।

उनके जाने के बाद वह फिर दौड़ा दौड़ा समुद्र के किनारे गया जहॉ उसको वह हंसिनी फिर मिल गयी। उसने उससे कहा — "मेरा दिल दुखी और उदास है। मेरी बस एक ही इच्छा है और वह है अपने पिता से मिलने की। मेरा दिल अपने पिता के लिये बहुत रोता है।"

[62] Damask

एक बार हंसिनी ने फिर राजकुमार को ऊपर से नीचे तक भिगो दिया और अबकी बार वह एक भौंरा बन गया। भौंरा बन कर वह समुद्र के पार उड़ता चला गया और वह फिर से उस जहाज़ के एक छोटे से छेद में छिप कर चुपचाप बैठ गया।

हवा गाती हुई बह रही थी। समुद्र पर जहाज़ हिलता हुआ चला जा रहा था बूयान टापू को पीछे छोड़ता हुआ ज़ार के राज्य की तरफ। जिस जमीन को वह इतना प्यार करता था वह जमीन दूर बड़ी साफ दिखायी दे रही थी।

जहाज़ ने वहॉ जा कर लंगर डाल दिया और नाविक और मेहमान सब महल की तरफ चल दिये। वहॉ ज़ार सुलतान अपने शाही कपड़े पहने शाही तरीके से अपना जवाहरात जड़ा ताज पहने बैठा था।

जबकि शाही एक ऑख वाली खाना बनाने वाली और शाही कपड़ा बुनने वाली और उनकी चालाक मॉ ज़ार के आस पास बैठी थीं। हालॉकि वे तीन थी फिर भी उनको केवल चार ही ऑखें थीं। और उसको एक लालची की नजरों से देख रही थीं।

ज़ार सुलतान ने सौदागरों को उनकी जगह पर बिठाया और कहा — "तुम लोग बहुत दूर दूर तक यात्रा करके आ रहे हैं। । जहॉ जहॉ से तुम लोग आ रहे हो वहॉ सब ठीक तो है न? तुम लोगों ने वहॉ क्या क्या नयी चीज़ें देखीं?"

सौदागर बोले — "हमने सातों समुद्रों की यात्रा की। दुनियॉ में सब जगह शान्ति है। पर हमने वहॉ एक बहुत ही आश्चर्यजनक दृश्य देखा।

यहॉ से बहुत दूर एक टापू है जिस पर एक बहुत ही शानदार शहर बसा हुआ है। वहॉ हर सुबह एक नया ही आश्चर्य होता है।

समुद्र बिजली की कड़क के साथ ऊपर उठता है और बहुत ज़ोर से गरजता है और उसका पानी उसके एक बंजर किनारे पर बिखर जाता है और वहॉ **33** आश्चर्यजनक नाइट्स छोड़ जाता है। वे सब चमकदार कपड़े पहने हैं और बड़ी शान से मार्च कर रहे हैं।

हर एक एक दूसरे से ज़्यादा बहादुर है लम्बा है सुन्दर है और नौजवान है। वे सब इतने एक से हैं कि विश्वास नहीं होता। चरनोमोर उनका नेता है और वे सब उसके पीछे चल रहे हैं।

वह उनको दो दो करके गिनता है और वे उस सुन्दर टापू की दिन रात चौकीदारी करते हैं। आपको उनको देख कर ऐसा भी नहीं लगता है कि वे नाइट्स असली हैं। पर फिर भी वे सब सावधान हैं और निडर हैं। राजकुमार गिडौन वहॉ राज करते हैं। और उन्होंने आपको नमस्ते भेजी है।"

ज़ार सुलतान बोला — "अगर भगवान ने मुझे कुछ उम्र और दी तो मैं इस आश्चर्यजनक टापू को देखने जरूर जाऊॅगा और थोड़े दिन गिडौन का मेहमान बन कर उनके पास रह कर आऊॅगा।"

इस बार वह शाही खाना बनाने वाली और शाही कपड़ा बुनने वाली लड़कियॉ तो चुप थीं पर उनकी चालाक मॉ चालाकी भरी हॅसी हॅसते हुए बोली — "आप लोग इसे आश्चर्य समझते होंगे पर हम नहीं। बहुत सारे मत्स्य पुरुष[63] सन्तरी की तरह किनारों पर घूमते हैं। इसमें इतने आश्चर्य की क्या बात है।

यह सच है या झूठ पर मैं इसमें कोई अजीब बात नहीं देखती। इससे भी ज़्यादा बड़े बड़े आश्चर्य दुनियॉ में मौजूद हैं। और यह बात बिल्कुल सच है।

कहते हैं कि एक नौजवान राजकुमारी है जो सबका दिल चुरा लेती है। वह दोपहर के सूरज से भी ज़्यादा चमकदार है। वह आधी रात के चॉद से भी ज़्यादा चमकीली है। उसकी चोटी में दोयज का चॉद लगा हुआ है।

उसकी भौंह पर एक सितारा जड़ा है। वह खुद भी बहुत सुन्दर है। वह बहुत शानदार है। जब वह बोलती है तो ऐसा लगता है जैसे संगीत की नदी बह रही हो। यह आश्चर्य है पर सच है।"

वहॉ बैठे लोगों को इसी में अपनी अक्लमन्दी लगी कि वे उससे बहस न करें पर ज़ार सुलतान यह सुन कर बहुत ही उत्सुक हो गया और हमारा ज़ारेविच तो बहुत ही गुस्सा हो गया।

उसने सोच लिया था कि वह नानी की ऑख को उसकी उम्र की वजह से नहीं छुएगा सो उसने एक भौंरे की तरह से उसका चक्कर

[63] Translated for the word "Mermen". It is masculine form of mermaid.

काटा और उसकी नाक पर बहुत ज़ोर से काट लिया। इससे उसकी नाक पर लाल और सफेद निशान पड़ गये।

वह चिल्लायी — "अरे इस खूनी को पकड़ो। इसको जाने मत देना। पकड़ लो इसको। मार दो इसको।"

पर गिडौन तो जल्दी से और शान्ति से वहॉ से अपने घर उड़ गया। वह नीले समुद्र के किनारे किनारे देखता देखता चला जा रहा था कि एक बार फिर वह बरफ से सफेद पंखों वाली हंसिनी वहॉ प्रगट हुई।

"नमस्ते मेरे सुन्दर राजकुमार। तुम इतने दुखी क्यों होते हो। मुझे बताओ तो। तुम इतने उदास क्यों हो जैसे कि बादलों वाला दिन उदास होता है।"

दुखी होते हुए राजकुमार बोला — "सब नौजवानों की एक दुलहिन होती है। केवल मैं ही बिना दुलहिन का हूँ।"

"बताओ तुम किससे शादी करना चाहते हो? मुझे बताओ शायद मैं तुम्हारी कुछ सहायता कर सकूँ।"

राजकुमार गिडौन बोला — "उनका कहना है कि एक नौजवान राजकुमारी है जो सबका दिल चुरा लेती है। वह दोपहर के सूरज से भी ज़्यादा चमकदार है। वह आधी रात के चॉद से भी ज़्यादा चमकीली है। उसकी चोटी में दोयज का चॉद लगा हुआ है।

उसकी भौंह पर एक सितारा जड़ा है। वह खुद भी बहुत सुन्दर है। वह बहुत शानदार है। जब वह बोलती है तो ऐसा लगता है जैसे संगीत की नदी बह रही हो। क्या यह सच है या झूठ?"

गिडौन बड़ी बेचैनी से उसके जवाब का इन्तजार करता रहा। कुछ देर तक तो वह बरफ जैसे सफेद पंखों वाली हंसिनी चुपचाप कुछ सोचती रही।

फिर बोली — "गिडौन मैं ऐसी एक लड़की तुम्हारे लिये ढूँढ सकती हूँ। पर ध्यान रहे पत्नी कोई दस्ताना नहीं है कि वह तुम्हारे लिली जैसे कोमल हाथों से बन जाये। अब तुम मेरी सलाह सुनो।

तुम इस मामले पर दोबारा विचार करो ताकि कल जब तुम उससे शादी कर लो तो तुम्हें उससे शादी करके पछताना न पड़े।

गिडौन ने कहा — "मैंने सोच लिया है। मैंने बहुत दिनों तक इन्तजार किया पर अब मैं शादी करके ही रहूँगा। इतनी सुन्दर राजकुमारी के लिये तो मैं कोई भी खतरा मोल लेने के लिये तैयार हूँ।

मैं उसके लिये मर भी सकता हूँ। मैं उसके लिये नंगे पैर उत्तरी ध्रुव तक भी जा सकता हूँ।"

उसकी यह लगन देख कर वह हंसिनी कुछ सोचने के लिये रुकी फिर बोली — "राजकुमार, इतनी दूर जाने की क्या जरूरत है। तुम्हारी होने वाली पत्नी यहाँ है। प्रिय, मैं ही वह राजकुमारी हूँ।"

कह कर उसने अपने पंख फैलाये और समुद्र के ऊपर से उड़ कर किनारे पर आ गयी। पेड़ों के बीच जा कर उसने अपने पंखों को मोड़ लिया और फिर एक झटका दे कर वह एक सुन्दर राजकुमारी बन गयी।

उसके बालों में दोयज का चॉद लगा हुआ था। उसकी भौंह पर एक चमकीला सितारा लगा हुआ था। वह बहुत सुन्दर थी और शानदार थी। जब वह बोलती थी तो ऐसा लगता था जैसे संगीत एक नदी के पानी तरह से बह रहा हो।

गिडौन ने उसको तुरन्त ही अपने गले से लगा लिया और उसका हाथ पकड़ कर उसको अपनी मॉ के पास ले गया। उसके पैरों पर झुक कर वह बोला — "मॉ अगर तुम खुश हो तो देखो मैंने अपनी पत्नी चुन ली है। तुम इसको प्यार भी करोगी और इस पर गर्व भी करोगी।

शादी करने के लिये हमें बस अब तुम्हारी इजाज़त की और आशीर्वाद की जरूरत है। हमारी शादी को आशीर्वाद दो ताकि हम कल को प्यार से एक साथ रह सकें।"

यह देख कर मॉ की ऑखों में खुशी के ऑसू आ गये। उसने मुस्कुराते हुए उन दोनों झुके हुए बच्चों को आशीर्वाद दिया — "भगवान तुम दोनों को सुखी रखे।"

राजकुमार गिडौन ने फिर बिल्कुल भी देर नहीं की और उसने राजकुमारी से उसी दिन शादी कर ली। अब बस एक वारिस का इन्तजार था।

समुद्र पर हवाऐं चलने लगीं तो उनसे उसके ऊपर पाल वाली नावें चलने लगी। नाविक और सौदागर नावों के डैक पर इधर उधर मॅडराने लगे। सुन्दर सारस अपनी अपनी गरदनें उठा कर ज़ोर ज़ोर से बोलने लगे। सो उस टापू पर रौनक रहने लगी।

उस नये बने शानदार सुनहरे शहर में एक किला था जिसमें बहुत सारी तोपें लगी हुई थीं जो आवाज करती हुई सौदागरों से यह कह रही थीं कि तुम लोग अपनी अपनी नावें यहॉ किनारे पर ले आओ। जब उन सौदागरों ने अपनी अपनी नावें किनारे पर लगा लीं तो राजकुमार गिडौन ने उनकी मेहमानदारी की।

उसने पहले तो उनको खूब अच्छी तरह से खिलाया पिलाया फिर उनसे पूछा — "आप लोगों के पास बेचने के लिये क्या क्या है? आप लोग कब चले थे और अब किधर जा रहे हैं?"

सौदागर बोले — "हमने सात समुद्रों की यात्रा की है। हमने ओ राजकुमार इस बार वे चीज़ें बेची हैं जो हमें नहीं ले जानी चाहिये थीं।[64] उनसे हमें फायदा भी बहुत हुआ है।

[64] Translated for the word "Contraband" items

हम लोगों को पहले ही बहुत देर हो गयी है। हमें बहुत दूर जाना है पूर्व की तरफ। हमारा रास्ता तय है। बूयान टापू के भी उस पार ज़ार सुलतान के पास।"

गिडौन बोला — "जब तुम लोग ज़ार सुलतान के पास पहुँच जाओ तो उनको मेरी याद दिलाना और उनसे कहना कि "उन्होंने एक दिन मेरे राज्य में आने का वायदा किया था। हमको उनकी इस आने की देरी का अफसोस है पर हम अभी भी उनका इन्तजार कर रहे हैं। और उनको मेरा सलाम कहना।"

यह सुन कर वे सौदागर वहाँ से चले गये। इस बार गिडौन अपने प्रिय पत्नी के साथ ही रहा। उसने उसका साथ कभी नहीं छोड़ा।

हवा गाती हुई बह रही थी। समुद्र पर जहाज़ हिलता हुआ जा रहा था बूयान टापू को पीछे छोड़ता हुआ ज़ार सुलतान के राज्य की तरफ। जिस जमीन को वह इतना प्यार करता था वह जमीन दूर बड़ी साफ दिखायी दे रही थी।

इस बार उस नाव का हर सौदागर ज़ार का मेहमान था। ज़ार सुलतान वहाँ अपने शाही कपड़े पहने शाही तरीके से अपना जवाहरात जड़ा ताज पहने बैठा था।

जबकि शाही एक ऑख वाली खाना बनाने वाली और शाही कपड़ा बुनने वाली और उनकी चालाक मॉ ज़ार के आस पास बैठी

थीं। हालॉकि वे तीन थी फिर भी उनके केवल चार ही ऑखें थीं। और उसको एक लालची की नजरों से देख रही थीं।

ज़ार सुलतान ने सौदागरों को उनकी जगह पर बिठाया और कहा — "तुम लोग बहुत दूर दूर तक यात्रा करके आ रहे हो । जहॉ जहॉ से तुम लोग आ रहे हो वहॉ सब ठीक तो है न? तुम लोगों ने वहॉ क्या क्या नयी चीज़ें देखीं?"

सौदागर बोले — "हमने सातों समुद्रों की यात्रा की। दुनियॉ में सब जगह शान्ति है। पर हमने वहॉ एक बहुत ही आश्चर्यजनक दृश्य देखा।

यहॉ से बहुत दूर एक टापू है जिस पर एक बहुत ही शानदार शहर बसा हुआ है। उसके सुनहरे गुम्बद वाले चर्च बहुत ऊॅचे हैं। वहॉ हरे हरे बागीचे हैं और वहॉ के घर भी बहुत शाही हैं।

उसके महल के पास ही एक फ़र का पेड़ है जिसकी छाया में क्रिस्टल शीशे और चॉदी का एक पिंजरा रखा है। उस पिंजरे में एक गिलहरी है जो बहुत ही आश्चर्यजनक और बहुत कम पायी जाने वाली है।

सारे दिन वह बड़े उत्साह के साथ गिरी तोड़ती रहती है और गाती रहती है। वे गिरियॉ जो वह तोड़ती है वे भी बहुत ही आश्चर्यजनक हैं। हर गिरी का छिलका सोने का है और उसकी हर गिरी असली पन्ने की है।

सन्तरी दिन रात उसका पहरा देते हैं। जैसे किसी लौर्ड के दास होते हैं ऐसे ही उस गिलहरी के भी हैं। उसके पास एक लिखने वाला भी है जो उसके तोड़ी हुई गिरियों को लिखता रहता है।

उसके आस पास से जो सिपाही निकलते हैं वे उसको अपने ढोल और बाजे से उसको सैल्यूट मारते चलते हैं। जो रत्न वह गिलहरी उन गिरियों को तोड़ कर निकालती है लड़कियॉ उन रत्नों को इकट्ठा करके ताले में रखती रहती हैं।

गिरी के हर छिलके से सिक्के बनाये जाते हैं और वे सिक्के फिर बाजार में खरीदने बेचने के काम आते हैं। वहॉ के लोग बहुत अमीर हैं। वे झोंपड़ियों में नहीं बल्कि बड़े बड़े मकानों में रहते हैं। राजा गिडौन वहॉ के राजा हैं और उन्होंने आपको नमस्ते भेजी है।

वहीं हमने एक दूसरा आश्चर्य भी देखा कि हर सुबह समुद्र का पानी बिजली की कड़क के साथ ऊपर उठता है और उसके बंजर किनारों पर बिखर जाता है।

और बहुत ज़ोर की गरज के साथ उसके बंजर किनारे पर बिखर जाता है और वहॉ **33** आश्चर्यजनक नाइट्स छोड़ जाता है। वे सब चमकदार कपड़े पहने होते हैं और बड़ी शान से मार्च करते हैं।

हर एक नाइट एक दूसरे से ज़्यादा बहादुर है लम्बा है सुन्दर है और नौजवान है। वे सब इतने एक से हैं कि विश्वास नहीं होता। चरनोमोर उनका नेता है और वे सब उसके पीछे चल रहे हैं।

वह उनको दो दो करके गिनता है और वे उस सुन्दर टापू की दिन रात चौकीदारी करते हैं। उनको देख कर आपको ऐसा भी नहीं लगता है कि वे नाइट्स असली हों। पर फिर भी वे सब सावधान हैं और निडर हैं। राजकुमार गिडौन वहॉ राज करते हैं। उनकी सब तारीफ करते हैं और उनका गुणगान करते हैं।

उनकी एक पत्नी है जिसकी तरफ देखते देखते आप थकते नहीं। वह एक नौजवान राजकुमारी है जो सबका दिल चुरा लेती है।

वह दोपहर के सूरज से भी ज़्यादा चमकदार है। वह आधी रात के चॉद से भी ज़्यादा चमकीली है। उसकी चोटी में दोयज का चॉद लगा हुआ है। उसकी भौंह पर एक सितारा जड़ा है।

वह खुद भी बहुत सुन्दर है। वह बहुत शानदार है। जब वह बोलती है तो ऐसा लगता है जैसे संगीत की नदी बह रही हो।

राजकुमार गिडौन ने आपको अपना सलाम भेजा है और हमसे आपसे यह कहने के लिये कहा है कि वह आपका अभी भी इन्तजार कर रहे हैं कि आप एक दिन उनके शहर आयेंगे। उनको आपके इतने दिन तक न आने का बहुत अफसोस है।

अबकी बार ज़ार का धीरज छूट गया। उसने अपने जहाज़ी बेड़े को उस टापू पर चलने का हुकुम दिया।

पर इस बार भी पर वे शाही खाना बनाने वाली और शाही कपड़ा बुनने वाली और उनकी चालाक मॉ ज़ार को उस टापू पर नहीं जाने देना चाहती थीं जो इतनी दूर था।

सो उन्होंने बहुत कोशिश की कि वह ज़ार को उस टापू से दूर रख सकें पर इस बार उसने उनकी एक न सुनी।

ज़ार ने अपना पैर जमीन पर पटका, दरवाजा ज़ोर से बन्द किया और उनसे ज़ोर से कहा — "मैं यहॉ का ज़ार हूँ कोई बच्चा नहीं। हम आज ही जायेंगे। बस अब आगे और कुछ नहीं।"

X X X X X X X

राजकुमार गिडौन अपने घर से समुद्र की तरफ देख रहा था। समुद्र बिल्कुल शान्त पड़ा था। वहॉ एक भी लहर नहीं थी जैसे नींद में शान्ति से कोई लम्बी लम्बी सॉसें ले रहा हो।

तभी उसको समुद्र के नीले क्षितिज पर एक के बाद एक जहाज़ ऊपर आते हुए दिखायी दिये। आखिर ज़ार सुलतान का जहाज़ी बेड़ा समुद्र पर खेता हुआ चला आ ही गया।

यह देख कर गिडौन ज़ोर से चिल्लाता हुआ तुरन्त ही भागा भागा बाहर गया — "मॉ यहॉ बाहर आओ और राजकुमारी तुम भी बाहर आओ। देखो मुझे लगता है कि मेरे पिता जी आ रहे हैं।"

उसने अपनी दूरबीन से देखा कि वह तो वाकई शाही जहाज़ी बेड़ा ही था। उसके एक जहाज़ के डैक पर उसका पिता खड़ा था।

उसके साथ वह शाही खाना बनाने वाली और शाही कपड़ा बुनने वाली और उनकी चालाक धोखा देने वाली मॉ भी थीं। वे सब आश्चर्य से इधर उधर देख रही थीं।

उनके स्वागत में तोपें छोड़ी गयीं। चर्च के घंटे बजाये गये। ज़ार सुलतान का स्वागत करने के लिये गिडौन किनारे की तरफ भागा गया।

वहॉ से वह उन शाही खाना बनाने वाली, शाही कपड़ा बुनने वाली, उनकी चालाक धोखा देने वाली मॉ और अपने पिता को वह अपने शहर तक बिना एक शब्द बोले ले कर आया।

वहॉ अब उनको महल दिखायी देने लगा था। उस महल के चारों तरफ बहुत सारे सन्तरी चमकीले जिरहबख्तर[65] पहने खड़े थे।

ज़ार सुलतान ने देखा कि वहॉ **33** नाइट्स भी थे जो बहादुरी में बेजोड़ थे लम्बे थे सुन्दर थे और नौजवान थे। उसको यह विश्वास ही नहीं हुआ कि वे सब कितने एक से थे। चरनोमोर उनका नेता था।

वे आगे बढ़े तो महल के ऑगन में आ पहुँचे। ज़ार ने देखा कि वह ऑगन बहुत बड़ा है। उस ऑगन में एक बहुत ही बड़ा फ़र का पेड़ खड़ा है और उसके साये में एक गिलहरी बराबर गिरियॉ तोड़े जा रही है और गाती जा रही है।

[65] Translated for the word “Armor”.

उसकी वे गिरियॉ बहुत ही आश्चर्यजनक हैं। हर गिरी का छिलका असली सोने का है और हर गिरी पन्ने की है। उसकी गिरियों के वे सोने के छिलके और पन्ने की गिरियॉ उस बड़े से ऑगन के फर्श पर सब इधर उधर पड़े हैं।"

और आगे जाने पर सब मेहमानों को राजकुमारी दिखायी दी। उसके बालों में दोयज का चॉद लगा है और उसकी भौंह पर एक चमकीला सितारा जड़ा है। वह बहुत सुन्दर है। और ज़ार सुलतान की अपनी पत्नी भी उसके बराबर में खड़ी हुई है।

उसने उसको देखते ही पहचान लिया। उसका दिल बहुत ज़ोर ज़ोर से धड़कने लगा। उसने आश्चर्य से कहा "क्या मैं सोते में सपना देख रहा हूँ?"

उसकी ऑखों से ऑसू बहने लगे और उसने अपनी पत्नी को बड़े गर्व से गले लगा लिया। उसने अपने बेटे और उसकी पत्नी को गर्व से चूमा। फिर वे सब खाना खाने बैठे। वहॉ तो उनकी हॅसी रोके नहीं रुक रही थी वे सब बहुत खुश थे।

केवल वह शाही खाना बनाने वाली, शाही कपड़ा बुनने वाली और उनकी चालाक धोखा देने वाली मॉ ये तीनों ही खुश नहीं थीं। तीनों वहॉ से भाग निकलीं और सीढ़ियों के नीचे जा कर छिप गयीं।

पर लोगों ने उनको उनके बाल पकड़ कर वहॉ से खींच लिया। रोते हुए उन्होंने अपना जुर्म स्वीकार कर लिया और उनसे अपने जुर्म की माफी मॉगी।

ज़ार ने उनको माफ करते हुए उनको उनके घर भेज दिया। रात को सुलतान सो गया।

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

36 पुस्तकें www.Scribd.com/Sushma_gupta_1 पर उपलब्ध हैं।

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com
1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई–मीडियम पर सोसायटी औफ फौकलोर, लन्दन, यू के, के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।
Write to :- E-Mail : thefolkloresociety@gmail.com
1 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं — 10 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — 45 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com
1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — प्रभात प्रकाशन
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — प्रभात प्रकाशन
4 शीबा की रानी मकेडा और राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
5 राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
6 बंगाल की लोक कथाऐं — नेशनल बुक ट्रस्ट

नीचे लिखी पुस्तकें रचनाकार डाट आर्ग पर मुफ्त उपलब्ध हैं जो टैक्स्ट टू स्पीच टैकनोलोजी के द्वारा दृष्टिबाधित लोगों द्वारा भी पढ़ी जा सकती हैं।
1 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/08/1-27.html
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/08/2-1.html
3 रैवन की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1.html
4 रैवन की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/09/2-1.html
5 रैवन की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/09/3-1-1.html
6 इटली की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1_30.html

7 इटली की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/10/2-1.html
8 इटली की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/10/3-1.html
9 इटली की लोक कथाऐं–4
http://www.rachanakar.org/2017/10/4-1.html
10 इटली की लोक कथाऐं–5
http://www.rachanakar.org/2017/10/5-1-italy-lokkatha-5-seb-wali-ladki.html
11 इटली की लोक कथाऐं–6
http://www.rachanakar.org/2017/11/6-1-italy-ki-lokkatha-billiyan.html
12 इटली की लोक कथाऐं–7
http://www.rachanakar.org/2017/11/7-1-italy-ki-lokkatha-kaitherine.html
13 इटली की लोक कथाऐं–8
http://www.rachanakar.org/2017/12/8-1-italy-ki-lokkatha-patthar-se-roti.html
14 इटली की लोक कथाऐं–9
http://www.rachanakar.org/2017/12/9-1-italy-ki-lok-katha-do-bahine.html
15 इटली की लोक कथाऐं–10
http://www.rachanakar.org/2017/12/10-1-italy-ki-lok-katha-teen-santre.html
16 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_54.html
17 चालाक ईकटोमी
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_88.html
18 नौर्स देशों की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2018/10/1.html

नीचे लिखी पुस्तकें जुगरनौट डाट इन पर उपलब्ध हैं
https://www.juggernaut.in/authors/2a174f5d78c04264af63d44ed9735596
1 सोने की लीद करने वाला घोड़ा और अन्य अफ्रीकी लोक कथाऐं
2 असन्तुष्ट लड़की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
3 रैवन आग कैसे लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
4 रैवन ने शादी की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
5 कौआ दिन लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on Dec 27, 2018

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
मई **2018**